जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 32 संख्याः 109 प्रभात उदयपुर, गुरुवार 20 फरवरी, 2025 आर.जे. 7202 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

यह राजस्थान का पहला ग्रीन बजट है- मुख्यमंत्री भजनलाल

सस्टेनेबल ग्रीन प्रणाली, क्लाइमेट चेंज, बायोडायवर्सिटी, वॉटर हार्वेस्टिंग, ग्रीन एनर्जी, रीसाइक्लिंग के लिए कुल राज्य बजट में 11.34 प्रतिशत राशि का प्रावधान

जयपुर, 19 फरवरी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन और राज्य की जनता से संकल्प पत्र में किये गये वादों के अनुसार राज्य बजट 2025-26 प्रस्तुत किया गया है। राज्य सरकार ने एक वर्ष के कार्यकाल में संकल्प पत्र के 58 प्रतिशत से अधिक वादे पूरे कर दिये हैं।

- मुख्यमंत्री ने कहा कि गत वर्ष जुलाई में प्रस्तुत परिवर्तित बजट में 96 प्रतिशत से अधिक घोषणाओं में भूमि आवंटन हो चुका है तथा 85 प्रतिशत में प्रशासनिक व वित्तीय स्वीकृति जारी हो चुकी है।

बुधवार को विधानसभा में उपमुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री दिया कुमारी ने राज्य बजट वर्ष 2025-26 प्रस्तुत किया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मिठाई खिलाकर उन्हें बधाई दी।

मुख्यमंत्री ने बुधवार को विधान सभा में उपमुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री दिया कुमारी द्वारा राज्य बजट वर्ष 2025-26 प्रस्तुत किये जाने के बाद पत्रकार वार्ता में बताया कि गत जुलाई माह में प्रस्तुत परिवर्तित बजट की 96 प्रतिशत से अधिक घोषणाओं में हमने भूमि आवंटन कर दिया है तथा लगभग 85 प्रतिशत से ज्यादा घोषणाओं से संबंधित प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति दी जा चुकी है। शर्मा ने कहा कि संभवतया ऐसा पहली बार हुआ है कि सात माह के अल्प समय में ही बजट घोषणाओं को इतने वृहद स्तर पर धरातल पर उतारा गया है।

उन्होंने बजट को जनहित में समर्पित और विकासोन्मुख बताते हुए कहा कि इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, रोजगार और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में ठोस प्रावधान किए गये हैं, जो राज्य के सम्पूर्ण विकास को सुनिश्चित करेंगे। आगामी वर्ष में 20 लाख घरों तक पेयजल पहुंचाने का लक्ष्य लेकर राज्य सरकार कार्य

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

रेखा गुप्ता दिल्ली की मुख्यमंत्री घोषित

- रेणु मित्तल -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 19 फरवरी। अन्ततोगत्वा दिल्ली को मुख्यमंत्री मिल ही गया। पहली बार विधायक बनी रेखा भाजपा की सबसे युवा विधायक है जिन्हें मुख्यमंत्री बनाया गया है। वहीं मुख्यमंत्री पद की दौड़ में सबसे आगे माने जाने वाले प्रवेश वर्मा को उपमुख्यमंत्री बनाया गया है।

- मुख्यमंत्री पद की दौड़ में सबसे आगे चल रहे प्रवेश वर्मा को उपमुख्यमंत्री बनाने की घोषणा की गई है।

सूत्रों ने कहा कि आर.एस.एस. चीफ मोहन भागवत ने दिल्ली में संघ मुख्यालय में अमित शाह, जे.पी. नड्डा और राजनाथ सिंह को बुलाकर निर्देश दिए थे कि रेखा गुप्ता को मुख्यमंत्री बनाया जाए।

रेखा गुप्ता आर.एस.एस. की हैं। छात्र जीवन में वे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़ी हुई थीं। वे संघ की पसंद हैं। कल शपथ ग्रहण होगा।

इससे स्पष्ट है कि संघ प्रमुख यह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

गहलोत अब डोटासरा का सहारा ले रहे हैं, दिल्ली में अपनी जगह ढूंढने के लिए

पर, जब गहलोत सोनिया गांधी के खिलाफ बगावत के कारण संकट में आये थे, स्थिति को भांपते हुए डोटासरा ने गहलोत से बचना शुरू किया था

- रेणु मित्तल -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 19 फरवरी। एक रोचक मोड़ के अन्तर्गत, अशोक गहलोत एक बार फिर अपने अच्छे मित्र गोविन्द सिंह डोटासरा, जो राजस्थान के कांग्रेस अध्यक्ष हैं, के जरिये दिल्ली के मन की थाह ले रहे हैं।

अगर सचिन पायलट दिल्ली में मीडिया को लंच की दावत दे सकते हैं, तो क्या अशोक गहलोत पीछे रह सकते हैं? दिल्ली में सचिन पायलट के लंच (जो संयोगवश एक वार्षिक आयोजन है) से एक दिन पहले, डोटासरा ने दिल्ली मीडिया के लिए लंच का आयोजन किया। यह आयोजन पहली बार ही हुआ है।

समझा जाता है कि इसके मुख्य आयोजक डोटासरा के पुत्र अभिलाष थे, जिन्होंने प्रशान्त किशोर की आई पैक के साथ काम किया है तथा इस समय दिल्ली में उनकी पहचान एक लॉबीइस्ट (लामबन्दी करने वाले) के रूप में है। वे अपनी पूरी ऊर्जा दो कामों में लगा रहे हैं - सबसे पहले तो वे यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि उनके पिता राजस्थान पी सी सी अध्यक्ष बने रहें, तथा दूसरी बात यह कि वे राहुल एवं प्रियंका की टीम से सम्पर्क बनाये रखना चाहते हैं ताकि राहुल और प्रियंका तक पहुंच के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- पर दोनों के (डोटासरा व गहलोत) रिश्ते ज्यादा दिन टूटे नहीं रहे, तत्कालीन मु.मुख्यमंत्री गहलोत ने शिक्षा मंत्री डोटासरा को बचाया पेपर लीक काण्ड में।
- जैसा, कि विदित ही है, डोटासरा परिवार के तीन सदस्यों को पेपर में एक दम बराबर मार्क्स मिले थे। तथा, यह पेपर लीक काण्ड सोशल मीडिया में बहुत वायरल हुआ था।
- दिल्ली के राजनीतिक हल्कों में चल रही चर्चाओं के अनुसार, हाईकमान की गहलोत के प्रति नाराज़गी में कोई कमी नहीं आई है, तथा, कुछ समय बाद पायलट को प्रदेशाध्यक्ष बनाकर भेजा जायेगा, कांग्रेस संगठन को विधानसभा चुनाव तक पूरी तरह ''फाइटिंग फिट'' बनाने के लिए।
- इस सम्भावना ने डोटासरा व गहलोत को और करीब ला दिया है, तथा एक सुनियोजित रणनीति के तहत पायलट के, दिल्ली में मीडिया के लिए आयोजित वार्षिक भोज से एक दिन पहले डोटासरा-गहलोत ने भी डोटासरा की ओर से पहली बार प्रदेशाध्यक्ष की हैसियत से मीडिया के लिए एक लंच आयोजित करवाया दिल्ली में।

भाजपा व कांग्रेस में एक बार फिर भारी भिड़न्त

इस बार मुद्दा है, अमेरिका द्वारा भारत को ''वोटर टर्न आऊट'' बढ़ाने के प्रयासों के लिए 21 करोड़ डॉलर का अनुदान

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 फरवरी। भारत को दी जाने वाली 21 मिलियन अमेरिकी डॉलर की यूएस एड ग्रांट को रद्द करने के अमेरिकी सरकार के निर्णय ने कांग्रेस और भाजपा के बीच राजनीतिक विवाद पैदा कर दिया है, जिसमें पूर्व केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी की एंट्री भी हो गई है।

कांग्रेस के अनुसार, अब तो सच सामने आ ही गया है, क्योंकि श्रीमती ईरानी 'भारत में यूएस एड की सद्भावना एम्बेसडर' के रूप में कार्य कर चुकी हैं। कांग्रेस नेता प्रियंक खड़गे ने पूछा, ''क्या इसका मतलब यह नहीं है कि भाजपा के नेता जॉर्ज सोरोस के असली एजेंट थे?' सोरोस का उल्लेख दिलचस्प है: क्योंकि इस अरबपति पर आरोप है कि उसे दुनिया भर में सरकारों को अस्थिर करने के लिए यूएस एड ग्रांट्स मिलीं हैं।''

कांग्रेस ने विदेश मंत्री एस जयशंकर और केन्द्रीय मंत्री पीयूष गोयल की भी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- कांग्रेस का आरोप है ''यू.एस. एड'' अनुदान वाली संस्था की भारत में गुडविल एम्बेसेडर (सद्भावना राजदूत), स्मृति इरानी थीं।
- कांग्रेस का यह भी आरोप है, कि, विदेश मंत्री जयशंकर व वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने मोदी सरकार के शासन काल में, यू.एस. एड के काम की सराहना करते हुए कई बार यू.एस. एड कामकाज का समर्थन किया है।
- दूसरी ओर, भाजपा ने कहा 2012 में, यू.पी.ए. सरकार के शासन काल में मुख्य चुनाव आयुक्त एस.वाय. कुरैशी ने जॉर्ज सोरोस की ओपन सोसायटी फाउण्डेशन से अधिकृत अनुबन्धन किया, तथा, यह संस्था भारत विरोधी तत्वों को, जो कांग्रेस से सम्बद्ध हैं, की फण्डिंग करती थी। यह भी कहा भाजपा ने कि यह शोध व छानबीन का विषय है, कि क्या यू.एस. एड व जॉर्ज सोरोस राजीव गांधी फाउण्डेशन व राजीव गाँधी चैरिटेबल ट्रस्ट को पैसे देते थे।

'कोई भी मुझ से बहस नहीं कर सकता'

-डा. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 फरवरी। एक अरबपति एलन मस्क के साथ टीवी पर प्रसारित एक इंटरव्यु में अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प ने भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ हुई वार्ता का हवाला देते हुए कहा, ''कोई भी मुझ से बहस'' नहीं कर सकता।

ट्रम्प ने साफ कर दिया कि

- राष्ट्रपति ट्रम्प ने यह कहा, मैंने मोदी से साफ कह दिया, आप जो चार्ज करेंगे मैं भी वहीं चार्ज करूंगा। मोदी ने कहा, यह ठीक नहीं, पर मैंने कह दिया नहीं आप जो टैक्स लेंगे मैं भी वहीं लूंगा।

''रैसिप्रोकल टैरिफ'' (जितना टैरिफ कोई देश अमेरिकन सामान पर लगाएगा, अमेरिका भी उतना ही टैरिफ उस पर लगाएगा) से भारत को भी बख्शा नहीं जाएगा। फॉक्स न्यूज़ के सीन हैनरी के साथ बात करते हुए ट्रम्प ने ग्लोबल ट्रेड

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'भारत की इकॉनमी बढ़ रही है, उसे वित्तीय अनुदान की जरूरत नहीं'

ट्रम्प ने ''वोटर टर्न आऊट'' बढ़ाने के लिए भारत को दिये जा रहे 21 करोड़ डॉलर के अनुदान को बंद करने की घोषणा की

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 फरवरी। अमेरिकन राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प ने ''गर्वनमैंट एफिशिएंसी'' विभाग, जिसके मुखिया अरबपति एलन मस्क हैं, के भारत को 21 मिलियन डॉलर की मदद बंद करने के निर्णय का समर्थन किया। यह मदद भारत में मतदाताओं का मतदान के प्रति रूझान बढ़ाने के लिए दी जाती है। उन्होंने कहा एक भारत की बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था है और यहाँ टैक्स की रेट बहुत ज्यादा है उसे वित्तीय मदद की जरूरत नहीं है।

अपुष्ट रिपोर्ट के अनुसार, ट्रम्प ने भारत और प्रधानमंत्री मोदी के प्रति पूर्ण सम्मान दर्शाया, पर, ''वोटर टर्न आउट'' के लिए आर्थिक मदद देने के आइडिया की आलोचना की।

ट्रम्प ने कहा, हम भारत को 21 मिलियन डॉलर क्यों दे रहे है। विश्व में हम पर सर्वाधिक टैक्स लगाने वाला देश भारत है। टैक्स इतना ज्यादा है कि हमारा सामान वहाँ बिक ही नहीं पाता है। भारत और भारत के प्रधानमंत्री का मैं बहुत सम्मान करता हूँ, पर, हम वोटर टर्न आउट के लिए 21 मिलियन डॉलर क्यों दे रहे हैं?

ट्रम्प ने नए विभाग ''गर्वनमैंट एफिशिएंसी'' का दारोमदार गत माह ही एलन मस्क को सौंपा था। इस विभाग का काम सुशासन बढ़ाना और फालतू खर्च कम करना है। इस विभाग ने 15 फरवरी को एक्स पर ऐसे कई सहायता कार्यक्रम कैंसल करने की घोषणा की थी।

विभाग ने कहा, इन कार्यों पर अमेरिकन करदाता का पैसा खर्च हो रहा है और अब इन्हें बंद किया जाता है।

इस लिस्ट में 486 मिलियन डॉलर की सहायता शामिल है जो ''कंसोर्टियम फॉर इलैक्शन एण्ड पॉलिटिकल प्रोसैस स्ट्रेंथनिंग'' के लिए दी जाती है। इसके तहत वोटर टर्न आउट बढ़ाने के लिए भारत को 21 मिलियन डॉलर दिए जाते हैं और मॉल्डोवा को समावेशी और भागीदारी राजनैतिक प्रक्रिया के लिए 22 मिलियन डॉलर दिए जाते हैं। पोस्ट में अन्य फंडिंग का ब्यौरा नहीं है।

यह कदम प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका यात्रा के कुछ ही दिन बाद उठाया गया है। अमेरिका यात्रा में मोदी ने ट्रम्प से ही नहीं मस्क से भी मुलाकात की थी।

पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा आईटी सैल के प्रमुख अमित मालवीय ने इसे भारत के चुनावों में बाहरी हस्तक्षेप करार दिया। उन्होंने कहा, ''वोटर टर्न

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- ट्रम्प ने साथ में यह भी कहा, कि, मैं भारत के प्र.मंत्री मोदी का आदर करता हूँ, भारत को ''वोटर टर्न आऊट'' बढ़ाने के लिए दिये गये अनुदान का सख्त विरोध करता हूँ।
- ट्रम्प के अनुसार, ''भारत उन देशों की सूची में है, जो सबसे ज्यादा टैक्स लगाते हैं, विशेषकर अमेरिका से आयातित वस्तुओं पर। उनका टैरिफ इतना अधिक है, कि, हम (अमेरिका) तो वहां घुस ही नहीं पाते।
- वरिष्ठ भाजपा नेता अमित मालवीया ने कहा, यह जानने की जरूरत है, कि इस अनुदान से भारत में कौन ''लाभान्वित'' हुआ।

होली के बाद होगी चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति मामले की सुनवाई

नई दिल्ली, 19 फरवरी। देश की सर्वोच्च न्यायालय ने मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) और चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति से संबंधित कानून की वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं की सुनवाई स्थगित कर दी है, जिसमें चुनाव आयुक्तों के चयन पैनल से भारत के मुख्य न्यायाधीश को हटा दिया गया था। इससे पहले कोर्ट ने मंगलवार को कहा था कि वह मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) और निर्वाचन आयुक्तों (ईसी) की नियुक्तियों के खिलाफ दायर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- हालांकि, मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि इस मामले की प्राथमिकता के आधार पर 19 फरवरी को सुनवाई होगी, पर अब सुनवाई टाल दी गई है।

ट्रम्प व मस्क पहली बार टकराहट की स्थिति की ओर बढ़ रहे हैं, ''इलैक्ट्रिक कार मैन्युफैक्चरिंग'' को लेकर!

मस्क अपनी ''इलैक्ट्रिक कार'' टैस्ला के लिए भारत में कारखाना लगाना चाहते हैं, पर ट्रम्प की घोषित नीति के तहत यह प्लॉन्ट अमेरिका में लगना चाहिए।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 फरवरी। भारत में टैस्ला का, एक मैन्युफैक्चरिंग यूनिट स्थापित करने का प्रोजेक्ट अब थोड़ी मुश्किलों का सामना कर रहा है, क्योंकि इस समय कंपनी के सबसे बड़ा समर्थक, राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प, इसे अमेरिका के लिए ''अन्यायपूर्ण'' कदम मान रहे हैं। ट्रम्प चाहते हैं कि टैस्ला के इलेक्ट्रिक वाहन अमेरिका में बनें और भारत को निर्यात किए जाएं।

इसके बजाय, एक पक्के व्यवसायी के तौर पर एलन मस्क स्थानीय बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भारत में मैन्युफैक्चरिंग यूनिट स्थापित करने पर जोर दे रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, मस्क, भारत के अपने मैन्युफैक्चरिंग ऑपरेशंस से कुछ क्षेत्रीय बाजारों को भी सेवा देना चाहते हैं।

ऐसा इसलिए, क्योंकि, संयुक्त राज्य अमेरिका में बने इलेक्ट्रिक वाहन क्षेत्रीय बाजारों और भारत में प्रवेश के लिए काफी महंगे पड़ेंगे। इसके अलावा, यह कदम, उत्पाद इकाइयों द्वारा ''अमेरिका को फिर से महान बनाने'' के ट्रंप के बुनियादी सिद्धांत के खिलाफ भी है।

तथापि, ट्रम्प अपनी ही दुनिया में जी रहे हैं। अमेरिका ने कई मैन्युफैक्चरिंग बेस और आपूर्ति श्रृंखलाएं खो दी हैं, जो विभिन्न वस्तुओं के कुशल मैन्युफैक्चरिंग के लिए आवश्यक थीं। यह, मैन्युफैक्चरिंग के एक स्तर से दूसरे स्तर की ओर पलायन की बस एक प्रक्रिया है। एक बार जब कोई देश एक निम्न स्तर की गतिविधि की स्पेस को छोड़ देता है, तो उसे फिर से उस स्पेस में वापस लौटना मुश्किल होता है।

दूसरी तरफ, भारत को देश में, संपूर्ण इलेक्ट्रिक वाहन के लिए आवश्यक सभी कॉम्पोनैंट्स के निर्माण के काम में जुटना होगा। इस उद्योग के लिए आपूर्ति श्रृंखला इतनी प्रभावी होनी चाहिए कि उत्पाद की अंतिम लागत कॉस्ट-इफैक्टिव हो सके।

तथापि, इस पूरे प्रोजेक्ट को ट्रम्प से नकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है। दरअसल, कुछ मीडिया हाउस यह बता रहे हैं कि ट्रंप व मस्क, दोनों के हित स्पष्ट रूप से परस्पर विरोधी हैं। एलन मस्क एक व्यवसायी हैं और उनके बड़े व्यापारिक हित उनकी प्राथमिकता हैं।

यहां तक कि मस्क, ट्रम्प से कहीं बड़े उद्योगपति हैं, और यह बात उनके पसंदीदा टेलीविजन चैनल, फॉक्स न्यूज के एक इंटरव्यू में जाहिर हुई। इन्टरव्यू लेने वाले ने साफ कहा कि मस्क सबसे अमीर आदमी हैं और संपत्ति के मामले में ट्रम्प उनसे बहुत पीछे हैं। ट्रम्प ने इसे नज़रअंदाज़ किया, हालांकि, यह बात उन्हें बिल्कुल भी पसंद नहीं आई।

तथापि, मस्क ट्रम्प के लिए एक उपयोगी सहायक साबित हो रहे हैं, क्योंकि मस्क ट्रम्प के कार्यकारी आदेशों को लागू करने के लिए टैक्नॉलजी इनपुट्स मुहैया कराने की बात कर रहे हैं। हो यह रहा है, कि कार्यकारी आदेशों को प्रभावी ढंग से तैयार तो किया जा रहा है, लेकिन आदेशों की क्रियान्विति की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- मस्क का इरादा है, इण्डिया के कारखाने में निर्माण करके वे एशिया अफ्रीका आदि क्षेत्रों में अपनी टैस्ला कार सस्ते दामों में बेच सकेंगे।
- ट्रम्प का सोच है, अगर, टैस्ला कार अमेरिका होकर विश्व भर में भेजी जाये, तो अमेरिका ज्यादा समृद्ध होगा व अमेरिका में रोजगार भी ज्यादा उपलब्ध होंगे।
- मस्क का सोच ज्यादा व्यवहारिक लगता है, क्योंकि, हिन्दुस्तान में धीरे-धीरे कालान्तर में किफायत से काम करने की तकनीक विकसित हो गई है, अतः भारत में निर्मित टैस्ला, अमेरिका में निर्मित टैस्ला से ज्यादा सस्ती होगी।
- मस्क का मानना है, जैसा, कि, उन्होंने हाल ही में अपने फेवरेट टी.वी. चैनल फॉक्स न्यूज़ को दिये इन्टरव्यू में जताया कि ट्रम्प की तुलना में मस्क कहीं ज्यादा बड़े व सफल उद्योगपति हैं, अतः उनकी सोच मानी जानी चाहिए।
- ट्रम्प को मस्क का यह बड़बोलापन कतई पसन्द नहीं आया था।

एस.आई. भर्ती पेपर लीक पर सुनवाई गुरूवार को होगी

जयपुर, 19 फरवरी। राजस्थान हाईकोर्ट में बुधवार को एसआई भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में दायर याचिका पर सुनवाई नहीं हो सकी। अदालत ने मामले की सुनवाई गुरुवार को तय की है।

याचिकाकर्ता कैलाश चन्द्र शर्मा व अन्य की याचिका बुधवार को जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ में दोपहर दो बजे सुनवाई के लिए सूचीबद्ध थी। वहीं, अतिरिक्त महाधिवक्ता विज्ञान शाह की ओर से सुबह ही अदालत को जानकारी दी गई कि प्रकरण में उच्च स्तर पर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- अतिरिक्त महाअधिवक्ता विज्ञान शाह ने हाईकोर्ट को जानकारी दी कि प्रकरण में उच्च स्तर पर विचार-विमर्श चल रहा है, अतः सुनवाई गुरूवार तक टाल दी जाये।

विचार बिन्दु

कलियुग में रहना है या सतयुग में यह तुम स्वयं चुनो, तुम्हारा युग तुम्हारे पास है। –विनोबा

अपराधों में अब जो हो रहा है!

आदि काल से अब तक व्यक्तियों के समूह या समाज में अपराध सदैव से होते आए है। विश्व के सभी तीन बड़े धर्मों की पवित्र किताबों में विभिन्न प्रकार के अपराधों का उल्लेख आता है।

उदाहरण के लिए बाइबल में जो कमांडमेंट्स है उनमें कुछ काम नहीं करने के लिए कहा गया है जैसे– चोरी, हत्या, व्यभिचार नहीं करें अर्थात यह अपराध उस वक्त समाज में थे। मानव व पशु बलि, नर संहार, युद्ध, झूठी गवाही, किसी दूसरे की सम्पति को अनाधिकार कब्जाना आदि अपराध भी उल्लेखित है। इन सभी प्रकार के अपराधों को मानवता और ईश्वर के विरुद्ध अपराध माना है।

इस प्रकार इस्लामिक धर्म ग्रन्थों में भी कुछ कृत्यों को घृणित व अपराध माना है। मानव हत्या को अपराध माना है। चोरी को अपराध माना है। इसी प्रकार व्यभिचार, बलात्कार को निम्नतम श्रेणी का घृणित अपराध माना है। ईश्वरीय आज्ञाओं का उल्लंघन अपराध की श्रेणी में आता है। किसी की झूठी भर्तसना करना, लांछन लगाना आपराधिक श्रेणी का कृत्य माना गया है।

ग्रीक–यूनान व भारत की पौराणिक कथाओं में अनेक हत्या, परस्त्रीगमन, चोरी, जबरन या धोखे से योन सम्बन्धों जैसे अनेक अपराधों का उल्लेख मिलता है। ग्रीक पौराणिक कथाओं में तो यौन अपराधों का विस्तार से उल्लेख है।

काल गणना में भारतीय सत्ययुग, त्रेता युग, द्वापर व कलियुग की बातें करते है। सत्ययुग की बात तो मैं ज्यादा जनता नहीं किन्तु त्रेता, द्वापर और वर्तमान कलियुग के बारे में आम जन में प्रचलित कहानियों, तत समय का वर्णन करने वाले शास्त्रों में वे अधिकतर अपराध उल्लेखित हैं जो आज हम देखते–सुनते है। आज जैसे साइबर अपराधों का जिक्र पुराने शास्त्रों में नहीं है––शायद इसलिए कि उस समय इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, इनटरनेट नहीं था। वैसे सिद्ध व दुष्ट आत्माएं दूर से ही अच्छे–बुरे कर्म कर सकते थे, ऐसे उदाहरण खींचतान कर निकाले तो जा सकते हैं।

बड़े–बूढ़ों से बचपन से सुनते आए है कि ऐसा कोई अपराध नहीं जिसका महाभारत में उल्लेख न आया हो। अर्थात कोई भी काल रहा हो मानव समाज अपराध रहित कभी नहीं था। मानव समाज ही नहीं, चौपाए पशुओं, पक्षियों व जलीय प्राणियों के समूहों में हिंसक (उनकी शारीरिक क्षमताओं के अनुसार) अपराध होते है, होते आए हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे।

भूतकाल में जनसंख्या कम थी, तीव्रता से सूचनाओं को आग की तरह से प्रचारित– प्रसारित करने के साधन थे नहीं थे या अत्यंत सीमित थे। अखबारों के आने से पहले तो आपराधिक घटनाओं की जानकारी परिवार–पड़ोस–गांव–मोहल्लों तक सीमित रहती थी या कोई थोड़ा सक्षम व्यक्ति होता तो कोतवाली या किसी ओहदेदार व्यक्ति के पास फ़रियाद लेकर जाता। अखबारों के आने के बाद आपराधिक सूचनाओं, गतिविधियों का कुछ प्रचार–प्रसार होने लगा। ज्यों–ज्यों जनसंख्या में वृद्धि हुई, अपराधों की संख्या में भी वृद्धि होना स्वभाविक था। अपराधों की संख्या भी बढने लगी।

आज के युग के अखबार, इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी से बने एप्प्स, सोशल मीडिया, कोंटेंट्स को लॉंचपैड देने वाले प्लेटफार्म्स व इनटरनेट 20–30 साल पहले नहीं थे इसलिए आपराधिक घटनाओं की जानकारी, समाज को व्यापक स्तर पर कम होती थी। वर्तमानं में प्रचार–प्रसार के लिए अखबार, टीवी, सोशल मीडिया जैसे साधनों में भी आशातीत वृद्धि हुई है। इसलिए अब आम अपराध जो सदियों से होते आए उनकी और नए–नए प्रकार के नए नए घृणित अपराधों की भी जानकारी आम जन तक पहुंच रही है। तकनीकी सुविधाओं के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पक्ष हैं।

अपराधों की वृद्धि के अन्य प्रमुख कारणों में है––(1) परिवारों व समाज में नैतिक दायित्वों व प्रभाव में कमी (2) प्रारंभिक शिक्षा छोटी उम्र से लड़कों व लड़कियों को नैतिक दायित्वों के निर्वहन के लिए प्रेरित कर सकती है व बुरे कर्मों के प्रति अनादर व उनसे दूर रहने की भावना विकसित करती है। प्रारंभिक शिक्षा पाठ्यक्रमों में ऐसी प्रेरणा देने वाले लेख, कहानियां, नाटक, कविताए आदि का समावेश निरन्तर कम से कमतर होते गए हैं। आज से 20–30 साल पहले तक इस दृष्टि से अत्यंत सरल, प्रेरक कहानियां, लेख, नाटक आदि स्कूली पाठ्यक्रमों के आवश्यक भाग होती थी।

वर्तमान समय में महिलाओं और पुरुषों को काम धंदे, व्यवसाय, पढ़ाई, नौकरी, मजदूरी के लिए अपने जन्म स्थान से दूर जगहों पर जाना पड़ता है। नई जगह पर नए व्यक्तियों के साथ सम्पर्क होता है, साथ रहना पड़ता है। नई कामकाजी व दोस्ती के रिश्ते गढ़ने पड़ते है। यहां पर परिवार, पड़ोस, रिश्तेदारियों के नैतिक अंकुश–दबाव से दूरी हो जाती है। ऐसे नए परिवेश–वातावरण में उच्छश्रृंखल व आपराधिक मनोवृतियों को बढ़ने का अवसर रहता है। ऐसे माहौल में कुछ पुरुष–महिलाएं आपराधिक रास्ते भी बिना हिचक के अख्तियार कर लेते हैं। इस से भी अपराध बढ़ते है।

औद्योगिक व सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति के बाद, अपराधों के सम्बंध में एक प्रभाव यह हुआ कि अपराधियों की धरपकड में आने वाली कठिनाइयां बढ़ी। अपराधी त्वरित गति से वारदातों के नए–नए तरीक़े सीखने लगे, वारदात की जगह से दूर दराज जाने लगे, कार्यस्थल, निवास बदलने लगे। सही है, अपराधियों की धरपकड करने वालों को भी अपराधियों की लोकेशन तलाशने, उन तक शीघ्र पहुंच आदि में कुछ सुविधाएं हुई हैं। अपराध बढ़ने और उनकी रोकधाम, दोनों की गति से काफी अंतर है। दौड़ में अपराध आगे हैं।

> **किन्तु अब तो ऐसे ऐसे वीडियो-ऑडियो की बाढ़ सी है जिनमें आवाज किसी की, शरीर का धड़ किसी ओर का और चेहरा किसी ओर का होता है। इनमें सच्ची के साथ, से निर्मित सरासर झूठी योन क्रियाएं भी दिखाई जा सकती है। इनसे बहुत बड़े व्यापक स्तर पर नैतिक पतन का घृणित प्रदूषण फैल रहा है।**

वर्तमानं समय में तो ऐसे नए–नए प्रकार के घृणित अपराधों में बेहताशा वृद्धि हुई है जिनके बारे में 10–15 साल पूर्व तक, एक सामान्य व्यक्ति सोच भी नही सकता था। अपराधों के ऐसे ऐसे समाचार मीडिया में आते है जिनकी तो शायद ही किसी ने कल्पना की हो। निकटतम पारिवारिक रिश्तों तक कि मर्यादाओं को तारतार करने वाले 2, 4, 5 समाचार महीने–दो महीने में सुनने–पढ़ने को मिलना आम बात हो गई। सौतेले माँ व बाप की सौतेली संतानों के साथ माँ–बाप–भाई–बहनों के घृणित से घृणित रिश्ते सुनने में आते है। प्रेमी–प्रेमिकाओं के द्वारा पूर्व पार्टनर्स की व उनसे पैदा हुई संतानों की हत्या के मामले लगातार मीडिया में आते ही रहते है। धन, सम्पति के लिए निकटतम रिश्तों (माँ, बाप, बेटे–बेटियों द्वारा एक–दूसरे की हत्याएं) वालों की हत्याऐं तो आम सी बात हो गई।

बड़े पैमाने पर बढ़ते अपराधों के लिए, अपराधियों की मोबिलिटी, फोन सम्पर्क आदि से कहीं ज्यादा दूसरे व्यापक प्रभाव वाले कारण भी है, जिनमें प्रमुख है:–घटिया फिल्में–पिक्चर्स–विज्ञापन व सबसे ऊपर सूचना प्रौद्योगिकी व इंटरनेट क्रांति।

सत्य है कि फिल्में, पिक्चर्स, विज्ञापन विभिन्न प्रकार की बुराइयों के विरुद्ध जन मानस तैयार करने, सदविचारों, सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध विचारों, नई विचारधाराओं, विज्ञानिक सोच आदि की अभिव्यक्ति व उनके प्रचार–प्रसार के सशक्त साधन भी रहे है और है भी।

किंतु जब दूषित मानसिकता वाले निर्माताओं का एकमात्र उद्देश्य शीघ्रातिशीघ्र व अधिकाधिक धनार्जन ही हो जाए या फिर आपराधिक मनोवृती वालों का इनसे धनार्जन का या समाज में अपराध फैलाना ही प्रमुखतम धेय हो जाए तो फिर तो समाज का भगवान ही मालिक है।

सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति व अब अर्टिफिसीयल इनटेलिजेंस (AI) (कृत्रिम बुद्धिमता) ने आदमी को कैसा भी अच्छा–बुरा कॉन्टेंट तैयार करने का भष्मासुर वाला सा हथियार दे दिया और इनटरनेट नें ऐसे कोंटेंट्स को सेकंडों में पूरे संसार नें फैलाने की ताकत दे दी।

पहले ऐसी पिक्चर्स जिन में यौन सम्बंधित दृश्य होते थे उन्हें कम उम्र के बालकों, बालिकाओं को दिखाने की मनाही होती थी। इसका तोड़ निकाला ऐसे दृश्यों के वीडियो बनाकर उन्हें चोरी–छिपे प्रसारित करने और उनसे धन कमाना। एक समय ऐसा था जब ऐसे वीडियोज का फिल्मों के समानांतर साम्राज्य सा हो गया था। फ़िल्म प्रोड्यसर्स नें इसका जबरदस्त विरोध भी किया क्योंकि उनकी कमाई पर असर पड़ने लगा। किन्तु यह सब तो भूतकाल की बातें हो गई।

अब तो, जानकार लोग बताते रहते हैं कि अकल्पनिय योन क्रियाओं, अपराधों के सही के या कृत्रिम बुद्धिमता (AI) से बनाए वीडियोज, ओड़ियोज की बाढ़ सी आ रही हैं। पहले पहल तो ऐसे वीडियोज–ओडियोज का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिद्वंदियों, उत्पादों आदि की साख खराब करने के लिए हुआ। इनसे भी समाज में अनैतक प्रदूषण फैला किन्तु बहुत बड़े व्यापक स्तर पर वर्तमान जैसे नैतिक पतन करने वाला घृणित प्रदूषण नहीं फैला।

किन्तु अब तो ऐसे ऐसे वीडियो–ऑडियो की बाढ़ सी है जिनमें आवाज किसी की, शरीर का धड़ किसी ओर का और चेहरा किसी ओर का होता है। इनमें सच्ची के साथ, से निर्मित सरासर झूठी योन क्रियाएं भी दिखाई जा सकती है। इनसे बहुत बड़े व्यापक स्तर पर नैतिक पतन का घृणित प्रदूषण फैल रहा है।

जब ऐसे अश्लील वीडियोज की पहुंच कम उम्र वाले लड़के–लड़कियों तक हो जाए और उन्हें अच्छी तरह से मार्गदर्शन करने वाले साहित्य की शिक्षण पाठ्क्रमों में भारी कमी आ जाए, परिवार–पड़ोस–रिश्ते नातों का व समाज के नैतिक अंकुश में भारी कमी आ जाए तो बाल बुद्धि को ऐसे वीडियोज को देखने से और वैसा कुछ करने से कोन रोकेगा–टोकेगा?

तो समाधान क्या? समाधान के लिए परिवार, पड़ोस, रिश्तेदारों, समाज और तथाकथित सांस्कृतिक संगठनों को तो निश्चित: ही अपने दायित्वों का निर्वहन के लिए आगे आना ही पड़ेगा। दो ओर पक्ष है जिसका दायित्व सर्वाधिक है। एक है केंद्र सरकार और दूसरा है सोशल मीडिया व दूसरे कोंटेंट्स के प्रसारण के लिए बने विभिन्न प्लेटफार्म्स। सरकार अमर्यादित–अश्लीलता वाले विज्ञापनों–पिक्चर्स–वीडियोज व अश्लीलता वाले कोंटेंट्स के सर्जकों पर और उसके प्रसारण करने वाले प्लेटफार्मस के लिए सख्त कानून के जरिये और उसके 100 प्रतिशत क्रियान्वयन के जरिये लगाम लगाए।

सबसे पहले तो संसद को अश्लीलता शब्द को व्यापक सन्दर्भ में परिभाषित करना पड़ेगा। इस परिभाषा को ध्यान में रखते हुए, सोशल मीडिया व दूसरे कोंटेंट्स को लॉंचपैड देने वाले पलेटफॉर्मस के दायित्व तय करने होंगे। दायित्वों का उल्लंघन करने वालों को दंडित करने के सख्त प्रावधान बनाने होंगे। उनका त्वरित प्रभावी क्रियान्वयन भी सरकारों को सुनिश्चित करना होगा। प्लेटफार्म्स प्रोवाइडर्स को भी स्वयं से केवल व केवल उचित, सामाजिक दृष्टि से मर्यादित कोनेंट्स को ही जगह देने के लिए मानदंड तय करने चाहिए। इतना विकास तो हो ही चुका है जिससे अमर्यादित शब्दों–दृश्यों को स्वत: ही ब्लॉक किया जा सकता है।

स्मरण रहे––विज्ञान की कोई भी खोज, अविष्कार मानवता के लिए वरदान और अभिशाप दोनों है। यह मनुष्यों पर निर्भर करता है वे उसका उपयोग कैसे करते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
महावीर सिंह,
आई.ए.एस. (से.नि.)

यह जनता का बजट है जो विकसित राजस्थान के संकल्प को आगे ले जाएगा

बाल मुकुन्द ओझा

राजस्थान की भाजपा सरकार ने विधान सभा में अपने कार्यकाल का दूसरा सालाना बजट प्रस्तुत करते हुए राहत का पिटारा खोल दिया है। वित्त मंत्री दिया कुमारी ने बुधवार को वर्ष 2025–2026 का बजट प्रस्तुत किया। वित्तमंत्री ने कहा भाजपा सरकार जनविश्वास पर खरा उतरते हुए सब के सहयोग से खुशहाल और विकसित राजस्थान बनाने का हर संभव प्रयास करेगी। साथ ही विकास, निवेश और उपभोग को कई गुणा बढ़ाएगा। दिया कुमारी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमने प्रथम वर्ष में ही नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। सरकार ने जनता के विश्वास को सही प्रमाणित किया है।

बजट में समाज के सभी वर्गों के कल्याण की घोषणा करते हुए कहा गया है कि हमारी सरकार का यह दृढ़ विश्वास है कि समाज के हर तबके खासतौर पर निर्धन, असहाय और पिछड़े वर्ग को सशक्त बनाकर ही हम अपने प्रदेश को गरीबी और बेरोजगारी के अभिशाप से मुक्त कर सकते है। वित्त मंत्री ने आम आदमी के कल्याण की विभिन्न घोषणाओं का पिटारा खोलते हुए अपनी सरकार का मंतव्य भी स्पष्ट कर दिया। यह बजट युवाओं, गरीबों, किसानों, महिलाओं और सभी क्षेत्रों के विकास को बढ़ावा देने वाला है। बजट में समाज के सभी वर्गों को खुश करने का प्रयास किया है।

यह विकसित राजस्थान के सपने को साकार करने वाला एक बेहतरीन बजट है। सत्ता पक्ष ने बजट का स्वागत करते हुए जहाँ गावं, गरीब और किसान के लिए समर्पित बजट बताया है तो विपक्ष ने इसे निराशाजनक घोषित किया है। मुख्य मंत्री भजनलाल ने पत्रकारों से कहा, यह सर्वजनहिताय का बजट हैं। राजस्थान का 350 बिलियन अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य हैं। इस बजट में बुनियादी सुविधाओं पर ध्यान रखा गया हैं। उन्होंने कहा कि संकल्प पत्र में किये गए वायदे के अनुसार ये बजट पेश किया है। हम राजस्थान की जनता के बीच में संकल्प पत्र लेकर गए थे। हमारी सरकार ने एक वर्ष में 50 प्रतिशत संकल्प पत्र के वायदों को पूरा किया हैं।

बजट के विश्लेषण से लगता है इसमें समाज के सभी वर्गों को कमोवेश राहत प्रदान की गई है। बजट खासतौर पर युवाओं, किसानों, महिलाओं और गांव गरीब पर केंद्रित है। यह बजट बचत, निवेश और उपभोग को बढ़ाएगा और साथ ही विकास को भी तेज़ी से बढ़ाएगा। बजट में आम तौर पर फोकस इस बात पर रहता है कि सरकार का खजाना कैसे भरे, लेकिन ये बजट उससे बिल्कुल उल्टा है। यह बजट प्रदेश के सर्वांगीण विकास में भागीदार कैसे बने, इसकी बहुत मजबूत नींव रखता है। भजनलाल सरकार द्वारा कई लोक लुभावने विषयों को समेटने का इस बजट में प्रयास किया गया है। वित्त मंत्री दिया कुमारी ने हर सेक्टर को छूने का प्रयास किया है। बजट में सभी वर्गों के लिए कुछ न कुछ प्रावधान किए गए हैं। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पेयजल, बिजली, सड़क, महिला एवं बाल विकास, सिंचाई, सहकारिता, पशुपालन आदि पर विशेष ध्यान दिया गया है। बजट में सवा लाख युवाओं को सरकारी नौकरी और डेढ़ लाख को निजी क्षेत्र में रोजगार सुलभ कराने की घोषणा से युवा वर्ग को सम्बल मिलेगा।

150 यूनिट फ्री बिजली के साथ 5 लाख नए घरेलू बिजली कनेक्शन और 5 हजार नए कृषि कनेक्शन भी देगी। मंदिरों में भोग की राशि 3 हज़ार और पुजारियों का मानदेय 7 हज़ार होगा। पत्नी के साथ खरीदी गई 50 लाख तक की प्रॉपर्टी सस्ती होगी। सरकार ने बजट में स्टांप ड्यूटी में आधा प्रतिशत छूट की घोषणा की है। खाद्य सुरक्षा योजना में दस लाख नए परिवारों को जोड़ने का ऐलान किया गया है। राजधानी में बीआरटीएस सिस्टम हटाने के साथ मेट्रो के नए फेज का भी ऐलान किया गया है। 40 लाख तक के टर्न ओवर वाले व्यापारियो को रजिस्ट्रेशन से छूट, सेल्फ असेसमेंट की व्यवस्था लागू होगी। पीएम किसान सम्मान निधि बढ़ाकर 9000 रुपए की गई है। गेहूं के एमएसपी पर प्रति क्विंटल 150 रुपए बोनस की घोषणा की है। राजीविका मिशन के तहत 20 लाख महिलाओं को लखपति दीदी की श्रेणी में लाया जाएगा। सामाजिक सुरक्षा के तहत कमजोर आय वाले बुजर्ग, विधवा की पेंशन 1250 रुपए की गई है। फिट इंडिया की तर्ज पर फिट राजस्थान अभियान शुरू होगा। प्रदेश में इस समय 5 हजार से ज्यादा स्टार्टअप हैं।

इन स्टार्टअप से 36 हजार युवा जुड़ रहे हैं। सरकार के मुताबिक जन घोषणा पत्र की 58 प्रतिशत और बजट घोषणा की 73 प्रतिशत घोषणा पूरी हो गई है। अगले साल 1500 स्टार्ट अप बनाएंगे, 750 से ज्यादा स्टार्टअप को फंड उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही 50 हजार युवाओं को कौशल प्रशिक्षण दिया जाएगा। पर्यटन विकास के लिए 975 करोड़ के काम होंगे धार्मिक पर्यटन स्थलों का विकास होगा। शहरों में दो लाख नए पट्टे दिए जाएंगे। रोडवेज को 500 नई बसें मिलेंगी। जयपुर मेट्रो के सेकेंड फेज के तहत 12 हजार करोड़ की लागत से सीतापुरा से विद्याधर नगर तक काम किया जाएगा। जगतपुरा, वैशाली क्षेत्र में मेट्रो के लिए सर्वे किया जाएगा।

–बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

उड़ीसा के कलाकारों ने भारतीय लोक कला की छटा बिखेरी

जालोर महोत्सव के तहत उड़ीसा के लोक कलाकारों ने नृत्य की प्रस्तुति दी।

■ **जालोर महोत्सव 2025 के तहत जगन्नाथपुरी रथयात्रा का चित्रण किया**

जालोर, (कासं)। जालोर महोत्सव 2025 के तहत मंगलवार रात्रि को नटराज मंच पर उड़ीसा के लोक कलाकारों ने जगन्नाथपुरी यात्रा सहित कई लोक संस्कृति से ओतप्रोत नृत्य की प्रस्तुति देकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

जालोर महोत्सव में मंगलवार को रात्रि को नटराज मंच पर उड़ीसा के संबलपुरी लोक नृत्य कलाकारों ने भगवान जागनाथपुरी की रथ यात्रा, गणपति बप्पा, सम्बलपुरी लोक नृत्य, राधा कृष्ण के लोक नृत्य सहित विभिन्न प्रकार के नृत्य की प्रस्तुति दी। एकेडमी के निदेशक रश्मि रंजन के निर्देशन में लोक कलाकार दल ने पांच वाध ढोलक, निसान, तासा, झांझ, मुहूरी आदि का इस्तेमाल करते हुए मायलाजड नृत्य, नचनिया, भजनिया, करमा नृत्य, जांहिफूल नृत्य, ढाप नृत्य व मालेश्री आदि लोक नृत्य की अनुठी प्रस्तुति देकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। जालोर महोत्सव में उड़ीसा से आये कलाकारों ने बताया कि जगन्नाथ रथ यात्रा का मंचन करने के लिए कलाकार ने व्रत उपवास रखकर 45 दिनों की साधना करके जगनाथपुरी के दर्शन कर वहां से प्रसाद लेकर आये हैं, जिसे उपस्थिति दर्शको को वितरण किया गया। नटराज मंच पर लोक नृत्य की विभिन्न कलाओं को देखकर उपस्थित जनसमूह ने तालियों से कलाकारों का हौसला अफजाई की।

इस दौरान जालोर विकास समिति के सचिव मोहन पाराशर, कानाराम परमार, नारायणलाल भट्ट, हितेश प्रजापत, नितिन सोलंकी, समन्वयक रतन सुथार, नाथू सोलंकी सहित काफी संख्या में नागरिक मौजूद रहे।

शहीद हवलदार संजय शर्मा का शहादत दिवस मनाया

शहीद की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी उपखंड के ककराय गांव में बुधवार को शहीद हवलदार संजय शर्मा का शहादत दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सैनिक कल्याण अधिकारी कर्नल सुरेश जांगिड़, विशिष्ट अतिथि शेर सिंह कृष्णिया थे, जबकि अध्यक्षता शहीद पिता रामभरोस ने की।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम अतिथियों ने शहीद की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। मुख्य अतिथि कर्नल सुरेश जांगिड़ ने कहा कि राजस्थान की वीर धरा की परंपरा है कि देश की सुरक्षा करते हुए न्योछावर हो जाना। वीर शहीदों की बदौलत ही आज हम सीमाओं की तरफ से सुरक्षित हैं। शहीद सभी के लिए सम्माननीय है। झुंझुनूं जिले को देश में सर्वाधिक सैनिक देने का गौरव प्राप्त है। यहां के युवाओं को बचपन से ही देश सेवा के प्रेरित किया जाता है जो सेना में भर्ती होकर अपने देश की सरहद पर बहादुरी का परिचय देते है। जिले के गांवों में सड़क किनारे लगी शहीदों की प्रतिमाएं युवाओं को आगे बढ़कर देश सेवा के लिए प्रेरित करती है। ऐसे में युवाओं को भी शहीदों के जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ाना चाहिए। शहीद संजय शर्मा 2013 में आसाम राइफल में भर्ती हुए थे। वहीं 2022 में मणीपुर में अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए थे।

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों ने शहीद वीरांगना मिकी देवी, पिता रामभरोस का माल्यार्पण कर सम्मान किया। इस मौके पर पूर्व सरपंच ओमप्रकाश, देवदत्त जाँगिड़, रामचंद्र गुर्जर, अंजनी कुमार, अनुराग शर्मा, सूरज मीणा, दिलीप मीणा, मनोज शर्मा, जितेंद्र, विवेक, नवीन, कैलाश जांगिड़, नवीन, राजकुमार मीणा, आदेश, जतिन सहित अनेक ग्रामीण मौजूद थे।

रीट पात्रता परीक्षा का सर्टिफिकेट आजीवन मान्य, सीईटी सर्टिफिकेट की अवधि सिर्फ एक साल

बीकानेर, (निसं)। राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड की ओर से विभिन्न विभागों की भर्ती प्रक्रिया से पहले स्क्रीनिंग के लिए आयोजित की गई राजस्थान समान पात्रता परीक्षा सीईटी–2024 सीनियर सेकेंडरी लेवल एग्जाम का रिजल्ट घोषित कर दिया है। सीईटी एसएस पात्रता परीक्षा में लगभग 59.5 प्रतिशत अभ्यर्थी निर्धारित अंक अर्जित कर विभिन्न प्रतियोगी परीक्षा में शामिल होने के लिए एलिजिबल हुए हैं। जबकि 40.5 प्रतिशत अभ्यर्थी पात्रता परीक्षा में न्यूनतम 40 प्रतिशतअंक हासिल नहीं कर पाए हैं। ऐसे में इन अभ्यर्थियों को अब अगले साल होने वाली पात्रता परीक्षा के लिए इंतजार करना होगा। वहीं पात्रता हासिल करने वाले 9.17 लाख अभ्यर्थियों का सीईटी एसएस सर्टिफिकेट एक साल के लिए मान्य होगा। जहां रीट पात्रता परीक्षा सर्टिफिकेट आजीवन मान्य है। वहीं सीईटी सर्टिफिकेट की अवधि केवल एक साल ही है। बोर्ड की ओर से 900 सवालों से से छह सवालों को डिलीट किया गया है।

राजस्थान बेरोजगार यूनियन के प्रदेश प्रवक्ता अशोक चौधरी ने कहा कि राज्य सरकार को इसी साल से पात्रता परीक्षा के सर्टिफिकेट की अवधि को 1 साल से बढ़ते हुए 3 साल करना चाहिए। सीईटी सीनियर सेकेंडरी एग्जाम में पात्र अभ्यर्थियों को राज. वन अधीनस्थ सेवा, राज. पुलिस अधीनस्थ सेवा, राज. पंचायती राज, राज राज्य कृषि विपणन बोर्ड, राजस्थान कृषि उपज मंडी, राजस्थान अल्प संख्यक मामलात अधीनस्थ सेवा, राजस्थान लोक सेवा आयोग कार्यालय लिपिकीय सेवा, राजस्थान सचिवालय लिपिकीय सेवा, राजस्थान आबकारी अधीनस्थ सेवा, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान और राजस्थान अधीनस्थ कार्यालय लिपिकीय सेवा विभागों में भर्ती के लिए पात्रता मिल पाएगी। सीईटी 2024 सीनियर सैकंडरी एग्जाम में भी नियमों की शिथिलता दी गई थी। जिसके कारण से सीईटी में बिना नेगेटिव मार्किंग के केवल 40 प्रतिशत न्यूनतम उत्तीर्णांक प्राप्त करना आसान रहा। सीईटी में 18 लाख 63 हजार 156 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया था। जिसमें से 15 लाख 41 हजार 601 अभ्यर्थियों ने एग्जाम दिया। इस एग्जाम के 2139 पेज के रिजल्ट में अब 9 लाख 17 हजार 681 अभ्यर्थी पात्र हो गए हैं, यानि कि पात्रता प्रतिशत 59.5 प्रतिशत रहा है। सीईटी की पात्रता अवधि केवल एक वर्ष के लिए रखी गई है। सरकार की ओर से पिछले दिनों पात्रता अवधि को एक वर्ष से बढाकर तीन वर्ष कर दिया था, लेकिन बाद में इसे एक वर्ष कर दिया गया था। राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड ने यह भी स्पष्ट किया है कि भविष्य में होने वाली सीईटी की पात्रता अवधि तीन वर्ष रहेगी।

राशिफल गुरूवार 20 फरवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, विशाखा नक्षत्र दिन 1:30 तक, ध्रुव योग दिन 11:34 तक, बव करण प्रात: 9:59 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–कुम्भ, चन्द्रमा–वृश्चिक, मंगल–मिथुन, बुध–कुम्भ, गुरू–वृष, शुक्र–मीन, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 1:30 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 1:30 से आरम्भ होगा। आज श्रीनाथ जी पाटोत्सव, कालाष्टमी है। आज से राष्टीय फाल्गुन मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:28 तक, चर 11:16 से 12:41 तक, लाभ–अमृत 12:41 से 3:29 तक, शुभ 4:54 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:03, सूर्यास्त 6:18

मेष

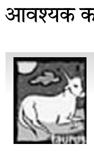

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

वृष

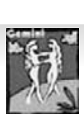

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

मिथुन

स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

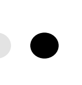

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या–वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी।

कन्या

आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेगी। आज परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

तुला

आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आज परिवार में शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। घर–परिवार में सुख–सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है।

मकर

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

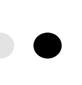

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

सार-समाचार

धरना-प्रदर्शन स्थगित

डूंगरपुर, (निसं)। राजमेस के अधीन कार्यरत समस्त यु.टी.बी.कार्मिकों का अपनी मांगो को लेकर 11 फरवरी से प्रारंभ हुए दो घंटे कार्य बहिष्कार एवं धरना प्रदर्शन 9 वें दिन बुधवार को आश्वासन मिलने पर सात दिवस के लिए स्थगित कर दिया गया है।डूंगरपुर मेडिकल कॉलेज यूटीबी कर्मचारियों द्वारा राजमेस सद्बुद्धी यज्ञ किया। उक्त सन्दर्भ में राजमेस जयपुर द्वारा संचालित सात मेडिकल कोलेज डूॅगरपुर, बाडमरे, भीलवाडा, भरतपुर, चुरू, सीकर, पाली के अधीन कार्यरत समस्त यु.टी.बी.कार्मिकों द्वारा अपनी मांगो को न मानने के कारण गत 11 फरवरी से प्रारंभ हुआ दो घंटे का कार्य बहिष्कार एवं धरना प्रदर्शन को अम्बरीश कुमार सचिव, चिकित्सा शिक्षा विभाग राजस्थान–जयपुर द्वारा मिले आश्वासन के बुधवार को 2 घण्टें कार्य बहिष्कार के प्रदर्शन को सात दिवस के लिए स्थगित किया। साथ ही मेडिकल कॉलजे डूंगरपुर के कर्मचारियों के द्वारा राजमेस सद्बुद्धी यज्ञ किया और प्रार्थना की गई की राजमेस अपनी सद्बुद्धी का सद्उपयोग करते हुए राजमेस में कार्यरत यू.टी.बी.कर्मचारियों को नियमित करनें एवं वेतन वृद्धि की मांग को अतिशीघ्र पूर्ण करने की मांग की है। यू.टी.बी.कर्मचारियों ने बताया कि भविष्य में मांगो को न मानने पर आदोलन को उग्र करने की चेतावनी दी। इस सद्बुद्धि यज्ञ में में यु.टी.बी.कार्मिक रोहित चौबीसा यू.टी.बी.अध्यक्ष डूंगरपुर, प्रभु पाण्डेय सचिव एवं अन्य यू.टी.बी. कर्मचारी रॉकी जोहियाला, योगेश चौबीसा, सुरेश जैन, पुष्पेन्द्र पण्ड्या, जितेन्द्र बरण्डा, किर्ती, जशोदा मेनात, पवन चलवा, निरज मीणा,अनिल कलासुआ, विनय कटारा, अर्जुनसिंह दरोगा, विशाल व्यास, विनय कटारा, लखन सुथार, अनिता शर्मा उपस्थित रहे।

बेटे के साथ कुएं में मिला मां का शव

डूंगरपुर, (निसं)। बिछीवाडा थाना क्षेत्र के आमझरा गांव में एक महिला और उसके 2 साल के बच्चे का शव कुएं में मिलने के बाद सनसनी फैल गई। दोनों 15 दिन से घर से गायब थे। शव को कुएं से निकालने के बाद बिछीवाडा अस्पताल के मोर्चरी में रखवाए गए है। 3 महीने से पीहर में रह रही महिला के ससुराल के लोगों के आने के बाद पोस्टमॉर्टम होगा। बिछीवाडा थाने के हेड कॉनि. ने बताया कि आमझरा गांव में महिला ओर उसके 2 साल के बच्चे के शव कुएं में मिले है। बुधवार सुबह स्कूल जा रहे बच्चों ने बिना मुंडेर के कुएं में महिला का शव पानी में तैरते हुए देखा। इसके बाद बच्चों ने आसपास के लोगों को बताया। घटना का पता लगने पर गांव के लोग इकट्ठे हो गए। महिला की पहचान इंदु कुंवर पटनी गुलाब सिंह चौहान निवासी खेलथाना पुलिस थाना ओगणा उदयपुर हाल पिता के घर आमझरा के रूप में की गई। कुएं में महिला के साथ ही उसके 2 साल के बच्चे दिगपाल सिंह का शव भी मिला। परिजनों ने बताया कि महिला अपने दो साल के बेटे के साथ दिवाली के बाद से ही पीहर में रह रही थी। 15 दिन पहले ही महिला बच्चे को लेकर घर से निकल गई थी। पिता और घर के लोगो ने कई जगह तलाश की, लेकिन उसका कोई पता नहीं चल सका था। आज घर से 500 मीटर दूर कुएं में शव मिला। पुलिस ने चारपाई को रस्सी से चारों कोनों से बांधकर कुएं में उतारा, इसके बाद ही दोनों शव बाहर निकाले जा सके। दोनों के शव पुराने होने से बदबू आ रही थी। पुलिस ने उसके शब को बिछीवाडा अस्पताल के मोर्चरी में रखवाए हैं। उदयपुर से ससुराल पक्ष के लोगो के आने के बाद ही पोस्टमॉर्टम की कार्रवाई होगी।

फार्मर रजिस्ट्री शिविर का आयोजन

कपासन, (निसं)। उपखण्ड अधिकारी राजेश सुवालका द्वारा तहसील में ग्राम पंचायत बनाकिया कलां में 17फरवरी से प्रारंभ तीन दिवसीय शिविर का निरीक्षण किया गया। सुवालका द्वारा बताया गया कि दिनांक 20फरवरी से 22फरवरी तक ग्राम पंचायत मुंगाना में शिविर का आयोजन किया जायेगा। जिसमें जिन कृषक की भूमि तहसील क्षेत्र में स्थित है, वे अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है। तहसीलदार मोहम्मद नासीर बेग द्वारा बताया गया कि शिविर में कुल 578 व्यक्ति उपस्थित हुये एवं कुल 501 रजिस्ट्रेशन किये गये। विकास अधिकारी कपासन, जनप्रतिनिधि कालुराम अहीर, पटवारी नरेश चौधरी, निधि जैन, स्वीटी भटनागर, लीला जाट, अमित चौधरी, ग्राम विकास अधिकारी राहुल आचार्य, रामेश्वर सालवी, संदीप नरुका आदि उपस्थित रहे।

कार-बाइक की भिड़ंत में युवक की मौत

डूंगरपुर, (निसं)। कोतवाली थाना क्षेत्र की भंडारिया घाटी में कार और बाइक की टक्कर में एक युवक की मौत हो गई। दूसरा युवक घायल हो गया। मृतक की पहचान उदयपुर पिपलापारा निवासी दिलीप गुर्जर के रूप में हुई है। कोतवाली थाने के सब इंस्पेक्टर के अनुसार मृतक के पिता कालू गुर्जर ने पुलिस को बताया कि दिलीप और उसका साथी सुरेश गुर्जर काम से डूंगरपुर के मेवाडा गए थे। वापसी के दौरान रात में भंडारिया घाटी के पास तेज रफ्तार कार ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में गंभीर रूप से घायल दोनों युवकों को डूंगरपुर जिला अस्पताल लाया गया। दिलीप की उपचार के दौरान मौत हो गई। पुलिस ने पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है। मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

युवती को भगाने का आरोप

डूंगरपुर, (निसं)। जिले के सिदडी खेरवाडा निवासी मीरा पत्नी मेघराज रोत ने उसकी नाबालिग पुत्री को भगा कर ले जाने का तीन जनों सहित अन्य जनों पर आरोप लगाते हुए डीवाईएसपी को नामजद ज्ञापन सौपा है। श्रीमती मीरा ने ज्ञापन में बताया कि उसकी नाबालिग पुत्री को 31 दिसम्बर के दिन मनोज परमार पुत्र भंवरलाल परमार,भंवरलाल पुत्र विष्णु परमार, श्रीमती कमला पत्नी भंवरलाल परमार सहित अन्य जनों ने मिल कर भगाकर ले जाने का आरोप लगाया है। उसकी पुत्री को मनोज परमार व उसका अन्य साथी उस दिन करीब सायं 6 बजे घर पर स्कूटी लेकर आया और मेरी पुत्री को जबरन स्कूटी पर बैठाया जब तक बीच बचाव करते तब तक वह वहां से भाग निकले थे। प्रार्थिया ने उसकी पुत्री को भगाने का दोवडा थाना पर प्रकरण दर्ज करवाया। इस प्रकरण का पुलिस द्वारा अब तक कोई कार्यवाही नहीं करने पर प्रार्थिया ने बुधवार को डीवाईएसपी के समक्ष उपस्थित होकर पुत्री को भगाने वालो के विरूद्व कार्यवाही कर न्याय की गुहार लगाई है। प्रार्थिया ने आरोप लगाया कि उसकी पुत्री के साथ मनोज परमार नामक युवक द्वारा दुष्कर्म कर इधर उधर बिछाने का भी आरोप लगाया है। प्रार्थिया द्वारा उक्त मुल्जिमो से पूछताछ करने पर उल्टे मारपीट पर उतारू होते है। पुत्री के साथ कोई संगीन वारदात कर सकते है। समय रहते इस प्रकरण की निष्पक्ष जांच करा न्याय की मांग की है।

निगम ने फिर दो इमारतों को किया सीज

उदयपुर,(कासं)। नगर निगम द्वारा लगातार यूडी टैक्स वसूली को लेकर सख्त कार्रवाई लगातार जारी है,बुधवार को एक बार फिर से राजस्व शाखा द्वारा दो प्रतिष्ठानों को सीज किया गया। नगर निगम राजस्व अधिकारी नितेश भटनागर ने बताया कि आयुक्त राम प्रकाश के निर्देश पर नगरीय विकास कर वसूलने को लेकर फिर बडी कार्यवाही करते हुए दो संपतियों को सीज किया गया। बुधवार को सेक्टर 4 में विद्या नगर सुदर्शन एन्क्लेव के सामने स्थित संजय डांगी की संपत्ति जिसका नगरीय विकास कर कुल 1०लाख 44 हजार995 रूपये बकाया था जिसे सीज किया गया। वहीं सब सिटी सेंटर कुश एंटरप्राइज गोल्डमाइन फर्नीचर की संपत्ति जिसका 8लाख43हजार424रुपए का नगरीय विकास कर बकाया था जिसे भी सीज किया गया। इनके द्वारा नगरीय विकास कर की राशि जमा नहीं कराने से नगर निगम द्वारा इन व्यावसायिक सम्पतियों पर ताला लगा इनकी व्यावसायिक गतिविधियाँ बन्द करा दी गई। कार्यवाही के दौरान राजस्व अधिकारी के साथ सहायक प्रशासनिक अधिकारी विनोद अग्रवाल और भारी पुलिस बल मौजूद रहा। नगर निगम द्वारा यू डी टैक्स वसूली को लेकर लगातार कार्रवाई की जा रही है। आयुक्त राम प्रकाश ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि नगरीय विकास कर सरकार द्वारा हर हाल में वसूल किया जाएगा। 1 वर्ष पश्चात राज्य सरकार द्वारा इसमें छूट प्रदान की गई है जिसका शहरवासी लाभ लेवे।

पांच करोड़ से अधिक लागत के विकास कार्यों की समीक्षा की

राजसमंद, (निसं)। जिला कलक्टर बालमुकुंद असावा ने बुधवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिले में समस्त विभागों के वर्तमान में चल रहे 5 करोड से अधिक लागत के विकास कार्यों की समीक्षा की। इस दौरान एडीएम नरेश बुनकर, जिला परिषद सीईओ बृजमोहन बैरवा सहित समस्त विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी, कार्यकारी एजेंसियों के अधिकारी, संवेदक आदि मौजूद रहे। कलक्टर ने एक–एक कार्य पर बारीकी से संबंधित कार्यकारी एजेंसी और विभाग के प्रभारी अधिकारी से पूछा और कहा

- **निर्धारित समयावधि में कार्य पूर्ण करें, नवनिर्मित भवनों के परिसर में कम से कम 50 पेड़ अवश्य लगाएं : कलेक्टर**

कि कार्यों को निर्धारित समयावधि में पूर्ण करें, ताकि लोगों को समुचित रूप से इन कार्यों का लाभ मिल सकें।

जिला कलक्टर ने निर्देश दिए कि सभी बिल्डिंग कार्यों को हेंड ओवर करने से पूर्व परिसर में न्यूनतम 5० पेड लगाए जाने सुनिश्चित करें। जिला कलक्टर ने यह भी कहा कि अब वे हर माह बैठक लेकर 5 करोड से अधिक लागत के विकास कार्यों की समीक्षा करेंगे। कलक्टर ने आरडीएसएस के कार्यों में धीमी प्रगति पर नाराजगी जताते हुए गति बढाने के निर्देश दिए। इसके अलावा पीएचईडी के 133 करोड की लागत के बाघेरी–चिकलवास पुर्नगठन पेयजल परियोजना के साथ–साथ ग्रामीण जल योजना जुणदा, लापस्या ग्रामीण जल योजना कोटडी–काबरा–खडबामनिया, भैंसाकमेड, उसरवास, रेबारियों की ढाणी, बडी बल्लों की भागल योजना की समीक्षा की। चिकित्सा विभाग के तहत 4० करोड की लागत से उपजिला चिकित्सालय भीम के अलावा 5० बैडेड सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र आमेट, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र धनेरिया, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नेडच, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बनेडिया, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कोठारिया के कार्यों की प्रगति पर बारीकी से जानकारी ली। आईटीआई भवन देवगढ, खमनोर एवं भीम का निर्माण के साथ ही 9 करोड के इन्डोर स्टेडियम निर्माण, 21 करोड के बीएससी नर्सिंग कॉलेज भवन निर्माण, 37.6० करोड की लागत से राजकीय आयुर्वेद योगा एवं प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र नाथद्वारा निर्माण, 15० करोड के राजसमन्द बांध मे जल की आवक में अभिवृद्धि करने के लिए खारी फीडर की प्रवाह क्षमता को बढाने के लिए शेष रहे जीर्णोद्धार तथा आवश्यक मरम्मत कार्य, 5 करोड के आगरिया फीडर का पुनरूद्धार कार्य (कुम्भलगढ) की समीक्षा की। इसी तरह 3० करोड की लागत से मेडिटूरिज्म एवं वेलनेस सेंटर बिल्ली की भागल नाथद्वारा का कार्य, रूडिप के तहत 1०6 करोड के नाथद्वारा शहर में गैर राजस्व जल को घटाने एवं नियमित जलापूर्ति के लिए जल उत्पादन एवं वितरण प्रणाली के सुदृढीकरण का कार्य व 1० वर्ष का रखरखाव एवं संचालन का कार्यों के लेकर कार्यकारी एजेंसी एवं विभाग से समीक्षा करते हुए जल्द कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए।

जिला कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित 5 करोड से अधिक लागत के कार्यों की समीक्षा बैठक में अधिकारियों को दिशा–निर्देश देते जिला कलक्टर बालमुकुंद असावा।

अमृता हाट बाजार में कलाकारों ने दी रंगारंग प्रस्तुति

अमृता हाट बाजार में केंद्रीय संचार ब्यूरो के कलाकार प्रस्तुति देते।

उदयपुर, (कासं)। महिला अधिकारिता एवं महिला बाल विकास विभाग द्वारा आयोजित उदयपुर जिला मुख्यालय पर भण्डारी दर्शक मंडप में संभाग स्तरीय अमृता हाट मेले में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के केन्द्रीय संचार ब्यूरो के पंजीकृत दल लीला देवी एंड पार्टी के कलाकारों द्वारा ब्यूरो के प्रदर्शक राजू जोहरी के नेतृत्व में मेले में खरीदारी करने आ रहे लोगों को अपनी कला के माध्यम से प्रस्तुति देकर मनोरंजन किया जा रहा है ।

मेले में कलाकारों द्वारा अपनी प्रस्तुतियों एवं गायन के माध्यम से बेटी बचाओ बेटी पढाओं, पोषण अभियान, विकसित भारत 2047 एवं संविधान के 75 वर्ष के बारे में जानकारी दी जा रही है। मेले में केन्द्रीय संचार ब्यूरो के पंजीकृत कलाकारों द्वारा तेरहताल, चरी नृत्य, घूमर, भवई नृत्य की प्रस्तुति देकर बेटी बचाओ बेटी पढाओ, पोषण अभियान के बारे में गीत गायन के माध्यम से आने वाले दर्शकों, महिलाओं को जानकारी दी जा रही है । मेले के दौरान केन्द्रीय संचार ब्यूरो की ओर से संविधान के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में हमारा संविधान हमारा स्वाभिमान विषय पर प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जा रहा है। इस अवसर पर केंद्रीय संचार ब्यूरो के सहायक निदेशक आर.एल. मीना एव महिला अधिकारिता विभाग के उप निदेशक संजय जोशी उपस्थित रहे।

उदयपुर से होकर गुजरेगा ट्राइबल टूरिस्ट सर्किट

उदयपुर, (कासं)। नेहरू युवा केंद्रए युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय,भारत सरकार के तत्वावधान में आयोजित अंतर.राज्यीय युवा आदान.प्रदान कार्यक्रम के दूसरे दिन कश्मीरी युवाओं को उदयपुर की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराया गया। दिन की शुरुआत जगदीश मंदिर के दर्शन से हुई,जहां युवाओं ने राजस्थानी स्थापत्य कला और मंदिर की ऐतिहासिक महत्ता को समझा। इसके पश्चात उन्हें सिटी पैलेस का भ्रमण कराया गया जहां उन्होंने मेवाड राजघराने की समृद्ध संस्कृति और विरासत के बारे में जाना।दोपहर के भोजन के उपरांत युवाओं को उदयपुर के प्रसिद्ध हथीपोल बाजार ले जाया गयाए जहां उन्होंने स्थानीय हस्तशिल्प,पारंपरिक परिधान और राजस्थानी कला की झलक देखी। इसके बाद पुराने उदयपुर के अमराई घाट और गणगौर घाट का भ्रमण किया गया, जहां उन्होंने पिछोला झील की सुंदरता और शहर के ऐतिहासिक परिदृश्य का आनंद लिया। शाम के सत्र में प्रतिभागियों को बगोर की हवेली में आयोजित संगीत एवं संस्कृति कार्यक्रम में शामिल किया गया। इस दौरान उन्होंने राजस्थानी लोकनृत्य,संगीत और कला का सजीव प्रदर्शन देखा जिससे वे राजस्थान की सांस्कृतिक स्मृद्धि से प्रभावित हुए।

किशोर की मौत

उदयपुर, (कासं)। शहर के प्रतापनगर थाना क्षेत्र में रेल्वे ट्रेक पार करते समय ट्रेन की चपेट में आने से किशोर की मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार मठ मादड़ी निवासी किशनलाल पुत्र अशोकर हरिजन की ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई।

युवक ने की आत्महत्या

उदयपुर, (कासं)। शहर के हिरणमगरी थाना क्षेत्र में युवक ने सिक्सलेन पुलिया से कूद कर आत्महत्या कर ली।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार हिरणमगरी थाना क्षेत्र पाराखेत सिक्स लेन हाईवे पुलिया से 70 फिट निचे कूद कर कानपुर पाटिया निवासी यश पाण्डोर पुत्र बालकृष्ण पाण्डोर ने आत्महत्या कर ली। 17 फरवरी रात में यश बाइक लेकर घर से निकला था। दूसरे दिन सवेरे उसका शव हाइवे से निचे रोड़ पर पड़ा मिला तथा बाइक हाइवे पर खड़ी थी। इसकी सूचना मिलने पर पुलिस ने मौके पर पहुंच कर मृतक को मोर्चरी में रखवा कर परिजनों की तलाश कर सूचना दी।

विदाई समारोह व पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित

उदयपुर । जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ कुल द्वारा संचालित श्री मन्नारायण उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं ओसीडीसी विद्यालय के विद्यार्थियों की ओर से बुधवार को एग्रीकल्चर महाविद्यालय के सभागार में विदाई समारोह एवं पारितोषिक वितरण समारोह का शुभारंभ कुलाधिपति भंवर लाल गुर्जर, कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत, प्रो. आईजे माथुर, डॉ.रचना राठौड़, डॉ. अमी राठौड़, डॉ. अपर्णा श्रीवास्तव ने किया। प्रारंभ में प्रधानाचार्य राजकुमारी सनाढ्य ने अतिथियों का स्वागत करते हुए विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। समारोह में छात्र छात्राओं ने खम्मा घणी – खम्मा घणी म्हारे रजपुता ने खमा घणी , काली – काली गाडी में घुमा दे भरतार, पधारो म्हारे देश , घुमर, बनी थारो चांद सरको मुखडो कटे नजर न लाग जाये..., एकल नृत्य समदरियो लहरा लेवे सा, ओ म्हारा मीठोडा मेहमान, सहित पंजाबी, राजस्थानी रिमिक्स गानों पर प्रस्तुतियॉ दे अतिथियो का मन मोह लिया।

कुलपति कर्नल प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने उत्कृष्ट विद्यार्थी व विद्यालय द्वारा आयोजित सांस्कृतिक, साहित्यिक, खेलकूद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों सम्मानित करते हुए कहा कि संस्कार से विचार आते है और वो विचार हमारे व्यवहार में बदलते है और व्यवहार से व्यक्ति का आचरण व आचार बनता है। युवाओं का आव्हान किया कि कडी मेहनत करके उंचाईयों की उडान के साथ शिखर को छूए, लेकिन अपनी संस्कृति, परम्परा एवं माता पिता को भूले, उनका पूरा मान सम्मान करें।

कुलाधिपति भंवर लाल गुर्जर ने कहा कि विद्यापीठ संस्थान ने देश ही नहीं विश्व पटल पर अपनी अलग पहचान बनाई है।ै। संचालन रिद्म गुर्जर, वृत्तिका गुर्जर , आभार कृष्णकुमार ने जताया। समारोह में मनीषा पालीवाल, भावना श्रीमाली, हितेष पालीवाल, सुरेश चंद आमेटा, रिद्म गुर्जर, टीना परिहार, मेघना रावल, मदन सिंह, राजेन्द्र सिंह शक्तावत, वृत्तिका गुर्जर, साजदा बानो, उन्नति व्यास, मंजु पाटीदार, मोनिका चौधरी, किरण पाटीदार, तन्वी श्रीमाली सहित संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

उत्कृष्ट विद्यार्थियों का प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने सम्मान किया।

सार-समाचार

बजट में उदयपुर जिले को मिली कई सौगातें

उदयपुर, (कासं)। वित्त मंत्री दिया कुमारी ने बुधवार को विधानसभा में राज्य बजट प्रस्तुत किया। इस दौरान युवा, किसान, नौकरीपेशा, महिलाओं सहित हर वर्ग के लिए घोषणाएं की गई। उदयपुर जिले को भी राज्य बजट में ढेरों सौगातें मिली। बजट को लेकर सभी ने हर्ष व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का आभार प्रकट किया। उदयपुर के ऋषभदेव सहित दक्षिणी राजस्थान के महत्वपूर्ण धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक केंद्रों को शामिल करते हुए 100 करोड की लागत से ट्राइबल टूरिस्ट सर्किट विकसित किया जएगा। उदयपुर शहर में जलापूर्ति के सर्विस लेवल, सप्लाई अंतराल व प्रेशर में सुधार संबंधी कार्य होंगे। उदयपुर में इंस्टीट्यूट ऑफ माइंस की स्थापना की जाएगी भारोडी से पलानाकलां वाया छोटी खेडी होते हुए भानसोल एनएच तक सडक (8 किमी.) (मावली)– उदयपुर–16 करोड रूपये । मेजर डिस्ट्रीक्ट रोड सुदृढीकरण के तहत कोटडा क्षेत्र में (11 किमी.) सडक का सुदृढीकरण । 7०करोड रूपये की लागत से भीण्डर से पाणुन्दफिला, भमरासिया से कुराबड एमडीआर सडक का पुनर्निमाण व चौडाईकरण (35 किमी.) (वल्लभनगर) ,उदयपुर में बलिचा तिराहे पर फोरलेन फ्लाई ओवर का निर्माण कार्य– 50 करोड रूपये , रामगिरी पहाडी गांव, उदयपुर को ऑक्सीजन हब बनाते हुए पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए डीपीआर– 15 करोड रूपये , पानेरियों की मादडी आवासीय योजना, उदयपुर में 200 फ्लैट्स की योजना – 20 करोड रूपये , कोटडा झाडोल में रोडवेज बस स्टैण्ड संबंधित कार्य , सीवर लाइनों के अंदर सीसीटीवी के द्वारा कंडीशन एसेसमेंट करवाकर क्षतिग्रस्त भाग को बिना सडक की खुदाई करे ट्रेंचलेस मैथ्ड से बदलने का कार्य किया जाएगा। नवरत्न कॉलोनी, उदयपुर में सीवरेज लाइन व कनेक्शन का कार्य। उदयपुर शहर व आसपास के कस्बों में पर्यटन, हैरिटेज, कमांड कंट्रोल सेंटर व बाड प्रबंधन संबंधी कार्य, नाइट टूरिज्म को बढावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन, उदयपुर के धार्मिक स्थलों के जीर्णोद्धार व विकास कार्य– 57 करोड, उदयपुर में हॉप ऑन, हॉप ऑफ बस सेवा कानोड में राजकीय महाविद्यालय , उदयपुर में वैदिक गुरूकुल एवं वैदिक पर्यटन केन्द्रों की स्थापना । उदयपुर संभाग में पैरा स्पोर्ट्स के लिए स्पेशल स्पोर्ट्स कॉम्प्लैक्स ,उदयपुर संभाग में स्पोर्ट्स स्कूल/कॉम्प्लैक्स संबंधी कार्य, उदयपुर में लेक्रोज एकेडमी की स्थापना, गोगून्दा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र उप जिला चिकित्सालय में क्रमोन्नत, उदयपुर मेडिकल कॉलेज में 120 बैड क्षमता के स्पाइनल इंजरी सेंटर की क्षमता वृद्धि। उदयपुर में खुला बंदी शिविर (पेट्रोल पम्प)। माही, जाखम, मंडूर नदी पर एनिकट निर्माण/मरम्मत कार्य, खरताना बांध (मावली) नहरों का निर्माण व मरम्मत कार्य, उदयपुर में नवीन दुग्ध संयंत्र बनेगा उदयपुर में नवीन बाइपास प्रोटीन पशु आहार संयंत्र स्थापित होगा, अमरख महादेव–उदयपुर क्षेत्र में लेपर्ड कंजर्वेशन रिजर्व बनेगा।

तीन माह से पौषाहार की बकाया राशि की मांग

डूंगरपुर। राजस्थान शिक्षक संघ राष्ट्रीय के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. ऋषिन चौबीसा, देवीलाल पाटीदार, प्रवीण जैन, जिलाध्यक्ष बलवंत बामणिया, जिला मंत्री दिलीपसिंह चौहान एवं जिला उपाध्यक्ष राजेन्द्रसिंह चौहान सहित पदाधिकारियों ने मिड–डे–मील आयुक्त के नाम संयुक्त निदेशक को पत्र प्रेषित कर राष्ट्रीय पौषाहार कार्यत्र्रम के त्र्रियान्विति हेतु तीन माह की बकाया राशि शीघ्र जारी कराने की मांग की है। संगठन की ओर से प्रेषित पत्र में बताया कि जिलें सहित प्रदेशभर के सरकारी स्कूलों में चल रही विद्यार्थियों की पोषाहार की थाली उधारी की भेंट चढ गई है। स्कूलों को न तो समय पर सामग्री की राशि मिल रही है और न ही समय पर कुक कम हेल्परों को मानदेय मिल रहा है। नवम्बर से जनवरी तक कुल तीन माह से कुकिंग कन्वर्जन राशि बकाया है, जिससे संस्था प्रधानों एवं मिड डे मील प्रभारियों को विद्यालयों में पोषाहार पकाने के लिए आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड रहा है। समय पर पैसा नहीं मिलने से दुकानदार भी उधारी के लिए तकाजा कर रहें है। वहीं दूसरी ओर जिलें के 3 हजार 831 कुक कम हेल्पर का मानदेय भी पिछले तीन माह से बकाया है।समय पर मानदेय नहीं मिलने से अल्प मानदेय पर कार्य कर रहे कुक कम हेल्पर आर्थिक तंगी झेल रहे है। समय पर राशि जमा नहीं होने से भोजन की गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है। पौषाहार कार्यत्र्रम के सफल त्र्रियान्वयन हेतु स्कूलों को तीन माह की बकाया राशि अविलम्ब जारी की जाए।

'प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण जरूरी'

उदयपुर, (कासं)। केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वाधान में आयोजित संवाद कार्यक्रम कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान : जल संचय जन भागीदारी केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी आर पाटील के आतिथ्य में स्थानीय होटल शौर्यगढ उदयपुर में बुधवार को आयोजित किया गया।संवाद कार्यक्रम में स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण राजस्थान सरकार के प्रदेश समन्वयक और नगर परिषद डूंगरपुर के पूर्व सभापति के के गुप्ता द्वारा जल संचय और जल संरक्षण के विषय पर अपना महत्वपूर्ण प्रेजेंटेशन दिया । उन्होंने कहा कि हमारे आने वाली पीढी के लिए उपलब्ध जल स्त्रोत और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना बहुत आवश्यक है। हमारे जल स्त्रोतों में सबसे मुख्य रूप से जल वर्षा ऋतु के समय आता है। किसी गांव अथवा शहर के पास से प्रवाहित होने वाली नदी में ज्यादा जल वर्ष के समय ही आता है और यदि कहीं पर तालाब अथवा प्राचीन बावडी बनी हुई है वहां जलभराव भी वर्षा जल से ही होता है।

भुगतान रसीद पुस्तिका के खो जाने की सार्वजनिक सूचना

यह आम जनता के ध्यान में लाया जाता है कि एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड से संबंधित अनुलग्नक ए में उल्लिखित मूल भुगतान रसीदें 02.12.2024 को भीम, आरजे से खो गई हैं। गुम हो गई है और उनका पता नहीं लगाया जा सकता है। यदि किसी व्यक्ति / व्यक्तियों को यह रसीद मिलती है तो उनसे अनुरोध है कि वे तुरंत नीचे दिए गए पते पर बैंक को रसीदें लौटा दें। इसके अलावा, कोई भी व्यक्ति इन रसीदों से कोई लेन-देन नहीं करेगा और फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड किसी भी तरह से इन रसीदों के किसी भी तरह के दुरूपयोग के लिए जिम्मेदार नहीं होगा।

पता-एयू स्माल फाइनेंस बैंक लि., ग्राउन्ड फ्लोर, आशापुरा मोड, परतापुर-बांसवाडा, रोड, आर.जे., पिन-327022

अनुलग्नक-ए			
क्रम सं.	खोने की तिथी	रसीद बुक नं.	रसीद नम्बर
1	17 फरवरी 2025	50983	1274555 से 1274575

प्रारूप-10 (नियम-6 (7) देखिए)

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी एवं आयुक्त नगर पालिका, नाथद्वारा

सं./न.पा.नाथ./90 क/25/17250 **लोक-सूचना** दिनांक :19/02/2025

श्री प्रमोद कुमार गुर्जर पुत्र श्री रमणलाल गुर्जर निवासी पीपली नीचे नाथूवास चौराहा, नाथूवास , नाथद्वारा जिला–राजसमन्द द्वारा इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का गैर कृषिक प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात–

जिले सहित तहसील का नाम	ग्राम का नाम	खसरा संख्या	क्षेत्र
नाथद्वारा जिला–राजसमन्द	नाथद्वारा	4430/ 3784	कुल रकबा 0.0539 हैक्टर

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू–राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90–क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर–भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर–भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जावेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज दिनांक 19/02/2025 को जारी की गयी।

प्राधिकृत अधिकारी एवं आयुक्त, नगर पालिका नाथद्वारा

प्रारूप-10 (नियम-6 (7) देखिए)

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी एवं आयुक्त नगर परिषद, राजसमन्द

सं. 7945 **लोक-सूचना** दिनांक :19/02/2025

जेनबअ पिता श्री अब्बास अली बोहरा निवासी 32 नजम मार्ग नोहरावाडी उदयपुर तहसील गिर्वा जिला उदयपुर द्वारा इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का गैर कृषि प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात–

क्र.स.	जिले सहित तहसील का नाम	ग्राम का नाम	खसरा संख्या	क्षेत्र
1	राजसमन्द	धोईन्दा	3210 3225	रकबा 00–06–00 बिस्वा रकबा 00–16–00 बिस्वा

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू–राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90–क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर–भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर–भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जावेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज दिनांक .... को जारी की गयी।

प्राधिकृत अधिकारी एवं आयुक्त, नगर परिषद, राजसमन्द

शिवाजी महाराज ने जल संरक्षण पर जो कार्य किया था वह आज भी प्रेरणा का स्त्रोत है : पाटिल

उदयपुर में आयोजित जल मंत्रियों के द्वितीय अखिल भारतीय सम्मेलन का समापन

उदयपुर। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी आर पाटिल ने राष्ट्रीय जल मिशन जल शक्ति मंत्रालय द्वारा 18-19 फरवरी तक उदयपुर में आयोजित जल मंत्रियों के द्वितीय अखिल भारतीय सम्मेलन के समापन समारोह में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि सबसे पहले मैं छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती पर उन्हें नमन करता हूँ। शिवाजी महाराज ने जल प्रबंधन और किलों में जल संरक्षण पर जो विशेष कार्य किया था वह आज भी हमारी जल नीति के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है।

उन्होंने कहा कि आज भारत में लोगों के लिए स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध होना एक आदत बन गई है। यह परिवर्तन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और जलशक्ति मंत्रालय के सतत प्रयासों का परिणाम है। हमने जल संरक्षण और प्रबंधन को एक नई दिशा दी है और इस दिशा में हमें और अधिक प्रतिबद्धता के साथ कार्य करना होगा। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी आर पाटिल ने कहा कि इस सम्मेलन के दौरान मुझे विभिन्न राज्यों और विशेषज्ञों से महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हुए हैं। हमने न केवल समस्याओं पर चर्चा की, बल्कि उनके समाधान के लिए सामूहिक प्रयासों पर भी बल दिया। ऐसे मंच ज्ञान साझा करने और समस्याओं के व्यावहारिक समाधान खोजने के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं। कुछ समय पहले मुझे दावोस में वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम में जाने का मौक़ा मिला जहाँ पर प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत में जल के क्षेत्र में हो रहे उल्लेखनीय कार्यों की चर्चा हुई। दावोस में रिवर सिटी एलायंस पर भी चर्चा हुई जिसमें कई देशों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया, यह एक उदाहरण है, जहाँ विभिन्न देशों ने अपने अनुभव साझा किए और नवाचार के नए रास्ते खोले। केंद्रीय मंत्री सी आर पाटिल ने कहा कि हमने नमामि गंगे अभियान के तहत गंगा को स्वच्छ करने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। अब, लोगों की अपेक्षायें बढ़ गई हैं कि हम अन्य नदियों की सफाई के लिए भी इसी प्रतिबद्धता से कार्य करें। राज्यों को इस दिशा में मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। पुनः उपयोगित जल का महत्व बढ़ रहा है। सूरत में हमने उद्योगों को टर्शियरी ट्रीटेड पानी प्रदान किया, जिससे यह एक महत्वपूर्ण राजस्व स्त्रोत बन गया। हमें इस योजना से 600 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त होने की उम्मीद है। इसी तरह, गंगा पर स्थित तीन बिजली संयंत्रों में पहले से ही टर्शियरी ट्रीटेड जल का उपयोग हो रहा है, और अब 20 और संयंत्रों में इसे अपनाने की योजना है। इससे जल संसाधनों के सतत उपयोग को बढ़ावा मिलेगा।

उन्होंने कहा कि सभी राज्यों को उनके प्रस्तुतिकरणों के लिए धन्यवाद देता हूँ। इस सम्मेलन में तीन मुख्यमंत्रियों ने भाग लिया और राजस्थान ने मेजबान राज्य के रूप में शानदार भूमिका निभाई। मैं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का इस सफल आयोजन के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। यह सम्मेलन तभी सार्थक सिद्ध होगा जब हम यहां प्राप्त ज्ञान और अनुभव को व्यावहारिक कार्यों में बदलेंगे।

अगले सम्मेलन से पहले, हमें ठोस कार्य योजनाओं पर अमल करना होगा, जिससे हम जल सुरक्षित भारत के संकल्प को और आगे बढ़ा सकें। सभी प्रतिभागियों, आयोजकों और सहयोगियों का इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए धन्यवाद! आइए, हम एकजुट होकर जल संरक्षण और जल प्रबंधन के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ें।

सम्मेलन के समापन कार्यक्रम में केंद्रीय जलशक्ति मंत्री सीआर पाटिल सहित कई अतिथि मौजूद रहे।

- **केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी आर पाटिल ने सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का आभार जताया**

विचाराधीन आरोपी की जमानत देना महंगा पड़ा

श्रीगंगानगर, (निसं)। मादक पदार्थ तस्करी के मामले में विचाराधीन आरोपी की जमानत देना एक व्यक्ति को महंगा पड़ गया है। आरोपी के न्यायालय में पेश नहीं होने पर जमानती पर 50 हजार रुपए जुर्माना लगाया गया था। यह जुर्माना जमानती द्वारा जमा नहीं करवाने पर न्यायालय ने सख्त रुख अपनाते हुए जमानती को अदालत से सीधे एक माह के लिए जेल की सजा काटने को भेज दिया।

यह मामला एनडीपीएस कोर्ट में सामने आया। न्यायालय के न्यायाधीश अजयकुमार भोजक ने जमानती चक 5 डी बड़ी दुल्लापुर केरी निवासी रामसिंह पुत्र मंशा सिंह को एक माह के साधारण कारावास की सजा काटने को जेल भेजा है। रामसिंह ने मादक पदार्थ तस्करी के मामले में आरोपी बाबूराम उर्फ हनुमान निवासी शोभाल, तहसील चोहटन जिला बाड़मेर की न्यायालय में जमानत दी थी। न्यायालय के लोक अभियोजक विजेंद्र घिंटाला ने बताया कि मादक पदार्थ तस्करी का आरोपी बाबूराम अदालत से फरार है।

एनडीपीएस मामलों की विशेष कोर्ट के न्यायाधीश अजय कुमार भोजक ने मंगलवार को पुरानी आबादी थाने की एफआईआर नंबर 86/2022 की सुनवाई करते हुए आरोपी को कोर्ट में प्रस्तुत नहीं करने वाले जमानती को एक माह साधारण कारावास से सजा भुगतने के लिए जेल भेज दिया। कोर्ट द्वारा आरोपी की जमानत देने वाले को एक माह की सजा सुनाए जाने की जानकारी सार्वजनिक होते ही यह मामला कोर्ट परिसर और न्यायालय कार्मिकों में चर्चा का विषय बन गया। पुरानी आबादी पुलिस ने बाबूराम को 2022 में 307 ग्राम मादक पदार्थ अफीम की तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया था। वर्तमान में आरोपी जमानत मिलने के बाद अदालत से फरार हो गया। न्यायालय ने उसे मफरूर घोषित कर रखा है।

एसपीपी विजेंद्र घिंटाला ने बताया कि आपराधिक घटना को अंजाम देने वाले आरोपियों द्वारा कोर्ट से जमानत मिलने के बाद तारीख-पेशी पर नहीं आने के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। कई मामलों में वर्षों से आरोपी कोर्ट में पेश नहीं हो रहे। लगातार इस तरह के बढ़ रहे मामलों को देखते हुए कोर्ट ने सख्ती बरतना शुरू कर दिया है। ऐसे ही एक मामले में एनडीपीएस कोर्ट के न्यायाधीश अजय कुमार भोजक ने पुरानी आबादी थाना द्वारा पेश प्रकरण में फरार घोषित आरोपी को कोर्ट में पेश नहीं करने पर उसकी जमानत देने वाले के खिलाफ कार्रवाई की है।

आठ माह की बच्ची से रिश्तेदार ने दुष्कर्म किया, आरोपी गिरफ्तार

- **बच्ची का अस्पताल में इलाज चल रहा है, बताया जाता है कि बच्ची का ऑपरेशन किया है**
- **आठ माह की बच्ची के साथ हुई अमानवीय अपराध की घटना पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने लिया स्वतः संज्ञान**

जोधपुर, (कासं)। शहर में मानवता को शर्मसार करने का मामला एक बार फिर सामने आया है। 40 साल के एक व्यक्ति ने आठ माह की बच्ची से दुष्कर्म किया है। हालांकि आरोपी पुलिस की गिरफ्त में है। वहीं बच्ची का अस्पताल में इलाज चल रहा है। बताया जाता है कि उसका ऑपरेशन किया गया है।

इधर जिला कलेक्टर गौरव अग्रवाल अस्पताल पहुंचे और बच्ची के परिजन से बात की। साथ ही उन्होंने अस्पताल में सुविधाओं का जायजा भी लिया। दुष्कर्म का मामला विवेक विहार थाना इलाके का मंगलवार शाम चार बजे का है। देर रात बच्ची का ऑपरेशन किया गया। मासूम की हालत स्थिर बताई जा रही है। थानाधिकारी दिलीप खदाव ने बताया कि युवक ने अपने रिश्तेदार को घर में मरम्मत के काम के लिए बुलाया था। रिश्तेदार शराब लेकर घर पहुंचा तो दोनों ने मिलकर पहले शराब पी। तब युवक की पत्नी ने भी शराब पी ली। थोड़ देर बाद पति-पत्नी सो गए। उनके पास ही आठ माह की बच्ची सो रही थी। आरोपी ने इस मासूम से दुष्कर्म किया और फरार हो गया। बेटी के रोने की आवाज सुनकर महिला जागी तो मासूम को लहूलुहान देखकर होश उड़ गए। उसने पति को जगाया और बेटी को अस्पताल ले गए। पुलिस ने मामले की जानकारी मिलते ही आरोपी के मोबाइल की लोकेशन निकाली। रात नौ बजे उसे हिरासत में ले लिया। मासूम का पिता और रिश्तेदार मजदूर है। सुबह जिला कलेक्टर गौरव अग्रवाल अस्पताल पहुंचे और बच्ची के परिजन से बात की। साथ ही उन्होंने अस्पताल में सुविधाओं का भी जायजा लिया है। अस्पताल अधीक्षक मोहन मकवाना भी साथ रहे।

वहीं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जोधपुर महानगर के सचिव पुखराज गहलोत ने आठ माह की बच्ची के साथ हुए अमानवीय अपराध की घटना पर स्वतः संज्ञान लेते हुए तत्काल आवश्यक कदम उठाए हैं। बुधवार को सचिव चिकित्सालय, जोधपुर पहुंचे तथा पीड़िता बच्ची के उपचार एवं स्वास्थ्य की वर्तमान स्थिति का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने पीड़िता के परिजनों से मुलाकात कर उनकी आवश्यकताओं और चिंताओं को सुना तथा बच्ची का उपचार कर रहे चिकित्सकों से विस्तृत जानकारी प्राप्त की। सचिव गहलोत ने निर्देश दिए कि बच्ची को संपूर्ण रूप से राज्य सरकार के खर्चे पर निःशुल्क एवं उचित उपचार उपलब्ध कराया जाए। साथ ही, उन्होंने संबंधित थाने से प्रकरण की प्रगति रिपोर्ट प्राप्त कर कानूनी प्रक्रिया में तेजी लाने के निर्देश दिए। इसके अतिरिक्त, पीड़िता के परिवार को राजस्थान पीड़ित प्रतिकर योजना के तहत आर्थिक सहायता प्रदान कराने के लिए आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करते हुए कहा गया है कि जिला प्रशासन एवं विधिक सेवा प्राधिकरण पीड़िता के परिवार को हरसंभव सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

बीकानेर फील्ड-फायरिंग रेंज में गोली लगने से जवान की मौत

- **महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में अभ्यास के दौरान करीब 2 महीने में 5 जवानों की मौत हो चुकी है।**
- **सूरतगढ़ के आर्मी हॉस्पिटल में इलाज चल रहा था**

बीकानेर, (निसं)। यहां महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में प्रैक्टिस के दौरान गोली लगने से घायल सेना के जवान की मौत हो गई। निशानेबाजी का अभ्यास कर रहे थे। इस दौरान हादसा हो गया। जवान का सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) के आर्मी हॉस्पिटल में इलाज चल रहा था। जवान ने दम तोड़ दिया।

पारस मोहन वेंकटेश (26) 16 मध्यम तोपखाना पठानकोट (पंजाब) में सिपाही के पद पर तैनात थे। वह आंध्र प्रदेश में पिट्टावानपलम के रहने वाले थे। महाजन पुलिस के मुताबिक, जवान पारस मोहन वेंकटेश महाजन फील्ड फायरिंग रेंज के पूर्वी कैंप में अभ्यास के लिए आए थे। वे 28 जनवरी को निशानेबाजी का अभ्यास कर रहे थे। इस दौरान एक गोली उनके सिर में लगी। उन्हें तुरंत सूरतगढ़ के आर्मी अस्पताल पहुंचाया गया। 22 दिन से उनका इलाज चल रहा था। डॉक्टरों ने उनका ऑपरेशन भी किया था, लेकिन जान नहीं बच पाई। परिजनों के पहुंचने पर महाजन पुलिस की निगरानी में पोस्टमॉर्टम करवाया जाएगा। बीकानेर में महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में प्रैक्टिस के दौरान ब्लास्ट में घायल सेना के जवान की भी मौत हो गई। जवान को गंभीर हालत में सूरतगढ़ के मिलिट्री हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था। हालत में सुधार नहीं होने पर उन्हें चंडीगढ़ के मिलिट्री हॉस्पिटल रेफर किया गया था। महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में अभ्यास के दौरान करीब 2 महीने में 5 जवानों की मौत हो चुकी है।

नाबालिग का अपहरण कर शादी की कोशिश

हनुमानगढ़, (निसं)। एक नाबालिग लड़की के अपहरण का मामला सामने आया है। पीड़िता की मां ने एक महिला समेत तीन लोगों के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है।

पीड़िता की मां ने बताया कि उसकी 13 साल की बेटी उसकी मां के साथ रहती थी। रिहायशत अली, हजूरा और असकरा घर में घुस आए। आरोपियों ने पीड़िता की मां, दादी और नानी के साथ मारपीट की। इसके बाद नाबालिग लड़की को जबरदस्ती उठा ले गए। पीड़िता की मां के मुताबिक, आरोपी उसकी बेटी की शादी हजूरा के भाई शामा से कराना चाहते हैं। आरोपी लड़की को बस से किसी अज्ञात जगह ले गए हैं।

कार्यालय नगर निगम, कोटा उत्तर (राज0)

क्रमांकः–ननिको(उ.)/जनस्वा0/2025/1273–1285 दिनांक :– 17.02.2025

–:: संशोधित निविदा सूचना ::–

इस कार्यालय द्वारा जारी नगर निगम कोटा उत्तर क्षेत्र में interested parties for various activities at Landfill site कार्य की ई–निविदा सूचना क्रमांक ननिको(उ)/जनस्वा0/2025/1191–1202 दिनांक 29.01.2025 को निविदा जारी की गई थी। उक्त निविदा की तिथि को बढाते हुए डाउनलोड व अपलोड करने की तिथि 20.02.2025 सायः 06:00 बजे तक बढाई जाती है एवं तकनिकी बिड खोलने की तिथि 21.02.2025 दोपहर 12:00 बजे तथा वित्तीय बिड तकनिकी परीक्षण पश्चात खोली जावेगी।

शेष यथावत रहेगा।

अति0 आयुक्त
राज.संवाद/सी/24/11947 नगर निगम कोटा उत्तर

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER PWD
ELECTRICAL DIVISION BHARATPUR
S.No. Notice Inviting Bid Date -
(NIT No 14/2024-25)

Bids for 01 Electrical work at Bharatpur are invited from interested bidders up to 06.00 PM of 01.03.2025 (Saturday) Other particulars of bid may be visited on the procurement portalhttp://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rj.nic.in) of the Rajasthan State. The approximate value of the procurement is Rs 206.00 Lacs.

S.No.	NIB No.	UBN No.
1	PWD2425A4120	PWD2425WSOB14810

(Hemchand Yadav)
Executive Engineer
DIPR/C/1848/2025 PWD Elect. Dn Bharatpur

OFFICE OF THE SUPERINTENDENT SUPER SPECIALITY HOSPITAL, BIKANER (Name of the procuring Entity and Department)
क्रमांक-सामान्य/निविदा/एस.एस.एच./2024-25/476 दिनांक-10.02.2025

NOTICE INVITING BID

Bids for Job basis 01 Cleaning & Sweeping Work, 02 Security Guard Service, 03 Man power (Name(s) of subject matter(s) of Procurement) are invited from interested bidders up to 05:00PM (time) 20.02.2025 (date) on the basis of Two envelop system. Other Particulars of the bid may be visited the procurement portal on (http://eproc.rajasthan.gov.in or http://sppp.raj.nic.in) of the state website.
UBN: MCB2425SLRC00175, UBN: MCB2425SLRC00176, UBN: MCB2425SLRC00177

SUPERINTENDENT
SUPER SPECIALITY HOSPITAL,
DIPR/C/1959/2025 SPMC, BIKANER

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता
जन स्वा.अभि. विभाग खण्ड सॉचौर
एन.एच. 68, PHED Campus, सॉचौर (जालोर)
Te.Pho.No. 02979-283624, E-mail : eephedscr@gmail.com
क्रमांकः अ.अ./ जन स्वा./ सॉं/निविदा/2024-25/1682 दिनांकः- 10/2/25

ई-निविदा सुचना संख्या- 22/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से खण्ड सॉचौर के अधीन विभिन्न कार्य कराने हेतु लोक निर्माण विभाग में पंजीकृत ठेकेदारों से ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया में ऑन लाईन निविदा आमंत्रित की जाती है जिसका विवरण निम्नानुसार हैः-

कार्यालय का नाम व स्थान	अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वा. अभि. विभाग खण्ड सांचौर
निविदा का कार्य	Annual Rate Contract For Transportation Of Water. (Sanchore And Chitalwana)
निविदा की कुल लागत (राशि लाखों में)	कुल निविदा 17 रु. 250.00 लाख
निविदा प्रपत्र वेबसाईड पर उपलब्ध एवं ऑन लाईन सबमिट की दिनांक	10.02.2025 से 27.02.2025 को 13:00 बजे तक
निविदाएँ खोलने की तिथी व समय	28.02.2025 को 11:00 बजे से
UBN No.	PHE2425WSRC09434, PHE2425WSRC09453, PHE2425WSRC09455, PHE2425WSRL09457, PHE2425WSRC09460, PHE2425WSRC09461 PHE2425WSRC09462, PHE2425WSRC09463, PHE2425WSRC09464, PHE2425WSRC09465, PHE2425WSRC09466, PHE2425WSRC09467 PHE2425WS RC09468, PHE2425WSRC09469, PHEZ425WSRC09470, PHE2425WSRC03471, PHE2425WSRC09472

निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in एवं http://dipr.rajasthan.gov.in, http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा एवं भरा जा सकता है। शुद्धि पत्र केवल वेबसाईड पर ही अपलोड किये जायेगे।

(पृथ्वीसिंह) अधिशाषी अभियंता
DIPR/C/1902/2025 जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग, खण्ड सॉचौर

कार्यालय नगर निगम्, भीलवाड़ा (राज0)

क्रमांकः न.नि.भी./राजस्व/2025/16830–33 दिनांकः– 18/02/2025

–: अल्पकालीन एकल स्त्रोत निविदा सूचना :–

नगर निगम भीलवाडा द्वारा महाशिवरात्रि के अवसर पर हरणी महादेव मेले का आयोजन दिनांक 26.02.2025 से 28.02.2025 तक हरणी महादेव स्थल भीलवाड़ा में किया जाना प्रस्तावित है। इस मेले मे रात्रि में दिनांक 27.02.2025 को श्री गोकुल शर्मा एण्ड पार्टी द्वारा सांस्कृतिक, कार्यक्रम का आयोजन किया जाना प्रस्तावित हैं।

अतः इस प्रकार के कार्यकम के आयोजन करने वाले विभिन्न आयोजक फर्मो को सूचित किया जाता है, कि अपने प्रदर्शन के अनुभव प्रमाण पत्र, कलाकारो की संख्या, पारिश्रमिक राशि आदि के साथ सम्पूर्ण विवरण सहित लिखित प्रस्ताव स्वंय उपस्थित होकर प्रस्ताव जारी दिनांक से दिनांक 24.02.2025 को प्रातः 11.00 बजे तक आवश्यक रूप से महापौर महादेय/आयुक्त महोदय, नगर निगम भीलवाडा के समक्ष प्रस्तुत कर देवें। चयन से पूर्व कार्यकम की गुणवता एंव प्रदर्शन के अनुभव प्रमाण पत्र एंव पारिश्रमिक राशि पर आवश्यक रूप से विचार किया जावेगा। आयोजक को कलाकारो के ट्रांसपोर्टेशन, ठहरने, भोजन/अल्पाहार व कार्यक्रम से पूर्व स्टेज तक कलाकारो को लाने व ले–जाने की व्यवस्था एंव स्टेज पर अपने गाने–बजाने का साउण्ड व्यवस्था सहित दर प्रस्तुत करनी होगी। नगर निगम भीलवाडा द्वारा मंच उपलब्ध करवा दिया जायेगा। निगम स्वीकृत दर के अलावा किसी प्रकार का भुगतान नही करेगी। सभी प्रकार के करो का भुगतान स्वंय निविदादाता को वहन करना होगा। निगम द्वारा आयकर व **जीएसटी टीडीएस** कटौती की जायेगी। उक्त प्रस्ताव सूचना **raj.sppp portal** पर भी देखी जा सकती है। आयोजको को आवेदन के साथ अपनी संस्था का आयकर विभाग द्वारा जारी पेन कार्ड व जीएसटी रजिस्ट्रेशन की प्रति तथा बैंक खाता नंबर प्रस्तुत करना होगा। साथ ही जिस संस्था का अनुबंध किया जायेगा। उस संस्था का बैंक खाता नंबर होना अनिवार्य है।

नोटः– किसी भी प्रस्ताव को बिना कारण बताये स्वीकृत एवं अस्वीकृत करने का अधिकार महापौर महोदय/आयुक्त महोदय, नगर निगम भीलवाड़ा को होगा साथ ही किसी प्रकार का विवाद होने पर न्यायिक क्षेत्र भीलवाड़ा होगा।

NIB code :-DLB2425A5668
UBN code :-DLB2425WSOB17473

आयुक्त
राज.संवाद/सी/24/11946 नगर निगम भीलवाड़ा

ट्रैक्टर-ट्रॉली चालक की मौत पर बवाल

टोंक, (निसं)। देवली उपखण्ड में ट्रैक्टर-ट्रॉली से युवक की मौत पर उस समय बवाल हो गया, जब क्षेत्र के ग्रामीणों ने शव रखकर प्रदर्शन किया। पुलिस समझाइश के लिए पहुंची तो भीड़ ने पुलिस वाहनों पर पथराव कर देवली डीएसपी की गाड़ी सहित चार अन्य वाहनों पर पथराव किया, जिससे पुलिस को हवाई फायरिंग करना पड़ी। उसी दौरान पूर्व राजेन्द्र गुढा भी लोगों के समर्थन में पहुंचे।

ग्रामीणों का आरोप है कि ट्रैक्टर चालक विमल मीणा पुत्र मोहनलाल मीणा जो मंगलवार की शाम को अपनी ट्रैक्टर-ट्रॉली में मिट्टी भरकर बालागढ़ स्थित घर आ रहा था, कि रास्ते में नगरफोर्ट थाने की पुलिस ने ट्रैक्टर-ट्रॉली को यह कहकर रूकवा किया वह तेज आवाज में म्यूजिक बजा रहा था। इस पर पुलिस ने उस अपनी गाड़ी में बिठा लिया तथा उसकी ट्रैक्टर-ट्रॉली को एक पुलिसकर्मी चलाकर ले जाने लगा। जब चालक अपनी ट्रैक्टर-ट्रॉली को रूकवा रहा था, तभी पुलिसकर्मी ने ट्रैक्टर-ट्रॉली उसके ऊपर चढ़ा दी, जिससे उसकी मौत हो गई। ग्रामीणों की मांग है कि हत्यारे को गिरफ्तार करें। वहीं राजेन्द्र गुढा ने कहा कि जब एक थप्पड़ मारने पर नरेश मीण को तीन माह की सजा पर डाल सकते हैं, तो ट्रैक्टर-ट्रॉली चढ़ाने वाले हत्यारे पुलिसकर्मी को पहले गिरफ्तार किया जाये। टोंक पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान ने बताया कि घटना में दो आरोपी बनाये गये हैं तथा मृतक के परिवार को अनुदान के रूप में 30 लाख रूपये राशि का चेक दिया गया है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर मोर्चरी में रखवाया है, जल्दी ही मामले में कार्यवाही की जायेगी।

जिम में 270 किलो की रॉड गिरने से महिला पावर लिफ्टर की गर्दन टूटी, मौत

- **पूरे हादसे का वीडियो सामने आया, वीडियो में युवती वेटलिफ्टिंग करती नजर आ रही है**
- **ऐश्वर्य परिचित की शादी में परिवार के साथ हनुमानगढ़ गए थे, लेकिन यष्टिका प्रैक्टिस की नियमितता बनाए रखने के लिए नहीं गई**

बीकानेर, (निसं)। महिला पावर लिफ्टर यष्टिका आचार्य की जिम में प्रैक्टिस करते हुए मौत हो गई। गोल्ड मेडलिस्ट प्लेयर की गर्दन 270 किलो की रॉड गिरने से टूट गई। हादसे के तुरंत बाद उन्हें जिम में ही फर्स्ट ऐड देने की भी कोशिश की गई। इसके बाद उन्हें हॉस्पिटल ले जाया गया जहां उन्हें डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। पूरे हादसे का वीडियो भी सामने आया है। वीडियो में युवती वेटलिफ्टिंग करती नजर आ रही है। पीछे ट्रेनर भी खड़ा है। इसी दौरान वेट उठाते हुए अचानक वे गिर पड़ी और स्क्वॉट्स रोड गर्दन पर आ गिरी। हादसा नया शहर थाना इलाके की जिम का है।

जानकारी के अनुसार आचार्य चौक की रहने वाली यष्टिका डेली की तरह कोच की मौजूदगी में प्रैक्टिस कर रही थीं। अचानक ही वेट उनकी गर्दन पर गिर गया। वहां मौजूद दूसरे प्लेयर्स ने वेट को उनके ऊपर से हटाया। कुछ समय पहले ही यष्टिका ने गोवा में आयोजित 33वीं नेशनल बेंच प्रेस चैंपियनशिप में इक्विप्ड कैटेगरी में गोल्ड और क्लासिक कैटेगरी में सिल्वर मेडल जीता था। यष्टिका के पिता ऐश्वर्य आचार्य कॉन्ट्रैक्टर हैं। ऐश्वर्य आचार्य के 3 बेटियां हैं। यष्टिका के अलावा एक और बेटी पावर लिफ्टिंग करती है। वह इन दिनों स्टेट टूर्नामेंट के लिए पावर लिफ्टिंग कर रही है। ऐश्वर्य परिचित की शादी में परिवार के साथ हनुमानगढ़ गए थे, लेकिन यष्टिका प्रैक्टिस की नियमितता बनाए रखने के लिए नहीं गई। नया शहर थानाधिकारी विक्रम तिवाड़ी ने बताया. परिजनों ने मामला दर्ज नहीं करवाया है। पुलिस ने पोस्टमॉर्टम करवाया है, लेकिन एफआईआर नहीं हुई है। हालांकि पुलिस अपनी जांच कर रही है।

जब ट्रेनर यष्टिका को वेट लिफ्ट करवा रहा था। उसने पहले एक, दो तीन बोला। इसके बाद ही उसने वेट उठाया, लेकिन पूरा वेट उसकी गर्दन पर आ गया। यष्टिका इसे संभाल ही नहीं पाई। इसके बाद वो निढाल होकर गिर पड़ी। इसी दौरान ट्रेनर को भी सामान्य चोट आई। बीकानेर के नत्थूसर गेट पर बड़ा गणेश मंदिर के पास ही द पावर हेडक्टर जिम कुछ महीने पहले ही खुला था।

मुआवजे को लेकर दो दिन से चल रहा धरना सहमति के बाद समाप्त

- **रामदेवरा के एनएच 11 पर सोमवार को पोकरण फलसुंड बालोतरा सिवाना पेयजल योजना की पाइप लाइन लीकेज होकर फटने से करीब तीन दर्जन से ज्यादा घरों में पानी घुस गया था, जिससे ग्रामीणों को लाखों रुपए का नुकसान हुआ**

रामदेवरा, (कासं)। इंदिरा गांधी नहर की पाइप लाइन फटने से घरों को हुए नुकसान का मुआवजा दिलाने सहित ठोस कार्यवाही की मांग को लेकर रामदेवरा में पिछले दो दिन से लगातार हाइवे पर चल रहा धरना बुधवार को मौजीज लोगों और प्रशासन के बीच वार्ता से सहमति बनने पर समाप्त हो गया।

जानकारी के अनुसार रामदेवरा के एनएच 11 पर सोमवार को पोकरण फलसुंड बालोतरा सिवाना पेयजल योजना की पाइपलाइन लीकेज होकर फटने से करीब तीन दर्जन से ज्यादा घरों में पानी घुस गया था, जिससे ग्रामीणों को लाखों रुपए का नुकसान हुआ। इसके बाद पानी निकासी नहीं होने पर ग्रामीणों को सोमवार रात हाइवे की सड़क पर ही बिस्तर लगाकर रात गुजारनी पड़ी थी। नहरी विभाग की लापरवाही से नुकसान की भरपाई की मांग को लेकर ग्रामीण पिछले दो दिनों से लगातार हाईवे पर धरने पर बैठे थे। नहरी परियोजना के एक्शन तुषार ने भी सोमवार रात में ग्रामीणों से मुलाकात की लेकिन मुआवजा की मांग पर कोई बात नहीं बनी। नहरी विभाग पाइपलाइन की मरम्मत कर इसे हर हाल में चालू करना चाहता है, लेकिन ग्रामीणों के जब तक मुआवजा सहित ठोस कार्रवाई नहीं होने तक पाइप लाइन मरमत का कार्य शुरू नहीं करने देने की मांग पर अड़े रहे, जिसके चलते सोमवार रात से लेकर मंगलवार दिनभर और मंगलवार रातभर कई दौर की वार्ता प्रशासन और ग्रामीणों के बीच हुई। हर बार वार्ता विफल रहने से कोई सहमति नही बनी थी।

हाइवे पर शांति पूर्वक चल रहे धरने और टूटी पाइप लाइन को ठीक करने से ग्रामीणों के रोकने से मंगलवार रात से प्रशासन पर नहरी पानी की पाइप लाइन को ठीक करके पानी शुरू करवाने का दबाव बन गया था। बुधवार को हर हाल में पाइप लाइन की मरम्मत करने को लेकर नहरी विभाग ने वैल्डिंग करने का पूरा साजो सामान मौके पर कार्मिकों के साथ भेज दिया था। वहीं पुलिस का जाब्ता भी स्थिति को नियंत्रण करने के लिए पूरे दल और बल के साथ हाइवे पर सुबह से तैनात रहा। पुलिस जाब्ते के एसएचओ शंकरलाल खुद मौके पर उपस्थित रहे। बुधवार को धरने के दौरान सुबह उपखंड अधिकारी प्रभोत सिंह गिल, तहसीलदार विश्वप्रकाश चारण, रामदेवरा सरपंच समंदर सिंह तंवर, पूर्व विधायक सांग सिंह भाटी, व्यापार संघ अध्यक्ष आशु सिंह तंवर, भाजपा जिला उपाध्यक्ष नारायण सिंह तंवर, नहरी विभाग के अधिकारियों सहित अन्य मौजीज लोगों के बीच करीब दो घंटे की वार्ता के बाद भी सहमति नहीं बनी। दूसरे दौर की वार्ता दोपहर करीब एक बजे शुरू हुई जो करीब डेढ घंटे चली इसमें करीब 6 बिंदुओं पर सभी ने सहमति जताते हुए धरना समाप्त करने की बात कही। इसमें बताया गया कि नहरी पानी की पाइप लाइन के फटने से हुए नुकसान को लेकर जो भी एफआईआर दर्ज हुई है, उस पर पुलिस कार्यवाही करेगी। घरों का जो नुकसान हुआ है, उसका सर्वे एसडीएम पोकरण दारा दो दिन में करवा दिया जाएगा। जिला कलेक्टर जैसलमेर से वार्ता हो चुकी है। नुकसान की भरपाई निर्देश दिए है।पोकरण विधायक महंत प्रतापपुरी की संबधित मंत्री से वार्ता हो चुकी है। मुआवजा दिलाने की बात की गई। पुलिस विभाग द्वारा त्वरित कार्यवाही आश्वासन दिया गया है। वहीं पीड़ितो में 5 लाख की राशि का वितरण किया गया। इस दौरान पोकरण वृताधिकारी भवानी सिंह, पूर्व जिला प्रमुख अब्दुला फकीर, भाजपा नेता खीमाराम सुथार, अभय सिंह, नारायण सिंह, भंवर बिश्नोई, नरपत सुथार, सवाई सुथार, मोहन सुथार, रेवंताराम मेघवाल, मूलाराम कुमावत, भंवरलाल कुमावत आदि उपस्थित रहे।

सोना और चांदी लेकर फरार हुआ कारीगर

जोधपुर, (कासं)। शहर के मंडोर स्थित नयापुरा क्षेत्र में ज्वैलरी की दुकान में काम करने वाला कारीगर 20 ग्राम सोना और एक किलो चांदी लेकर चंपत हो गया। उसका फोन भी बंद आ रहा है। पीड़ित दुकानदार की तरफ से अब मंडोर थाने में चोरी की रिपोर्ट दी गई है। आरोपी की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की टीम को लगाया गया है।

कोलकाता के हुगली हाल गली नंबर 2, नयापुरा मंडोर निवासी पोलू बाकोली पुत्र बुलबुल बाकोली ने रिपोर्ट दी। इसके अनुसार वह नयापुरा में सोना पालिशिंग और ज्वैलरी का कार्य करता है। उसके पास में ग्राहकों का सोना चांदी इत्यादि आते है। दुकान पर कार्य करने के लिए उसने कोलकाता हुगली के ही पाहुला निवासी सतिन को काम रखा हुआ था। वह काफी समय से उसके पास में कार्य कर रहा है। मंगलवार को वह दुकान पर नहीं मिला। फिर उसके मोबाइल पर संपर्क करने का प्रयास किया गया तो वह स्वीच ऑफ मिला। दुकान में रखे सामान को चैक किया तो मालूम हुआ कि सतिन वहां से 20 ग्राम सोना व एक किलो चांदी लेकर चंपत हो गया है। सोना अनुमानित तौर पर 1.80 लाख और चांदी 92 हजार की है। मंडोर थाने के एएसआई धन्नाराम की तरफ से अब जांच की जा रही है। आरोपी की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की टीम को लगाया गया है।

स्कूली छात्रा ने पीया विषाक्त

मालपुरा, (निसं)। टोडारायसिंह उपखण्ड क्षेत्र के कांकलवाड गांव में बुधवार को एक स्कुली छात्रा ने विषाक्त का सेवन कर लिया। छात्रा की अचानक तबियत बिगड़ने पर शिक्षक तत्काल अचेतावस्था में छात्रा को उपजिला चिकित्सालय टोडारायसिंह लेकर पहुंचे, जहां प्राथमिक उपचार के बाद छात्रा को जिला अस्पताल के लिये रैफर कर दिया। छात्रा के अचेत होने की सूचना पर पहुंची थाना पुलिस ने परिजनों से जानकारी ली। थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। मामले के कारणों का पता छात्रा के होश में आने व बयानों के बाद ही खुलासा होगा।

1.25 लाख नौकरी देगी सरकार

उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने की राज्य बजट में घोषणा

जयपुर। राजस्थान की वित्त मंत्री दीया कुमारी ने भजनलाल सरकार दूसरा पूर्ण बजट पेश किया। करीब 138 मिनट के बजट भाषण में दीया कुमारी की सबसे बड़ी घोषणा युवाओं के लिए रही। सरकार अगले एक साल में सवा लाख भर्ती करेगी। प्राइवेट सेक्टर में भी डेढ़ लाख नौकरियां दिलवाई जाएंगी।

वित्त मंत्री ने बिजली के बिल में भी राहत देने की कोशिश की है, लेकिन 150 यूनिट फ्री वाली घोषणा में सरकार ने कंडीशन लगा दी है। सरकार 5 लाख नए घरेलू बिजली कनेक्शन और 5 हजार नए कृषि कनेक्शन भी देगी। 20 लाख घरों में नल कनेक्शन दिया जाएगा।

वहीं, जलदाय विभाग में 1050 नए टेक्निकल पदों पर भी भर्ती की जाएगी। राजस्थान में अब पत्नी के साथ खरीदी गई 50 लाख तक की प्रॉपर्टी सस्ती होगी। सरकार ने बजट में स्टांप ड्यूटी में आधा प्रतिशत छूट की घोषणा की है। 138 मिनट के भाषण में दीया कुमारी ने राजस्थान का 3 लाख 25 हजार करोड़ से ज्यादा का बजट पेश किया। उन्होंने कहा कि राजस्थान को 2030 तक 30 लाख करोड़ की इकोनॉमी बनाना है।

पत्नी के साथ संयुक्त नाम से खरीदी गई 50 लाख तक की संपत्ति सस्ती होगी। इसमें स्टाम्प ड्यूटी में आधा प्रतिशत की छूट दी जाएगी। इसके अलावा सरकार ने पीएम किसान सम्मान निधि की राशि बढ़ाई है। अब इस योजना में 70 लाख किसानों को सालाना 9 हजार रुपए मिलेंगे। बजट की घोषणाएं अप्रैल 2025 से लागू होंगी।

- ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल सुविधा हेतु 425 करोड़ रूपये
- मुख्यमंत्री जल जीवन मिशन (शहरी) प्रारम्भ,5 हजार 830 करोड़ रूपये से अधिक की लागत के कार्य
- आगामी वर्ष 6 हजार 400 मेगावाट से अधिक अतिरिक्त उत्पादन
- 5 हजार 700 मेगावाट ऊर्जा उत्पादन के कार्य
- 50 हजार नये कृषि कनेक्शन तथा 5 लाख डोमेस्टिक कनेक्शन
- 150 यूनिट बिजली प्रतिमाह निःशुल्क
- अल्प आय वर्ग परिवारों के लिए सामुदायिक स्थापित सड़क
- लगभग 21 हजार किलोमीटर नॉन पेचेबल सड़कों के कार्य 6 हजार करोड़ रूपये की लागत से
- प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में 10-10 करोड़ रूपये का राशि से नॉन पेचेबल सड़कों के कार्य
- 15 शहरों में रिंग रोड के निर्माण कार्य हेतु डीपीआर
- जयपुर, जोधपुर, कोटा एवं अजमेर की विभिन्न सेक्टर रोड के कार्य, लागत 575 करोड़ रुपये
- जयपुर में वीआरटीएस को हटाया जाना
- रोडवेज के लिए 500 नयी बसें, शहरी क्षेत्रों हेतु भी 500 बसें
- सीतापुरा ओद्योगिक क्षेत्रों से अम्बाबाड़ी एवं विघाधरनगर (टोडी मोड़ तक) जयपुर मेट्रो का कार्य हाथ में
- जगतपुरा एवं वैशली नगर क्षेत्रों में मैट्रो के विस्तार हेतु डीपीआर
- जयपुर एवं उदयपुर में आवासीय फ्लेट्स की योजना
- द्रव्यवती नदी का पर्यटन की दृष्टि से अपग्रेडेशन
- प्रदेश के समस्त शहरों में 50 हजार स्ट्रीट लाइट्स
- 500 पिंक टॉयलटॉ का निर्माण, 175 करोड़ रूपये की लागत
- भीलवाड़ा में टेक्सटाइल पार्क तथा सांगानेर-जयपुर में ब्लॉक प्रिंटिक जोन की स्थापना
- 18 नवीन औद्योगिक क्षेत्र, आधारभूत संरचना के लिए 150 करोड़ रूपये
- प्रथम बार आईआईएफए अवार्ड्स का आयोजन गुलाबी नगरी-जयपुर में
- पर्यटन विकास की गतिविधियों के लिए वर्ष 975 करोड़ रूपये
- प्रदेश में नाइट ट्यूरिज्म को बढ़ावा देने हेतु 100 करोड़ रूपये
- जयपुर अल्बर्ट हॉल म्यूजियम के उन्नयन हेतु 25 करोड़ रूपये
- त्रिवेणी संगम-बेणेश्वर धाम, रामेश्वर घाट एवं बीगोद सगम को विकसित करना
- बस्सी-जयपुर में सेक्स सोर्टड सीमन लैब
- 600 मंदिरों पर दीपावली, होली एवं रामनवमी जैसे प्रमुख त्योहारों पर विशेष साज-सज्जा व आरती के कार्यक्रमों का आयोजन
- वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना-6 हजार वरिष्ठाजन को हवाई मार्ग से यात्रा, 50 हजार एसी ट्रेन से तीर्थ यात्रा
- जयपुर, वर्ष 2027 स्थापना के 300 वर्ष गोविन्ददेवजी कला महोत्सव के आयोजन
- 29 हवाई पट्टियों को बड़े हवाई जहाज उतरने के योग्य बनाना
- एक लाख पच्चीस हजार पदों पर भर्तियाँ
- निजी क्षेत्र में एक लाख 50 हजार युवाओं के रोजगार अपलब्ध
- 50 हजार युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर रोजगार के अवसर
- 3 नवीन पॉलिटेक्निक महाविद्यालय
- 11 नवीन महाविद्यालय, 9 कन्या महाविद्यालय, 2 कृषि महाविद्यालय
- आमजन की निःशुल्क जाँच एवं दवा हेतु 3 हजार 500 करोड़ रुपये का कोष का मॉ कोष का गठन
- 70 वर्ष आयु से अधिक के वृद्धजनों को आवश्यकतानुसार घर पर ही निःशुल्क दवा
- 750 चिकित्सकों तथा एक हजार 500 पैरा मेडिकल कार्मिकों के पद सृजित
- नवीन आयुष नीति, गांवों को आयुष्मान आदर्श ग्राम घोषित कर 11 लाख रुपये प्रोत्साहन राशि
- अल्प आय वर्ग के व्यक्तियोंको देय पेंशन को बढ़ाकर एक हजार 250 रुपये प्रतिमाह
- बालिकाओं को 35 हजार स्कूटी वितरण
- मुख्यमंत्री अमृत आहार योजना-आंगनबाड़ी पर सप्ताह में 5 दिवस दूध, 200 करोड़ रुपये से अधिक का भार
- 8 नवीन साईबर पुलिस थाने
- समस्त मानदेय कर्मियों के मानदेय में आगामी वर्ष 10 प्रतिशत की वृद्धि
- सरकारी कर्मचारियों को एक अप्रैल, 2024 से बढ़ी हुई ग्रैचूटी का लाभ देय
- राम जल सेतु लिंक परियोजना को और वृहद् रूप देते हुए 9 हजार 300 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से विभिन्न कार्य
- गेहूँ के (एमएसपी) के ऊपर प्रति क्विंटल बोनस राशि को भी बढ़ाकर 150 रुपये
- गोशालाओं तथा नंदीशालाओं हेतु देय अनुदान को बढ़ाकर 50 रूपये प्रतिदिन
- 50 पशु चिकित्सा उपकेन्द्रों को पशु चिकित्सालयों में क्रमोन्नयन
- 100 पशु चिकित्सा अधिकारियों व एक हजार पशुधन निरीक्षकों की भर्ती

रोडवेज तीन माह में बनाए अपने कर्मचारियों के लिए तबादला नीति : हाईकोर्ट

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने आरएसआरटीसी को कहा है कि वह अपने विभिन्न कैडर के कर्मचारियों के लिए तीन माह में तबादला नीति बनाए। जिसमें कर्मचारियों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति, पोस्टिंग का इतिहास, पद पर रहने की अवधि और प्रशासनिक जरूरत आदि को ध्यान में रखा जाए। नीति बनने के बाद उसके प्रावधानों के अनुसार उचित तबादला आदेश जारी किए जाए। अदालत ने कहा कि इस अवधि में रोडवेज याचिकाकर्ता कर्मचारियों की ओर से दिए गए अभ्यावेदन तय करे और तब तक उनके तबादला आदेश स्थगित रहेंगे। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश सूर्यभान सिंह शेखावत व 14 अन्य याचिकाओं पर संयुक्त रूप से सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता आरडी मीणा और सुनील कुमार सिंगोदिया ने अदालत को बताया कि आरएसआरटीसी ने गत 15 जनवरी को करीब 240 अल्प वेतन भोगी चालक-परिचालकों का सुदूर करीब छह सौ किलोमीटर दूर तक तबादला कर दिया। वहीं बाद में इनमें से कुछ प्रभावशाली कर्मचारियों के तबादला आदेश निरस्त कर दिए। तबादला किए कर्मचारियों में से कई कर्मचारी कुछ माह में ही रिटायर हो रहे हैं। रोडवेज ने इनका भी राज्य सरकार की नीति के खिलाफ जाकर ट्रांसफर किया है। रोडवेज में हजारों कर्मचारी कार्यरत होने के बावजूद कोई तबादला नीति नहीं बनाई गई है। जिसके चलते प्रशासन मनमर्जी से तबादला कर देता है। रोडवेज ने अपने तबादला आदेश में उन महिला कर्मचारियों का भी ध्यान नहीं रखा, जिनके बच्चों के बोर्ड और प्री-बोर्ड की परीक्षाएं होने वाली हैं। ऐसे में तबादला पॉलिसी के अभाव में उनके ट्रांसफर आदेश को निरस्त किया जाए।

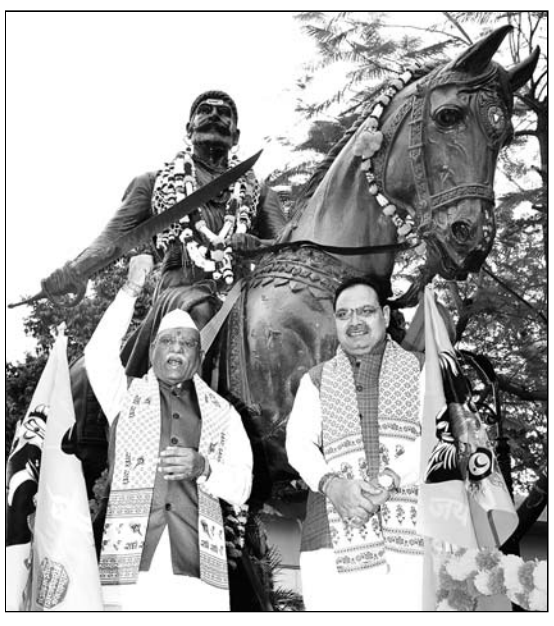

राजभवन में बुधवार को शिवाजी जयंती महोत्सव का आयोजन हुआ। इस दौरान राज्यपाल हरिभाऊ बागडे और मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने छत्रपति शिवाजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए। राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने इससे पहले घोड़े पर सवार शिवाजी की शोभायात्रा का राजभवन में अभिनंदन किया।

रीट परीक्षा में संदिग्ध गतिविधियों पर रहेगी कड़ी नजर

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशानुसार राजस्थान सरकार राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा (रीट)-2024 को निष्पक्ष, पारदर्शी एवं व्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। परीक्षा से जुड़ी समस्त व्यवस्थाओं को प्रभावी रूप से लागू करने हेतु मुख्य सचिव सुधांशु पंत की अध्यक्षता में बुधवार को सचिवालय में सभी संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में परीक्षा की शुचिता, पेपर और ओएमआर शीट की सुरक्षा एवं गोपनीयता, कानून व्यवस्था, प्रश्न पत्रों के सुरक्षित परिवहन, परीक्षार्थियों की सुविधाओं एवं अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा की गई एवं आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए गए।

पंत ने निर्देश दिए कि जिस प्रकार चुनाव आयोग निर्वाचन प्रक्रिया के प्रत्येक बिन्दु के लिए एसओपी जारी कर उसकी निर्धारित समय पर शत-प्रतिशत और गम्भीरता से पालना सुनिश्चित करवाता है, उसी प्रकार रीट परीक्षा में भी प्रत्येक बिन्दु की एसओपी जारी की गई है। इसकी पालना में थोड़ी सी भी अवहेलना कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। परीक्षा के दौरान कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने के लिए परीक्षा केंद्रों, स्ट्रॉन्ग रूम एवं संग्रहण केंद्रों पर पर्याप्त पुलिस बल एवं होमगार्ड जवानों की तैनाती के निर्देश दिए।

राज्य का बजट मोदी सरकार के बजट का प्रतिबिंब : डॉ. पूनिया

जयपुर। भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने वक्तव्य जारी कर कहा कि राजस्थान की उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी द्वारा प्रस्तुत राजस्थान बजट केन्द्र की मोदी सरकार के सर्व समावेशी बजट का प्रतिबिंब है, बुनियादी ज़रूरतों से लेकर आधुनिक विकास को यह बजट समर्पित है।

भजनलाल शर्मा सरकार का दूसरा बजट सर्वस्पर्शी : मदन राठौड़

- जन-जन की आकांक्षाओं को पूर्ण करने वाला बजट : रामचरण बोहरा
- सभी वर्गों-किसान, युवा, महिला, उद्यमी, गरीब और मध्यम वर्ग को सशक्त बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा : राजेन्द्र राठौड़
- सभी वर्गों को समुचित लाभ और आगे बढ़ने के अवसर देने वाला बजट : शेखावत
- राज्य सरकार का बजट राजस्थान को समृद्ध, विकसित और सशक्त बनाने वाला : मंजू शर्मा

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने भजनलाल शर्मा सरकार द्वारा पेश किए गए बजट को सर्वस्पर्शी एवं लोककल्याणकारी बताते हुए कहा कि बजट में राजस्थान के विकास का विजन और मिशन स्पष्ट दृष्टि गोचर होता है। उन्होंने कहा कि अन्नदाता किसान के सम्मान निधि को बढ़ाकर 9 हजार करना हो या निःशुल्क बीज वितरण करना हो, या फिर सिंचाई के पर्याप्त प्रयास किए जाने हो, इन सब पर बजट में विशेष प्रावधान किए गए है। उन्होंने कहा कि जैविक खेती को प्रोत्साहन करने के साथ ही बैंलों से खेती पर तीस हजार रूपए का प्रोत्साहन सराहनीय कदम है। इससे नंदी भी बचेंगे और आवारा पशुओं से भी जनता को राहत मिलेगी।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि सवा लाख युवाओं को सरकारी नौकरी, डेढ़ लाख युवाओं को निजी क्षेत्र में रोजगार, 50 हजार युवाओं को कौशल प्रशिक्षण के साथ ही 2 लाख लखपति दीदी बनाने, 25 हजार सौलर दीदी बनाने की घोषणा युवाओं और महिलाओं के सपनों को साकार करती है। उन्होंने कहा कि सड़क हो या चिकित्सा व्यवस्था, कानून व्यवस्था के लिए कदम उठाने या फिर बिजली के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के प्रावधान राजस्थान को एक नई दिशा देने वाले है। वहीं साल की 1800 यूनिट फ्री बिजली देने का निर्णय भी लोककल्याणकारी है। उन्होंने कहा कि पहली बार वित्त मंत्री दीया कुमारी ने राजस्थान में ग्रीन बजट रखकर हमारी पर्यावरणीय के प्रति प्रतिबद्धता का प्रकटीकरण किया है, जो राजस्थान को विकसित और हरियालो राजस्थान की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और चित्तौडगढ़ सांसद सीपी जोशी ने आज विधानसभा पहुंचकर वित्त मंत्री दिया कुमारी का बजट भाषण सुना। बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए सीपी जोशी ने कहा कि भाजपा की डबल इंजन सरकार में राजस्थान का बजट समृद्ध और मजबूत राजस्थान की आधारशीला रखने वाला है, जिसमें आमजन की सुख-सुविधा और मजबूती का पूरा ध्यान रखा गया है। बजट में दी गई सौगातों के लिए उन्होंने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और वित्त मंत्री दिया कुमारी का आभार व्यक्त किया है। सीपी जोशी ने कहा कि बजट में किसान, युवा, महिला, शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल, बिजली, सड़क, मैट्रो रेल से लेकर ग्रामीण विकास तक हर क्षेत्र में जनता को महत्वपूर्ण सौगातें मिली है।

राजस्थान बजट 2025-26 पर प्रतिक्रिया देते हुए जयपुर के पूर्व सांसद रामचरण बोहरा ने कहा कि यह बजट हर घर में खुशहाली की गारंटी को समर्पित, सर्वस्पर्शी और सर्वसमावेशी बजट है। यह जन-कल्याणकारी बजट गरीब, महिला, युवा, अन्नदाता व जन जन की आकांक्षाओं एवं आशाओं को पूर्ण करने में सफल होगा।

विधानसभा में पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ ने राजस्थान की वित्त मंत्री दीया कुमारी द्वारा सदन में प्रस्तुत राज्य बजट 2025-26 पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि 350 बिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का लक्ष्य हासिल करते हुए विकसित, शिक्षित व खुशहाल राजस्थान के संकल्प एवं जन-जन की आकांक्षाओं को पूरा करने वाले इस ऐतिहासिक, सर्वसमावेशी व जनहितैषी बजट के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एवं समस्त मंत्रिमंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। केंद्र सरकार द्वारा हाल ही में प्रस्तुत केन्द्रीय बजट 2025-26 बजट से प्रेरणा लेते हुए राजस्थान का बजट 2025-26 सभी वर्गों-किसान, युवा, महिला, उद्यमी, गरीब और मध्यम वर्ग को सशक्त बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि राजस्थान का बजट सभी वर्गों को समुचित लाभ और आगे बढ़ने के अवसर प्रशस्त करने वाला है। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत संकल्प' को साकार करने की योजना की सुगढ़ चरणबद्धता राजस्थान सरकार के बजट में स्पष्ट दिख रही है।

जयपुर शहर सांसद मंजू शर्मा नें बुधवार को राजस्थान सरकार द्वारा प्रस्तुत बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए इसे विकसित, सशक्त और समृद्ध राजस्थान की आधारशीला रखने वाला बताया है। उन्होंने जयपुर सहित संपूर्ण प्रदेश को दी गई सौगातों के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और वित्त मंत्री दिया कुमारी का आभार व्यक्त किया है।

सांसद मंजू शर्मा ने कहा कि बजट में किसान, युवा, महिला, शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल, बिजली, सड़क, मैट्रो रेल सहित परिवहन के साधनों से लेकर ग्रामीण विकास तक हर क्षेत्र में जनता को महत्वपूर्ण सौगातें मिली है।

नीट पीजी की स्ट्रे राउंड की काउन्सलिंग पर लगी रोक हटी

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने नीट पीजी की स्ट्रे राउंड की काउंसलिंग पर गत दिनों लगाई अंतरिम रोक को हटा दिया है। इसके साथ ही अदालत ने मामले में दायर याचिका को वापस लेने के आधार पर उसे खारिज कर दिया है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश डॉ. विजय लक्ष्मी की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता विज्ञान शाह ने अदालत को बताया कि मामले में आरक्षण नीति का पूर्णतया पालन किया गया है। वहीं याचिका गलत तथ्यों के आधार पर दायर कर स्टे लिया गया है। ऐसे में याचिका को खारिज किया जाए। इस पर याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि मामले में कुछ नए तथ्य सामने आए हैं। ऐसे में वह याचिका को सुनवाई के लिए आगे नहीं चलाना चाहते। इसलिए याचिका को वापस लेने की अनुमति दी जाए। इस पर अदालत ने याचिका को वापस लेने के आधार पर उसे खारिज कर दिया।

डोटासरा और जूली ने बजट को बताया निराशाजनक

जयपुर, (का.प्र.)। राजस्थान सरकार द्वारा पेश किए गए बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि यह बजट केवल राजस्थान की जनता पर कर्ज का बोझ डालने वाला है। राज्य सरकार का वित्तीय प्रबंधन पूरी तरह फेल है यह बजट में दिख रहा है। पिछले बजट में अनुमान लगाया गया कि करीब 2 लाख 65 हजार करोड़ रु की राजस्व प्राप्तियां होंगी परन्तु ये लक्ष्य पूरा नहीं हो पाया और 2 लाख 62 हजार 618 करोड़ रु की राजस्व प्राप्तियां ही हुई हैं जबकि केन्द्र सरकार से पहले से ज्यादा मदद मिली है। 2024-25 में राजस्व व्यय का लक्ष्य 3 लाख 34 हजार 796 करोड़ रु का रखा गया परन्तु व्यय केवल 2 साख 94 बजार 557 करोड़ रु ही किए गए।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा ने प्रदेश की भाजपा सरकार द्वारा विधानसभा में प्रस्तुत बजट पर प्रतिक्रिया देते हुये कहा कि राज्य सरकार के बजट से युवा, किसान, महिला, पिछड़े और उद्यिमयों को निराशा के अलावा कुछ नहीं मिला है। उन्होंने कहा कि बजट की विशेषता यह है कि बजट बनाने हेतु सुझाव मुख्यमंत्री से लिये गये, बजट को अंतिम रूप वित्त मंत्री ने दिया और विधानसभा में पढ़ा, किन्तु बजट भाषण समाप्त होने पर धन्यवाद ज्ञापन मुख्यमंत्री द्वारा प्रेसवार्ता कर दिया गया।

जयपुर में तीन नई आवासीय योजना लाएगी सरकार

अनुपयोगी बी.आर.टी.एस. कॉरिडोर को भी हटाए जाने की भी घोषणा

- जगतपुरा, वैशाली नगर में मेट्रो चलाने की योजना, गोविंददेवजी मंदिर में सालभर होंगे कार्यक्रम

जयपुर। उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी ने बजट में जयपुर के लिए कई घोषणाएं की। इसमें जयपुर शहर की स्थापना के 300 साल पूरे होने पर गोविंददेवजी कला महोत्सव के तहत सालभर कार्यक्रम का आयोजन करवाने की घोषणा की। इसके लिए सरकार ने 50 करोड़ रुपए का बजट प्रावधान किया है। इसके साथ तीन नई आवासीय योजना लाई जएंगी।

इसके अलावा जयपुर शहर और आसपास के कस्बों में बढ़ते ट्रैफिक जाम की परेशानी को दूर करने के लिए कई जगह बाइपास, फ्लाइओवर और एलिवेटेड रोड बनाने की घोषणा की। जयपुर शहर में मेट्रो के फेज-2 सीतापुरा से अम्बाबाड़ी तक प्रस्तावित रूट को केन्द्र सरकार के सहयोग से शुरू करवाने की बात कही।

साथ ही उन्होंने जगतपुरा, वैशाली नगर के एरिया में मेट्रो चलाने के संबंध में सर्वे करवाने की भी घोषणा की। इसके साथ ही उन्होंने अनुपयोगी बीआरटीएस कॉरिडोर को भी हटाए जाने की घोषणा की।

बुजुर्ग अवस्था में होने वाली बीमारियों के इलाज, ट्रेनिंग और रिसर्च के लिए एक इंस्टीट्यूट की स्थापना की जाएगी। जो आरयूएचएस को अपग्रेड करके बनाए जाने वाले रिम्स के अधीन होगा। वर्तमान में जयपुर के एसएमएस मेडिकल कॉलेज में जिरियाट्रिक मेडिसिन वार्ड संचालित है।

जयपुर के बीलवाड़ी से ढोढसर वाया राडावास सड़क तक 38.5 किलोमीटर में स्टेट हाईवे जाएगा। जो चौमूं से शाहपुरा तक जाएगा। 2.50 करोड़ रुपए की लागत से बगरू से रीको औद्योगिक क्षेत्र औप कुंजबिहारीपुरा तक कनेक्टिंग रोड बनाई जाएगी। 55 करोड़ रुपए की लागत से विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र और विद्याधर नगर में विभिन्न सड़कों का कार्य।

राजपुरवास ताला से शाहपुरा तहसील सीमा तक, कॉकरेल मोड भानपुर कलां सड़क से जमवारामगढ़ तक, नाभावाला से नीमला तक, मानोता से सन्नाटा घाटी चावंडिया-धामस्या तक, नकटी घाटी से दौसा तक कुल 52 किमी लंबाई में सड़क का निर्माण करवाया जाएगा। बस्सी से सांभरिया तक 10 किलोमीटर लंबाई में सड़क की चौड़ाई बढ़ाई जाएगी। विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र में जेईसीसी की तर्ज पर कंसर्ट एंव कंवेंशन सेंटर बनाया जाएगा। सांगानेर एरिया के पुराने मंदिरों जैसे-सांगा बाबा मंदिर, त्रिपोलिया बालाजी, संघी जी जैन मंदिर को धार्मिक पर्यटन सर्किट में शामिल किया जाएगा। 50 करोड़ रुपए की लागत से विकास कार्य करवाए जाएंगे। झोटवाड़ा एरिया में आईटीआई पॉलिटेक्निक कॉलेज खोला जाएगा। सांगानेर एरिया में नया सरकारी कॉलेज और कोटखावदा में सरकारी महिला कॉलेज खोला जाएगा। जयपुर के स्वर्ण जयंती पार्क विद्याधर नगर को ऑक्सीजन जोन के रूप में विकसित किया जाएगा। जयपुर के शाहपुरा में रोडवेज बस स्टेंड बनाया जाएगा। जयपुर के हरमाड़ा में नया सैटेलाइट हॉस्पिटल बनाया जाएगा। यहां नया ट्रोमा सेंटर भी खोला जाएगा। हस्तेडा (चौमूं) और बधाल (फुलेरा) में मौजूद पीएचसी को सीएचसी में क्रमोन्नत किया जाएगा।

छः बीघा भूमि पर दो अवैध कॉलोनियों को ध्वस्त किया

जयपुर। जयपुर विकास प्राधिकरण जोन-11 में निजी खातेदारी की करीब 06 बीघा कृषि भूमि पर 02 नवीन अवैध कॉलोनियों को पूर्णतः ध्वस्त किया गया।

महानिरीक्षक पुलिस कैलाश चन्द्र विश्नोई ने बताया कि जोन-11 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित ग्राम रामजीपुरा तहसील सांगानेर, जिला जयपुर में करीब 04 बीघा निजी खातेदारी कृषि भूमि पर जेडीए की बिना स्वीकृति-अनुमोदन के एवं बिना भू रूपान्तरण करवायें भूमि को समतल कर बनाई गई मिट्टी-ग्रेवल सड़क, प्लॉटों की बाउण्ड्रीवाल, पिल्लर खडे कर व अन्य अवैध निर्माण कर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने की सूचना प्राप्त होने पर आज जोन-11 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त किया जाकर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयास को विफल किया गया। जेडीए द्वारा जोन-11 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित आगरा रोड़ पर ग्राम चतरपुरा, खातीपुरा, तहसील सांगानेर, जिला जयपुर में करीब 02 बीघा निजी खातेदारी कृषि भूमि पर जेडीए की बिना स्वीकृति-अनुमोदन के एवं बिना भू रूपान्तरण करवायें भूमि को समतल कर बनाई गई मिट्टी-ग्रेवल सड़कें व अन्य अवैध निर्माण कर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने की सूचना प्राप्त होने पर आज जोन-11 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशानदेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त किया जाकर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयास को विफल किया गया। उक्त कार्यवाहियां मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन आदर्श चौधरी के पर्यवेक्षण में उपनियंत्रक प्रवर्तन-प्रथम, प्रवर्तन अधिकारी जोन-11 तथा प्राधिकरण में उपलब्ध जाप्ते, लेबर गार्ड एवं जोन में पदस्थापित राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा सम्पादित की गई।

'सबकी फिक्र में खुद को मिटाती हूं...'

जयपुर। 'सबकी फिक्र में खुद को मैं मिटाती हूं, हर वादा अपना दिल से निभाती हूं।' इन्हीं पंक्तियों के साथ राजस्थान की वित्त मंत्री दीया कुमारी ने (बुधवार) बजट पेश करने की शुरुआत की। इसके अलावा उन्होंने युवाओं के लिए स्वामी विवेकानंद, महिलाओं के लिए डॉ. भीमराव अंबेडकर और कृषि के लिए महात्मा गांधी की भी पंक्तियां पढ़ीं।। वहीं, विपक्ष के हंगामे के बावजूद दीया कुमारी ने अपना बजट भाषण जारी रखा।

इस दौरान गोविंद सिंह डोटासरा ने तंज कसते हुए कहा आपके भाषण से नाराज होकर तीन मंत्री चले गए हैं। इस पर सत्ता पक्ष ने आपत्ति की। डोटासरा बैठे तो सत्ता पक्ष के कुछ विधायक और मंत्री बोलने लगे। स्पीकर वासुदेव देवनानी ने टोकाटाकी पर कहा कि एक को बैठाते हैं तो दूसरा खड़ा हो जाता है।

दीया कुमारी ने 5000 करोड़ की लागत से सड़कों के अपग्रेडेशन और मरम्मत के काम करवाने की घोषणा की। कहा कामों की बहुत लंबी सूची है। इसके बाद दीया कुमारी पन्ने पलटने लगीं। स्पीकर ने कहा कि सूची लंबी है। इस दौरान पक्ष-विपक्ष के विधायकों ने एक-दूसरे पर तंज भी कसे। विपक्षी विधायकों ने कहा कि अभी तक पिछले ही काम नहीं हुए। दीया ने कहा बहुत लंबी सूची है, एक बार पेज तो पलट लूं। युवाओं के लिए घोषणा से पहले दीया कुमारी ने स्वामी विवेकानंद की पंक्तियां पढ़ी।

‘भरतपुर की पहचान पर्यटन सिटी के रूप में पहुंचे, इसके लिये सभी प्रयास करें’

भरतपुर स्थापना दिवस के उपलक्ष में स्वाभिमान मार्च व पुष्पांजलि कार्यक्रम आयोजित

भरतपुर, (निसं)। 292वें भरतपुर स्थापना दिवस के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रमों की श्रृखंला में बुधवार को शहर में स्वाभिमान मार्च का आयोजन एवं महाराजा सूरजमल स्मारक पर पुष्पाजंलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं विभिन्न सामाजिक, नागरिक एवं धार्मिक संगठनों ने महाराजा सूरजमल की प्रतिमा पर श्रृद्धासुमन अर्पित किए।

भरतपुर स्थापना दिवस पर महाराजा सूरजमल स्मारक पर पुष्पांजलि कार्यक्रम आयोजित हुआ।

जनसमूह को सम्बोधित करते हुए जिला कलेक्टर डॉ. अमित यादव ने कहा कि भरतपुर की आधारशिला वीर शिरोमणी महाराजा सूरजमल ने 292 वर्ष पहले रखी थी, आज भरतपुर की पहचान देशभर में पर्यटन सिटी के रूप में पहुंचे इसके लिये सभी को मिलकर प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि भरतपुर में पुरा सम्पदा, इकोट्ययूरिज्म स्थल एवं धार्मिक व ऐतिहासिक स्थलों की प्रचूरता को देखते हुये पर्यटन के क्षेत्र में विकास की विपुल संभावनायें हैं। यहां की संस्कृति एवं परम्पराओं से देशी-विदेशी पर्यटकों को रूबरू कराने के लिये स्थापना दिवस जैसे आयोजन महत्वपूर्ण साबित होंगे। उन्होंने कहा कि विगत एक सप्ताह से जिला प्रशासन, लोहागढ़ विकास परिषद तथा आमजन के सहयोग से भरतपुर को पर्यटन के क्षेत्र में आगे लाने के लिए विविध गतिविधियां आयोजित की गई। इनसे आमजन का शहर के प्रति जुड़ाव और भागीदारी बढ़ी है।

जिला कलेक्टर ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशन में जिले में आधारभूत सुविधाओं के विकास कार्यों से भरतपुर राज्यभर में अपनी पहचान बनाने में कामयाब हो रहा है। उन्होंने कहा कि कहा कि पर्यटन को बढ़ावा मिलने से भरतपुर की आर्थिक मजबूत होगी। सड़क, चिकित्सा, पेयजल, शिक्षा एवं खेल के क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों का लाभ आने वाले समय में नागरिकों को मिलेगा। जिला अध्यक्ष शिवानी दायमा ने कहा कि भरतपुर की पहचान महाराजा सूरजमल के पराक्रम, शौर्य एवं यहां के ऐतिहासिक स्थलों के कारण है। सरकार द्वारा भरतपुर के विकास के लिये नये कीर्तिमान स्थापित किये जा रहे हैं। आमजन की मूलभूत सुविधाओं के साथ पर्यटन के क्षेत्र में भी विकास कार्य शुरू किये गये हैं। लोहागढ़ विकास परिषद के गुलाब बत्रा ने भरतपुर के समृद्धशाली इतिहास पर भी विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि पर्यटन के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए भरतपुर में अधिक संभावनायें हैं।

कार्यक्रम का संचालन लोहागढ़ विकास परिषद जिला समन्वयक योगेश शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में अतिरिक्त कलेक्टर शहर राहुल सैनी, पर्यटन विभाग के संयुक्त निदेशक संजय जौहरी, जिला शिक्षा अधिकारी आरडी बंसल, भरतपुर स्थापना दिवस संयोजक अनुराग गर्ग, सामाजिक कार्यकर्ता गिरधारी तिवारी, बृजेश अग्रवाल, मनोज तिवारी, गोपाल, ब्रजेश सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

नाबालिग का अपहरण कर दुष्कर्म करने का आरोपी गिरफ्तार

पुलिस ने अपहरण की वारदात में काम में ली गई पिकअप गाड़ी भी जब्त की

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ीनगर पुलिस ने नाबालिग लड़की का अपहरण कर दुष्कर्म करने के आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से वारदात के दौरान काम में ली गई पिकअप गाड़ी जब्त कर ली है।

थानाधिकारी विजय कुमार चंदेल ने बताया कि 11 फरवरी को थाना क्षेत्र के एक व्यक्ति ने थाने में आकर रिपोर्ट दी कि सलीम खान उसकी नाबालिग लड़की का अपहरण कर ले गया। मामले

■ गिरफ्तार आरोपी से गहनता से पूछताछ जारी है

को गंभीरता से लेते एसपी शरद चौधरी ने एक विशेष टीम का गठन कर आरोपी को तुरंत गिरफ्तार करने के निर्देश दिए। इस दौरान पुलिस ने नाबालिग लड़की को दस्तायाब कर पूछताछ की गई तो उसके साथ बलात्कार करने का मामला सामने आया।

पुलिस ने दुष्कर्म के आरोपी को गिरफ्तार किया।

आरोपी की तलाश के लिए टीम गठन कर संदिग्ध स्थानों पर तलाश शुरू की। गठित टीम द्वारा आसूचना व तकनीकी विश्लेषण के आधार पर आरोपी सलीम खान (30) पुत्र इकबाल मौहम्मद को दस्तयाब कर सख्ती से पूछताछ की तो उसने वारदात करना कबूल कर लिया। पुलिस ने आरोपी को बलात्कार करने व पॉक्सो एक्ट में गिरफ्तार कर लिया।

आरोपी की निशानदेही पर पिकअप गाड़ी जब्त कर ली। थानाधिकारी ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी से गहनता से पूछताछ की जा रही है तथा वारदात में शामिल अन्य आरोपियों के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है। इस दौरान टीम में विजय कुमार चंदेल थानाधिकारी, अनिल एचसी, विकास कुमार कानि, दीपक कानि. शामिल थे।

खाद्य विभाग की टीम ने घी-दूध के सैंपल लिए

बीकानेर, (निसं)। खाने के सामान में मिलावट के खिलाफ चल रहे अभियान के तहत खाजूवाला में प्रशासन और खाद्य विभाग ने बड़ी कार्रवाई की है। मंगलवार दोपहर अचानक पहुंची इस टीम ने कई जगह एक साथ छापेमारी करके सैंपल एकत्र किए हैं। गड़बड़ी मिलने पर संबंधित फर्मों पर कार्रवाई की जाएगी।

■ टीम ने व्यापारियों से मिलकर आवश्यक दस्तावेजों की भी जांच की

खाजूवाला में खाद्य विभाग और एसडीएम की टीम ने मंगलवार को खाद्य सुरक्षा के तहत बड़ी कार्रवाई करते हुए घी और दूध के सैंपल लिए। इस कार्रवाई में एसडीएम रमेश कुमार, प्रशिक्षु आरएएस दिव्या, नगर पालिका के ईओ सोहनलाल नायक, नगरपालिका कनिष्ठ अभियंता विकास ज्याणी, फूड इंस्पेक्टर श्रवण कुमार, भानुप्रताप सिंह और राकेश गोदारा की टीम शामिल रही। टीम ने बीकानेर रोड स्थित एक चिलिंग सेंटर समेत अन्य जगहों पर जाकर दूध और घी के सैंपल लिए। यह कार्रवाई खाद्य सुरक्षा मानकों की जांच के लिए की गई।

एसडीएम रमेश कुमार ने बताया कि यह अभियान नियमित रूप से चलता रहेगा और समय-समय पर खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता की जांच की जाएगी। साथ ही किसी भी प्रकार की अनियमितता पाए जाने पर संबंधित लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान नगर पालिका अधिकारियों और खाद्य निरीक्षकों की टीम ने व्यापारियों से मिलकर आवश्यक दस्तावेजों की भी जांच की और उनके स्टोर से सैंपल्स लेकर उन्हें लैब में जांच के लिए भेजा जाएगा।

बीकानेर में झमाझम बारिश

बीकानेर, (निसं)। बीकानेर में बुधवार दोपहर तेज बारिश ने मौसम सुहाना कर दिया। बारिश का ये दौर नाल से गजनेर के बीच मूसलाधार रहा। वहीं बीकानेर शहर में बादलवाही रही।

मौसम विभाग ने बीकानेर में बारिश की घोषणा मंगलवार के लिए की थी, लेकिन बादल बुधवार को बरसे। दोपहर दो बजे के आसपास जैसलमेर रोड पर बादलों का जमावड़ा हो गया। कोलायत से बीकानेर के बीच जगह-जगह बारिश जारी रही। करीब ढाई बजे गजनेर से नाल के बीच तेज मूसलाधार बारिश ने नेशनल हाइवे पर चलने वाले वाहनों को रुकने के लिए मजबूर कर दिया। जैसलमेर रोड पर अलग-अलग टाइम में अलग-अलग जगह बारिश हुई है। कोलायत, कोटड़ी, कोलायत फांटा, गजनेर सहित आसपास के सभी क्षेत्रों में बारिश हुई है। मौसम विभाग पिछले तीन-चार दिन से बारिश की चेतावनी दे रहा है।

ज्वेलरी शॉप से महिलाओं ने आभूषण चुराये

जोधपुर, (कासं)। शहर के अंदरूनी क्षेत्र नृसिंहदड़ा स्थित हनुमान मंदिर के पास में आई एक ज्वैलरी शॉप पर महिलाएं खरीदारी के बहाने सोने चांदी के आभूषण चोरी कर ले गई। घटना 23 जनवरी की है। पुलिस ने पहले मामला दर्ज नहीं किया था। पीड़ित ने पुलिस के आलाधिकारी तक शिकायत दी तब मामला दर्ज किया गया। सीसीटीवी फुटेज में एक वृद्धा के साथ दो अन्य महिलाएं नजर आई है, मगर उनके घुंघट निकले होने से वे पहचान में नहीं आ रही है। दुकान से चांदी की छड़ा जोड़ी, नाक की फिणी एवं कान के छोटी बालियां चुराई है।

सदर बाजार थाने के एएसआई कालूसिंह ने बताया कि खैरादियों का बास निवासी दिनेश सोनी पुत्र उम्मेदाराम सोनी ने रिपोर्ट दी है। इसके अनुसार वह की एक ज्वैलरी की शॉप नृसिंह दड़ा हनुमानजी मंदिर के पास जानकी ज्वैलर्स नाम से आई है, जहां पर 23 जनवरी को तीन महिलाएं ज्वैलरी खरीद के बहाने आई थी। जिन्होंने खरीद के बहाने वहां से 450 ग्राम की चांदी की छड़ा जोड़ी, नाक की फिणियां एवं कान की बालियां चोरी कर ले गई। उनके जाने के बाद सामान चैक किया तो सामान गायब मिला। एएसआई कालूसिंह के अनुसार प्रकरण में जांच की जा रही है। महिलाएं घुंघट में है जिससे पहचान करने में दिक्कत हो रही है। फिलहाल इनकी पहचान कर तलाश की जा रही है। वहीं परिवादी के अनुसार वह मामले को लेकर पुलिस थाने रिपोर्ट दर्ज कराने गया था, मगर केस दर्ज नहीं किया गया। इस पर उसने पुलिस उपायुक्त कार्यालय पर इसकी शिकायत दी। अब सदर बाजार पुलिस ने केस दर्ज किया है।

हथियार के साथ पकड़े बदमाश, बड़ी वारदात टली

बीकानेर, (निसं)। तीन पिस्टल और 52 कारतूस के साथ गंगाशहर पुलिस के हत्थे चढ़े तीन बदमाशों को तीन दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है। गंगाशहर थाना पुलिस ने सोमवार को एक बड़े ऑपरेशन को अंजाम देते हुए अवैध हथियारों के साथ तीन बदमाशों को गिरफ्तार किया था, जिनके कब्जे से तीन पिस्टल और 52 कारतूस बरामद किए गए हैं। प्राथमिक जांच में पता चला है कि ये अपराधी बीकानेर में किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने की फिराक में थे, लेकिन पुलिस की सतर्कता के चलते अपने मंसूबों में कामयाब नहीं हो सके। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान रोहित राणा उर्फ लाला (19), निवासी सींथल, बीकानेर, राहुल जाट (27), निवासी जोरासी, पानीपत (हरियाणा) तथा मोहित राणा (29), निवासी चाखु, फलोदी के रूप में हुई है।

प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया कि ये बदमाश संगठित अपराध से जुड़े हुए हैं और शहर में दहशत फैलाने की योजना बना रहे थे। पुलिस अब यह भी जांच कर रही है कि ये हथियार कहां से लाए गए और इनका इस्तेमाल किन वारदातों में किया जाना था। इस कार्रवाई को सफल बनाने में गंगाशहर पुलिस टीम का अहम योगदान रहा। पुलिस टीम में उप निरीक्षक मोनिका, सहायक उप निरीक्षक ताराचंद, हेड कांस्टेबल मांगीलाल, कांस्टेबल सीताराम, रघुवीर दान, गौरव और विक्रम सिंह की सक्रियता के कारण तीनों बदमाशों को गिरफ्तार किया जा सका। पुलिस ने तीनों आरोपियों को तीन दिन के रिमांड पर लिया है और उनसे लगातार पूछताछ जारी है। इस मामले की जांच जयनारायण व्यास कॉलोनी थाने के सीआई सुरेंद्र पचार को सौंपी गई है। सीआई पचार ने बताया कि आरोपी अपराध की दुनिया में पहले से सक्रिय रहे हैं और इनका आपराधिक रिकॉर्ड खंगाला जा रहा है। उन्होंने बताया कि तीनों आरोपियों से उनके नेटवर्क की पूरी जानकारी निकालने के बाद और भी गिरफ्तारियां होने की संभावना है। गिरफ्तार किए गए बदमाशों की पूछताछ में हथियारों की सप्लाई चेन, अन्य अपराधियों के नाम और उनके आगामी अपराधों की योजना का खुलासा होने की उम्मीद है। पुलिस ने संकेत दिए हैं कि इस ऑपरेशन से कई और संगठित अपराधियों तक पहुंचने में मदद मिलेगी।

60 लाख की ठगी का आरोपी पुलिस के हत्थे चढ़ा

जोधपुर, (कास)। जोधपुर डिस्कॉम से सेवानिवृत एक्सइएन को डिजिटल अरेस्ट रखकर 60 लाख की धोखाधड़ी करने का एक आरोपी पुलिस के हत्थे चढ़ा है। उससे अब गहन पूछताछ की जा रही है। वहीं पुलिस ने बाड़मेर के पांच अन्य युवकों को भी शांतिभंग में पकड़ा है, संदेह है कि इनके खातों में रूपए ट्रांसफर कराए होंगे। फिलहाल पुलिस की अग्रिम पड़ताल जारी है। मामले में सरदारपुरा पुलिस ने एक आरोपी बाड़मेर जिले के धोरीमन्ना स्थित रामपुरा पूरवा निवासी भगाराम उर्फ बिट्टू पुत्र गंगाराम जाट को गिरफ्तार कर लाया गया है। वक्त घटना पर पुलिस ने पांच लाख रूपए होल्ड भी कराए थे।

सरदारपुरा थानाधिकारी शेषकरण बारहठ ने बताया कि सरदारपुरा नेहरू पार्क क्षेत्र में रहने वाले आरएसइबी से सेवानिवृत एक्सइएन अजीतराज पुत्र दूलेराज भंडारी की तरफ से रिपोर्ट दी गई थी। इनके अनुसार उनकी आयु 85 साल है। वे यहां पर जोधपुर में अकेले रहते हैं और परिवार के सदस्य बेटा बहू इत्यादि ब्यावर दिल्ली में रहते हैं। दो फरवरी को उनके मोबाइल पर किसी शख्स ने वाट्सएप कॉल कर उन्हें जानकारी दी कि उनके खिलाफ फ्रॉड का केस है और उन्हें डिजिटल अरेस्ट किया जा रहा है। इसके बाद फिर उसी नंबर से कॉल आता है कि वह एक पुलिस अधिकारी बोल रहा है और खातों में जमा रूपयों की जानकारी जुटाने की बात कहता है। 3 से 10 फरवरी तक शातिर उन्हें डिजिटल अरेस्ट रखते हैं वे उन्हें बताए अनुसार खातों में रूपए ट्रांसफर करने को कहते है। अजीतराज द्वारा आरजीटीएस के माध्यम से उनके खातों में अलग अलग किश्तों में 60 लाख रूपए डाल देते हैं। परिवार का सदस्य जब उनसे मिलने आता है तो वे उन्हें इस बारे में बताते है। तब उनके साथ हुए फ्रॉड का पता लगता है। इस पर अजीतराज सरदारपुरा थाने पहुंचे और शातिरों के खिलाफ 60 लाख की धोखाधड़ी किए जाने का केस दर्ज करवाया था। पुलिस ने बाद में पांच लाख रूपयों को होल्ड भी करवाया था।

दिनदहाड़े ट्रैक्टर और दस हजार रुपए लूटे

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले में बढ़ती वारदातों के बीच अपराधियों के हौसले बुलंद होते जा रहे हैं। लूट की ताजा वारदात श्रीगंगानगर जिले से निकल रही भारतमाला रोड पर हुई है। यहां दिनदहाड़े ट्रैक्टर पर जा रहे एक व्यक्ति को कार सवार हथियारबंद बदमाशों ने अगवा कर 10 हजार रुपए और ट्रैक्टर लूट की वारदात को अंजाम दिया।

पीड़ित मेवा सिंह पुत्र प्रकाश सिंह निवासी चक 9 जैड ने सदर थाना में रिपोर्ट दर्ज करवाई है। इस मामले में पुलिस ने तीन अज्ञात जनों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पीड़ित मेवा सिंह ने बताया कि वह अपने ट्रैक्टर में डीजल भरवाने पंजाब जा रहा था। इसी दौरान भारत माला रोड पर मोहनपुरा के पास वाई पुल से कुछ ही दूरी पर वह अपने ट्रैक्टर की लाइट ठीक करने के लिए उतरा। इसी दौरान पीछे से आ रही एक कार में कुछ लोग मुंह पर कपड़ा ढके हुए उतरे। इन लोगों ने मेवा सिंह की आंखों पर पट्टी बांधकर पीछे पिस्तौल तान दी। इसके बाद बदमाशों ने पीड़ित की जेब से दस हजार रुपए निकाल लिए और जबरन कार में बैठाकर मिर्जेवाला रोड पर स्थित नंदीशाला से कुछ आगे फेंककर फरार हो गए। मेवा सिंह ने बताया कि वारदात स्थल पर संभाला तो ट्रैक्टर भी गायब था। भारत माला रोड पर सीसीटीवी कैमरे चालू नहीं होने के कारण ज्यादा सफलता नहीं मिली है। मामले की जांच एएसआई बिरजु सिंह को सौंपी गई है।

53 घरेलू गैस सिलेण्डर एवं 2 रिफिलिंग मशीन जब्त

भीलवाड़ा, (निसं)। घरेलू एलपीजी सिलेण्डरों के दुरूपयोग से हो रही दुर्घटनाओं तथा वाहनों में अवैध रिफिलिंग से जान-माल व राजस्व हानि को रोकने के संबंध में राज्य सरकार द्वारा अभियान चलाया जा रहा है।

■ एल.पी.जी. दुरुपयोग के विरूद्ध अभियान के तहत कार्रवाई की

इस अभियान के तहत जिला कलेक्टर जसमीतसिंह संधू के निर्देश पर घरेलू एलपीजी के दुरूपयोग के तहत जिला रसद अधिकारी अमरेन्द्र कुमार मिश्र के नेतृत्व में कार्यवाही की गई। प्रवर्तन निरीक्षक हनुइन्द्र सिंह राणावत, ब्रिजेश सेठी, विक्रान्त मथूरिया, विनोद मीणा द्वारा माण्डलगढ़ रोड़ स्थित जाहिद हुसैन पुत्र सद्दीक हुसैन की दुकान के जीएन वाशिंक हाऊस तथा त्रिवेणी चौराहा स्थित राधेश्याम खटीक पुत्र देवकिशन खटीक की दुकान मोजेश्वरी किराणा स्टोर का औचक निरीक्षण कर मौके पर 53 घरेलू गैस सिलेण्डर एवं 2 रिफिलिंग मशीन जब्त किये गये।

जिला रसद अधिकारी ने बताया कि जब्तशुदा गैस सिलेण्डर एवं रिफिलिंग मशीन को बीगोद इण्डेन गैस एजेंसी एवं रेखा गैस एजेंसी को सुपुर्द किये गये। मौके पर कार्रवाई के दौरान दुकान मालिक द्वारा एलपीजी ऑर्डर 2000 के प्रावधानों का उल्लंघन किया जाना पाया गया। फलस्वरूप एलपीजी ऑर्डर के तहत कार्रवाई की गई। अब तक एलपीजी दुरुपयोग के विरूद्ध की गई कार्रवाई में 289 घरेलू गैस सिलेंडर एवं दर्जनों रिफलिंग मशीनें जब्त की गई है। उन्होंने बताया कि एक आरोपी के विरूद्ध पुलिस थाना में प्राथमिकी दर्ज करवाई जा चुकी है। उन्होंने रेस्टोरेन्ट, होटल, ढाबा मालिक तथा विवाह समारोह स्थल के संचालकों से अपील कि है कि इन स्थानों पर व्यावसायिक गैस सिलेण्डरों का ही उपयोग किया जाए अन्यथा नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई की जायेगी।

शाहपुरा को जिला बनाने की मांग तेज, कैलाश मेघवाल ने दिया समर्थन

शाहपुरा, (निसं)। शाहपुरा को जिला बनाने की मांग को लेकर आंदोलन तेज हो गया है। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष और शाहपुरा के पूर्व विधायक कैलाश मेघवाल ने इस आंदोलन को अपना समर्थन दिया है। मेघवाल ने कहा कि पिछली गहलोत सरकार ने शाहपुरा को जिला बनाया था। उन्होंने आरोप लगाया कि मौजूदा सरकार ने राजनीतिक दुर्भावना के कारण शाहपुरा से जिले का

■ जिला समाप्त करने के विरोध में क्रमिक अनशन धरने पर श्री सिद्धेश्वर शिव हनुमान मंदिर सेवा समिति शाहपुरा के सदस्य बैठे

दर्जा छीन लिया। मेघवाल ने कहा है कि शाहपुरा जिला बनने के सभी मापदंड पूरे करता है। बुधवार को अभिभाषक संस्था और जिला बचाओ संघर्ष समिति का प्रतिनिधिमंडल मेघवाल से मिला। इस दौरान संस्था के अध्यक्ष दुर्गालाल राजोरा, संयोजक रामप्रसाद जाट, वरिष्ठ अधिवक्ता अनिल शर्मा, अविनाश शर्मा और प्रियेश यदुवंशी मौजूद थे।

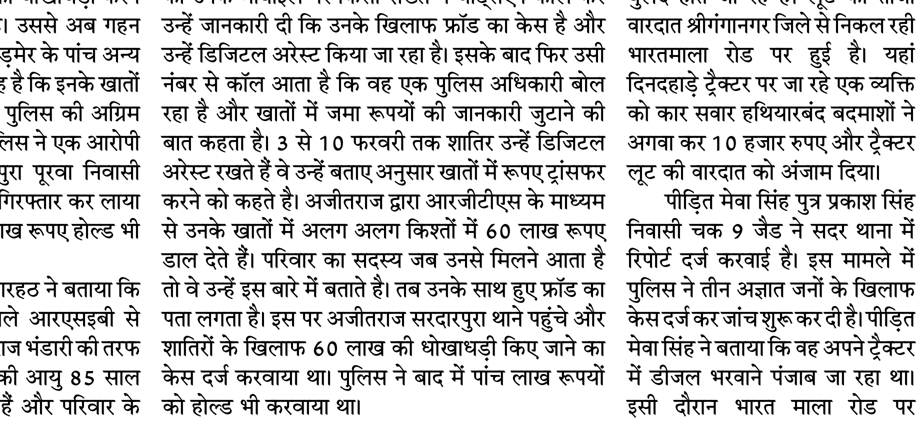

शाहपुरा जिला बचाओ संघर्ष समिति द्वारा उपखंड कार्यालय शाहपुरा के बाहर क्रमिक अनशन जारी है।

मेघवाल ने कहा कि वे मुख्यमंत्री और केंद्रीय नेतृत्व से शाहपुरा को जिला बनाने के लिए बात करेंगे। उन्होंने इस संबंध में पत्र लिखने की भी बात कही। साथ ही उन्होंने जिले का दर्जा छिनने के लिए मौजूदा अपरिपक्व नेतृत्व और अकर्मण्यता को जिम्मेदार ठहराया।

शाहपुरा जिला बचाओ आंदोलन 49 वे दिन भी अनवरत जारी : वहीं जिला बचाओ संघर्ष समिति के द्वारा उपखंड कार्यालय शाहपुरा के बाहर क्रमिक अनशन धरने पर श्री सिद्धेश्वर शिव हनुमान मंदिर सेवा समिति शाहपुरा के सदस्य अध्यक्ष विकास लौहार के नेतृत्व में मोहन बाड़ी से त्रिमूर्ति चौराहे होते हुए शांतिपूर्ण रैली निकाली और नारेबाजी करते हुए धरना स्थल पर पहुंचकर शाहपुरा जिले को समाप्त करने के विरोध में प्रदर्शन किया और सरकार से शाहपुरा को वापस जिले का दर्जा देने की मांग की। श्री सिद्धेश्वर शिव हनुमान मंदिर सेवा समिति शाहपुरा के अध्यक्ष से विकास लोहार के नेतृत्व में सदस्य महिलाओं सहित राकेश लोहार, शंकर साहू, भागचंद लोहार, सुरेंद्र कुमार, दिनेश सेन, श्याम सुंदर चौहान, सुमन पांचाल, मीना कंवर, रेखा पांचाल, रानू कंवर, उछबा देवी, आशा देवी, निहारिका, विमला, भंवरी देवी, निकिता जाट, खुशी धाबाई, शिवानी पांचाल सहित कई सदस्य क्रमिक अनशन धरने पर बैठे और उपखंड अधिकारी को राज्यपाल के नाम शाहपुरा जिला बहाल करने का ज्ञापन दिया।

नीमकाथाना जिला निरस्त किये जाने का विरोध, धरना और भूख हड़ताल जारी

पाटन, (निसं)। नीमकाथाना जिले को पुनः बहाल करने की मांग को लेकर विरोध लगातार जारी है। बुधवार को कुड़बड़ा ग्राम पंचायत में क्रामिक भूख हड़ताल का आयोजन किया गया।

इस दौरान, सरपंच सूबेदार लक्ष्मण सिंह, रणजीत जिलोवा, देवेन्द्र सिंह,

■ कुड़बड़ा ग्राम पंचायत में धरना देकर सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया और टायर जलाकर विरोध जताया

नागरमल जांगिड़, शंकरलाल नटवाड़िया, बलवान यादव, उगम सिंह, सवाई सिंह तंवर, बजरंग सिंह तंवर, ग्यारसीलाल, रूडमल गुर्जर, पतराम यादव, सुल्तान गुर्जर, दौलतराम जांगिड़, जयनारायण जाट, सुरजाराम कोलावत, बहादुरमल जाट, महावीर जांगिड़, सुंडाराम सामोता, सुभाषचंद गुर्जर, विजय कुमार जांगिड़, धर्मपाल जाखड़, मंगल सिंह, जगदीश जांगिड़, बाबूलाल जांखड़, चित्रासिंह तोमर, श्रवण सिंह तंवर, हेम सिंह तोमर, बनवारी लाल जाट ने धरने पर बैठकर सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया और टायर जलाकर विरोध जताया।

कुड़बड़ा ग्राम पंचायत में क्रामिक भूख हड़ताल का आयोजन किया गया।

इस दौरान लक्ष्मण सिंह ने कहा कि आज बजट सत्र में नीमकाथाना को कोई सौगात नहीं मिली, यदि नीमकाथाना जिला होता तो बहुत सारी योजनाएं और परियोजनाएं यहां लागू होतीं। वर्तमान सरकार ने अन्यायपूर्वक जिले को निरस्त किया है, जिससे नीमकाथाना में विकास रुक गया है और लोगों की उम्मीदें टूट रही हैं। रणजीत जिलोवा ने कहा कि यह स्थिति केवल नीमकाथाना की जनता के लिए नहीं, बल्कि पूरे राज्य के लोकतंत्र के लिए भी चिंताजनक है। जब लोग शांतिपूर्वक आंदोलन कर रहे होते हैं और उनकी आवाज को अनसुना किया जाता है, तो यह लोकतंत्र की बुनियादी अवधारणाओं के खिलाफ है। सरकार को जनता की समस्याओं को प्राथमिकता देनी चाहिए।

जिला बचाओ संघर्ष समिति के सदस्य मदनलाल सैनी, मालाराम वर्मा, बसंत यादव, राजेन्द्र आर्य, कृष्ण यादव और मीडिया प्रभारी नरेश टेलर भी इस संघर्ष में शामिल रहे। इसके साथ ही संजू जांगिड़, महावीर, दुर्गा प्रसाद, विक्रम सिंह तंवर, सचिन सिंह तंवर, बनवारीलाल शर्मा, श्योपाल जाट, उमेश जांगिड़, महिपाल जाखड़, अशोक कुमार स्वामी, सुरजाराय जाट, जयनारायण ने भी इस संघर्ष में अपना समर्थन दिया।

"अगर आप इस प्रारूप को देखें तो हमारी टीम काफी संतुलित है और हमें विश्वास है कि हम इस टूर्नामेंट में किसी भी टीम को हरा सकते हैं।"
- नजमुल हुसैन

बांग्लादेश के कप्तान, चैंपियन्स ट्रॉफी में अपनी टीम की स्थिति के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी — **शुभमन गिल**

भारत के स्टार बल्लेबाज शुभमन गिल 796 रेटिंग अंक के साथ पाकिस्तान के बाबर आजम को पछाड़ कर दुनिया के नंबर वन एकदिवसीय बल्लेबाज बन गए हैं। वहीं श्रीलंका के महीश तीक्षणा ने 11 अंकों की छलांग लगाकर गेंदबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंच गये है। आज यहां जारी ताजा रैंकिंग के अनुसार एकदिवसीय में शीर्ष 10 बल्लेबाजों में भारत के चार खिलाड़ी हैं। इसमें गिल के अलावा रोहित शर्मा 761 अंके के साथ तीसरे स्थान पर, विराट कोहली 727 अंक के साथ छठे स्थान पर और श्रेयस अय्यर 679 अंक के साथ नौवें स्थान पर मौजूद हैं।

क्या आप जानते हैं ?... एबी डीविलियर्स ने वनडे में सबसे तेज शतक बनाया है। उन्होंने सिर्फ 31 गेंदों में शतक बनाया है, जबकि कोरी एंडरसन ने 36 गेंदों में दूसरा सबसे तेज शतक बनाया है।

जयपुर क्लब व नीरजा मोदी एकेडमी की आसान जीत

जयपुर, 19 फरवरी। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित के एल सैनी ए डिविजन लीग में आज खेले गए मैचों में जयपुर क्लब ने राजस्थान यूथ को 3 विकेट से हराया तथा नीरजा मोदी एकेडमी ने राजीव गांधी क्लब को 5 विकेट से हराया। के एल सैनी स्टेडियम पर खेले गए मैच में जयपुर क्लब ने टॉस जीतकर पहले राजस्थान यूथ को बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया। राजस्थान यूथ क्लब ने कुणाल गौतम के 33 रन, जयंत ताम्बी के 29 रन, हर्ष सैनी के 24 रन, आदित्य झाला के 32 रन, जतिन सैनी के 13 रन व रोहन सिंह के नाबाद 10 रनों से 40.2 ओवर में 178 रन बनाए। जयपुर क्लब के लिए मोंटी जायसवाल ने 24 पर 3, मोहम्मद खूबेब ने 28 पर 3, विनय मीणा ने 27 पर 2 व गौरव मीना ने 49 पर 2 विकेट लिए। जवाबी पारी जयपुर क्लब की टीम ने कुशाग्र ओझा के नाबाद 82 रन, दक्ष कासलीवाल के 23 रन, मोहम्मद खूबेब के 36 रन व विशाल तिवाड़ी के 26 रनों से 39.5 ओवर में 7 विकेट पर 181 रन बना कर मैच जीत लिया। राजस्थान यूथ के लिए आदित्य झाला ने 35 पर 3, जतिन सैनी ने 26 पर 2 व रोहन सिंह ने 24 पर 2 विकेट लिए। दूसरे मैच में जयपुरिया ग्राउंड पर राजीव गांधी क्लब ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए मनन सिंह शेखावत के 19 रन, रक्षित लूणावत के 76 रन व हर्ष कुमार मीणा के 37 रनों से 38.5 ओवर में 173 रन बनाए। नीरजा मोदी के लिए पर्व झालानी ने 18 पर 4, तरुण शर्मा ने 17 पर 3, हर्षित शर्मा ने 23 पर 2 व निखिल कोहली ने 26 पर 1 विकेट लिया। जवाबी पारी में नीरजा मोदी एकेडमी ने तरुण शर्मा के 25 रन, सचिन देव सिंघल के 63 रन, चिराग शर्मा के 41 रन नाबाद व कार्तिक बदलानी के नाबाद 16 रनों से 28.5 ओवर में 5 विकेट पर 2। 176 रन बनाकर मैच जीत लिया। राजीव गांधी क्लब के लिए सौरभ यादव ने 36 पर 2 व आयुष गुर्जर ने 35 पर एक विकेट लिया।

27वीं नवीन-नफीस ईनामी राशि लीग कम नॉकआउट क्रिकेट प्रतियोगिता आज से

जयपुर, 19 फरवरी। यूनियन क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 27वीं नवीन-नफीस स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता का उद्घाटन मैच बारवाल क्रिकेट व बिमल क्रिकेट एकेडमी के मध्य 20 फरवरी, 2025 से नेना क्रिकेट एकेडमी ग्राउण्ड जगतपुरा में खेला जाएगा। जिसमें उद्घाटन के लिये मुख्य अतिथि सुनिल शर्मा चेयरमेन सुरेश ज्ञानविहार युनिवर्सिटी जगतपुरा, समारोह के अध्यक्ष नरेन्द्र जैन अध्यक्ष द एम्पलायर्स एसोसियेशन ऑफ राजस्थान तथा विशिष्ट अतिथि मोहम्मद असलम पूर्व रणजी कप्तान होगें।

संस्कार की जीत में रिहान जैन का शतक

जयपुर, 19 फरवरी। चंबल स्पोर्ट्स क्लब द्वारा आयोजित 4 नन्हें खा मेमोरियल सीनियर क्रिकेट लीग में आज संस्कार ग्राउंड पर खेले गए मैच में संस्कार एकेडमी ने बगड़ क्रिकेट एकेडमी को 164 रनों से हराया। टॉस जीतकर संस्कार एकेडमी के रिहान जैन 146 शानदार शतक बनाया। आरव कुमार 57 , हार्दिक गौड़ 24 , आर्यन कटारिया 21 रनों के सहयोग से 46 ओवर में 335 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। बागड़ क्रिकेट एकेडमी की ओर से अनुज कुमार गुर्जर , कार्तिक शेखावत, रिहान ने 2-2 विकेट लिए, हनी प्रताप सिंह ने 3 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करते हुए बगड़ एकेडमी शुभम सिंह 83, ऋतिक राठौर 26, अमित 18, हनी प्रताप 17 रनों के सहयोग से 34 ओवर में 171 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। संस्कार की ओर से गेंदबाजी करते हुए राजवीर सिंह, अभिषेक यादव 4-4 विकेट लिए। रितिन चौधरी ओर लांबा ने 1-1 विकेट लिए। मैच के मैन ऑफ द मैच रिहान जैन रहे। कल का मैच बगड़ एकेडमी बनाम टाइगर्स क्रिकेट क्लब के बीच खेला जाएगा।

राजापुरे और आनंद पुरुष एकल आईडीएएस के क्वार्टर फाइनल में

लखनऊ, 19 फरवरी।पीसीडीए -आर्मी - पुणे के विक्रम ए.राजापुरे और सीडीए आरटीसी एनएडीएफएम पुणे के आनंद अग्रवाल ने 11वां अखिल भारतीय डीएडी बैडमिंटन टूर्नामेंट में बुधवार को शानदार खेल दिखाते हुए पुरुष एकल आईडीएएस के क्वार्टर फाइनल में स्थान सुरक्षित कर लिया। रक्षा लेखा खेल नियंत्रण बोर्ड (डीएएससीबी) के तत्वावधान में पीसीडीए (आर्मी) एवं आईएफए (सीसी) लखनऊ द्वारा सूर्या खेल परिसर, करियप्पा रोड, कैंट, लखनऊ में आयोजित टूर्नामेंट में दूसरे दिन कई रोमांचक मैचों में खिलाड़ियों ने अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए जबरदस्त प्रदर्शन किया।

न्यूजीलैंड ने मेजबान पाकिस्तान को 60 रनों से हराया

कराची 19 फरवरी। टॉम लेथम (नाबाद 118), विल यंग (107) की शतकीय और ग्लेन फिलिप्स (61) रनों की अर्धशतकीय पारियों के बाद विलियम ओरूर्क और मिचेल सैंटनर (तीन-तीन विकेट) के शानदार प्रदर्शन की बदौलत न्यूजीलैंड ने बुधवार को चैंपियंस ट्रॉफी के उद्घाटन मुकाबले में पाकिस्तान को 60 रनों से हराया।

न्यूजीलैंड के 320 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी पाकिस्तान की शुरुआत खराब रही और उसने 22 के स्कोर पर अपने दो विकेट गवां दिये। सऊद शकील (छह) और कप्तान मोहम्मद रिजवान (तीन) रन बनाकर आउट हुये। इसके बाद फखर जमान और बाबर आजम ने पारी संभालने का प्रयास किया। 21वें ओवर में माइकल ब्रेसवेल ने फखर जमान (24) को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। बल्लेबाजी करने आये आगा सलमान ने मोर्चा संभाला। लेकिन वो भी अधिक देर तक नही टिक सके। उन्हें नेथन स्मिथ ने आउट किया। आगा सलमान ने 28 गेंदों में (42) रनों की आतिशी पारी खेली। तय्यब ताहिर (एक) और बाबर आजम (64) को मिचेल सैंटनर ने आउट कर पाकिस्तान की कमर तोड़ दी। शाहीन शाह अफरीदी (14)रन बनाकर आउट हुये। तेजी के साथ रन बना रहे खुशदिल शाह (69) को विलियम ओरूर्क ने आउटर पाकिस्तान को बड़ा झटका दिया। हारिस रउफ़ (19) रन बनाकर नौवें विकेट के रूप में आउट हुये । इसके बाद 47वें ओवर में दूसरी गेंद पर मैट हेनरी ने नसीम शाह (13) को बोल्ड कर पाकिस्तान की पारी का 260 रनों के स्कोर पर अंत कर दिया।

न्यूजीलैंड की ओर से विलियम ओरूर्क और मिचेल सैंटनर ने तीन-तीन बल्लेबाजों को आउट किया। मैट हेनरी ने दो बल्लेबाजों को आउट किया। माइकल ब्रेसवेल और नेथन स्मिथ को एक-एक विकेट मिला।

इससे पहले आज यहां कराची के नेशनल स्टेडियम में पाकिस्तान के कप्तान मोहम्मद रिजवान ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने एक समय 16.2 ओवर में 73 के स्कोर पर अपने तीन विकेट गवां दिये थे।

टीम में 2 ही स्पिनर रखे हैं, बाकी सब ऑलराउंडर हैं : रोहित

// कोहली ने कहा, चैंपियंस ट्रॉफी का प्रेशर पसंद //

दुबई 19 फरवरी। टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा ने चैंपियंस ट्रॉफी में बांग्लादेश के खिलाफ मैच से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उन्होंने कहा, हमने टीम में 2 स्पिनर और बाकी ऑलराउंडर रखे हैं। ऑलराउंडर के होने से टीम को कॉन्फिडेंस मिलता है।

विराट कोहली ने कहा, मुझे चैंपियंस ट्रॉफी का प्रेशर पसंद है। यहां 1 भी मैच हारने का जोखिम नहीं उठा सकते। टूर्नामेंट में भारत का पहला मैच 20 फरवरी को बांग्लादेश के खिलाफ दुबई में दोपहर 2.30 बजे से होगा। रोहित ने कहा, हमने टीम में 2 ही स्पिनर रखे हैं, बाकी सब ऑलराउंडर हैं। हम स्ट्रेंथ के साथ खेलना पसंद करते हैं। तीनों ऑलराउंडर टीम में कई ऑप्शन देते हैं। हम टीम में ज्यादा स्किल वाले प्लेयर्स को रखना ही चाहते थे। यह का बहुत अहम टूर्नामेंट है, यहां ट्रॉफी जीतने के लिए आपको सबकुछ झोंक देना होता है। विराट कोहली ने कहा, चैंपियंस ट्रॉफी बहुत टाइम बाद हो रही है। सच कहूं तो मुझे हमेशा से यह टूर्नामेंट बहुत पसंद रहा। इसमें साल भर अच्छा क्रिकेट खेलने का फायदा मिलता है। टॉप-8 रैंकिंग में रहने के बाद ही

आपको यह टूर्नामेंट खेलने को मिलता है। इसमें लेवल ऑफ कॉम्पिटिशन हमेशा ही अच्छा रहता है। लास्ट टाइम जब हम टूर्नामेंट में बांग्लादेश के खिलाफ ओपनिंग मैच (2011 वनडे वर्ल्ड कप) में उतरे थे। तब टूर्नामेंट हमारे लिए बहुत अच्छा रहा था, 2011 में हम वर्ल्ड कप जीते थे। उसकी अच्छी मेमोरिज हैं।वनडे फॉर्मेट में जब आपको टी-20 वर्ल्ड कप वाला प्रेशर चाहिए तो उसके लिए चैंपिंयस ट्रॉफी है। टी-20 में भी आपके पास 3-4 मैच ही रहते हैं, अगर आपने 1-2 मैच में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया तो नुकसान हो सकता है। यहां भी शुरुआती 2 मैच बहुत अहम हैं। इसमें हमें अपना टॉप गेम लाना होता है। प्रेशर पहले मैच से रहता है, इसलिए मुझे यह पसंद है।

विवाद के बाद पाकिस्तान में लहरा रहा भारतीय तिरंगा

कराची 19 फरवरी। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 की शुरुआत से पहले एक भारतीय झंडे को लेकर पीसीबी ने एक विवाद खड़ा किया था। कराची के नेशनल स्टेडियम में भारत का झंडा नहीं था। चैंपियंस ट्रॉफी में भारतीय टीम भी हिस्सा ले रही है। भले ही टीम इंडिया के मैच दुबई में हैं, लेकिन भारत का झंडा भी वहां होना चाहिए था। भले भूल कहें या जानबूझकर पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने ऐसा किया हो, लेकिन इस पर विवाद शुरू हुआ तो कुछ ही दिनों बाद बोर्ड ने इसमें सुधार किया है। अब भारतीय झंडा भी पाकिस्तान में लहराएगा।

पीसीबी ने अब कराची में भारतीय झंडा भी लगाया है।सोशल मीडिया पर कराची के नेशनल स्टेडियम की कुछ तस्वीरें और वीडियोज वायरल हुई थीं। इनमें भारत का झंडा नहीं था, जबकि चैंपियंस ट्रॉफी में हिस्सा ले रहे बाकी सभी देशों का झंडा था। हालांकि, अब नई तस्वीरों में चैंपियंस ट्रॉफी के लिए

भारत के झंडे को अन्य भाग लेने वाले देशों के साथ रखा गया है। वहीं भारतीय टीम की जर्सी पर भी दुबई में खेलने के बावजूद होस्ट नेशन यानी पाकिस्तान का नाम लिखा है। हालांकि, अभी भी स्टेडियम के ऊपर भारत का झंडा नहीं है, क्योंकि भारतीय टीम अपने मुकाबले दुबई में खेलेगी। ऐसे में स्टेडियम के अंदर ये झंडा लगाया गया है। पीसीबी के एक सूत्र के हवाले से बताया कि, जैसा कि आप जानते हैं, भारत आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के दौरान अपने मैच खेलने के लिए पाकिस्तान नहीं आ रहा है।

दुबई में भारत और बांग्लादेश की टक्कर, बारिश के भी आसार

दुबई 19 फरवरी। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का दूसरा मुकाबला भारत और बांग्लादेश के बीच खेला जाएगा। दोनों टीमों के बीच ये मुकाबला दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा। भारतीय टीम का नेतृत्व रोहित शर्मा करेंगे जबकि बांग्लादेश टीम की कमान नजमुल हुसैन शांतो के हाथों में होगी। दोनों टीमों हाल ही में अलग-अलग वनडे मैचों की सीरीज खेलकर टूर्नामेंट में हिस्सा ले रही है।टीम इंडिया जहां तीन वनडे मैचों की सीरीज में 3-0 से इंग्लैंड का सूपड़ा साफ कर बढ़े हुए मनोबल के साथ मैदान पर उतरेगी, वहीं वेस्टइंडीज से आखिरी वनडे सीरीज में क्लीन स्वीप झेलनी वाली बांग्लादेश की टीम चैंपियंस ट्रॉफी में अपने प्रदर्शन में सुधार करना चाहेगी।

मौसम का मिजाज : वहीं दुबई में भारत और बांग्लादेश के बीच होने वाले मुकाबले के आंकड़ों के अलावा क्रिकेट फैंस की निगाहें सबसे ज्यादा निगाहें मौसम पर टिकी होंगी। एक्यूवेदर के पूर्वानुमान के आधार पर दुबई के मौसम की बात करें तो सुबह आसमान में बादल छाए रहेंगे, हल्की बारिश के भी आसार हैं। लेकिन दोपहर होते-होते आसमान साफ होगा और धूप खिली होगी। शहर का ज्यादातर तापमान 27 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है जबकि न्यूनतम तापमान 21 डिग्री सेल्सियस रहने के आसार हैं।

पिच रिपोर्ट : चूंकि यहां कि पिच बल्लेबाजों और गेंदबाजों के लिए समान रूप से संतुलित मानी जाती हैं, लिहाजा शुरुआत में गेंदबाजों को मदद मिल सकती है। वहीं जैसे-जैसे खेल आगे बढ़ेगा, बल्लेबाजी के लिए आसान होती जाएगी। बीच के ओवर में स्पिनर्स को भी पिच से मदद मिलने की संभावना है। यहां टीम टॉस जीतकर गेंदबाजी करना पसंद करेगी।

पाक में डर का माहौल

स्टेडियम के ऊपर से गुजरे लड़ाकू विमान, न्यूजीलैंड के खिलाड़ियों सहित फैंस भी सहमे

कराची 19 फरवरी। पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के बीच खेले जा रहे मुकाबले के साथ चैंपियंस ट्रॉफी का आगाज हो गया है। 29 साल बाद पाकिस्तान में आईसीसी टूर्नामेंट का आयोजन हो रहा है। मार्च 2009 में श्रीलंका टीम पर आतंकवादी हमलों के बाद से लंबे समय तक अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट की किसी भी टॉप टीम ने पाकिस्तान का दौरा नहीं किया था। इस दशक की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और न्यूजीलैंड जैसी टॉप टीमों ने पाकिस्तान का दौरा करना शुरू किया। बुधवार को कराची में मुकाबला शुरू होने से पहले पाकिस्तान फाइटर प्लेन स्टेडियम के ऊपर से गुजरे जिससे काफी जोरदार शोर हुआ और वहां मौजूद फैंस के साथ-साथ कीवी खिलाड़ी झुकते हुए और सहमे नजर आए।

आकाश आनंद का शतक, पार्थ ने मुम्बई को 270 पर समेटा

नागपुर 19 फरवरी। रणजी ट्राफी के दूसरे सेमीफाइनल मुकाबले में बुधवार को आकाश आनंद (106) की शतकीय पारी के बीच विदर्भ के पार्थ रेखड़े सहित अन्य गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मुम्बई की पहली पारी को 270 के स्कोर पर समेट दिया। मुम्बई ने कल के सात विकेट पर 188 रनों से आगे खेलना शुरु किया।

आज सुबह के सत्र में आकाश आनंद और तनुष कोटियान की जोड़ी ने जूझारू बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए टीम को स्कोर को आगे बढ़ाया। इस दौरान 247 के स्कोर पर पार्थ रेखड़े ने तनुष कोटियान को बोल्ड कर इस साझेदारी को तोड़ा। तनुष कोटियान ने 75 गेंदों में चार चौक और एक छक्का लगाते हुए (33) रन बनाये। मुम्बई नौवां विकेट आकाश आनंद के रूप में गिरा। उन्हें नचिकेत भूटे ने आउट किया। आकाश आनंद ने 256 गेंदों में 11 चौकों की मदद से (106) रनों की पारी खेली। हर्ष दुबे ने मोहित अवस्थी (10) को बोल्ड कर मुम्बई की पहली पारी का 270 के स्कोर पर अंत कर दिया। इसी के साथ विदर्भ को पहली पारी के आधार 113 रनों की बढ़ हासिल हो गई।

विदर्भ की ओर से पार्थ रेखड़े ने चार, यश ठाकुर और हर्ष दुबे ने दो-दो विकेट लिये। दर्शन नालकंडे और नचिकेत भूटे ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

बांग्लादेशी खिलाड़ी बन सकते हैं टीम इंडिया के लिए मुसीबत

दुबई 19 फरवरी। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारतीय टीम अपना पहला मुकाबला बांग्लादेश टीमें आमने-सामने होंगी। भारतीय समयानुसार मुकाबला दोपहर 2.30 बजे शुरू होगा। दरअसल, बांग्लादेश के खिलाफ भारत का पलड़ा भारी रहा है, लेकिन बांग्लादेशी टीम उलटफेर करने में माहिर है।

इसके अलावा पिछले 5 वनडे मैचों में भारत के खिलाफ बांग्लादेश का पलड़ा भारी है। बहरहाल, हम नजर डालेंगे बांग्लादेश के उन 5 खिलाड़ियों पर जो भारतीय टीम के लिए मुसीबत बन सकते हैं।बांग्लादेश के तेज गेंदबाज मुस्ताफिजुर रहमान भारतीय बल्लेबाजों की मुश्किलें बढ़ा सकते हैं। दरअसल, भारत के खिलाफ मुस्ताफिजुर रहमान का प्रदर्शन शानदार रहा है। मुस्ताफिजुर रहमान नई गेंद से स्विंग और पुरानी गेंद से स्लोअर गेंद डालने में माहिर हैं। लिहाजा, भारतीय बल्लेबाजों को मुस्ताफिजुर रहमान के खिलाफ सतर्क रहना होगा।भारत के खिलाफ तकरीबन 2 साल पहले मेहदी हसन मिराज ने 8वें नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए शतक लगाया था। उस मैच में भारतीय टीम को हार का सामना करना पड़ा था। बांग्लादेश के खिलाफ भारतीय टीम को पिछले 5 मैचों में 3 बार हार का सामना करना पड़ा है। तस्कीन अहमद अपनी स्पीड के अलावा नई गेंद से तेज तर्रार स्विंग गेंदबाजी करते हैं। अब तक वनडे फॉर्मेट में तस्कीन अहमद ने 77 मैचों में 109 विकेट झटके हैं। मुश्फिकुर रहीम बांग्लादेश की टीम में सबसे अनुभवी खिलाड़ी हैं। मुश्फिकुर रहीम के पास इंटरनेशनल क्रिकेट में 15 सालों से ज्यादा का अनुभव है। भारत के खिलाफ मुश्फिकुर रहीम का प्रदर्शन अच्छा रहा है। मुश्फिकुर रहीम बांग्लादेश की टीम में सबसे अनुभवी खिलाड़ी हैं। मुश्फिकुर रहीम के पास इंटरनेशनल क्रिकेट में 15 सालों से ज्यादा का अनुभव है। भारत के खिलाफ मुश्फिकुर रहीम का प्रदर्शन अच्छा रहा है।

पाकिस्तान के खिलाफ कोहली-रोहित होंगे अहम-सौरव गांगुली

नई दिल्ली, 19 फरवरी। चैंपियंस ट्रॉफी 2024 का आगाज हो चुका है। वहीं भारतीय टीम अपना पहला मुकाबला बांग्लादेश के खिलाफ 20 फरवरी को दुबई में खेलेगी। वहीं भारतीय टीम अपना दूसरा मुकाबला पाकिस्तान के खिलाफ खेलेगी। रविवार को भारत और पाकिस्तान के बीच मुकाबला खेला जाएगा।

वहीं इस मुकाबले से पहले पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली ने बड़ा बयान दिया है। सौरव गांगुली का मानना है कि पाकिस्तान के खिलाफ विराट कोहली भारतीय टीम के सबसे मजबूत स्तंभ होंगे। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के खिलाफ विराट कोहली और रोहित शर्मा का किरदार अहम होने वाला है।सौरव गांगुली ने कहा कि विराट कोहली अच्छी क्रिकेट खेल रहे हैं, इसमें कोई दो राय नहीं है। पाकिस्तान के खिलाफ विराट कोहली और रोहित शर्मा भारत के लिए अहम साबित होंगे।

इसके अलावा भारतीय कप्तान रोहित शर्मा का फॉर्म अहम है। मुझे पूरा भरोसा है कि पूरी टीम इंडिया अच्छा प्रदर्शन करेगी। साथ ही सौरव गांगुली ने पाकिस्तान के तेज गेंदबाजों पर अपनी बात रखी। सौरव गांगुली कहते हैं कि भारतीय बल्लेबाजों को शाहीन अफरीदी और नसीम शाह के खिलाफ अलग से तैयारी करने की कोई जरूरत नहीं है। टीम इंडिया के बल्लेबाजों ने वर्ल्ड लेवल पर अच्छे- अच्छे तेज गेंदबाजों को खेला है।

मुंबई के पूर्व कप्तान और चयनकर्ता मिलिंद रेगे का निधन

मुम्बई 19 फरवरी। मुंबई के पूर्व कप्तान और चयनकर्ता मिलिंद रेगे को बुधवार को दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। वह 76 वर्ष के थे। रेगे को कुछ दिन पहले ब्रीच कैंडी अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां और आज सुबह छह बजे उनका निधन हो गया। उनके परिवार में उनकी पत्नी और दो बेटे हैं। उन्होंने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में 1966 से 1977-78 तक कुल 52 मैच खेलते हुए 126 विकेट लिए।

// जयपुर पोलो सीजन 2025, महाराजा सवाई भवानी सिंह पोलो कप (12 गोल) //

फेडरिको ने तिकडी सहित 6 गोल कर अरावली पोलो को जीत दिलाई

वाट्सन के 4 गोल से जयपुर सुजान जीता

जयपुर, 19 फरवरी। जयपुर पोलो सीजन 2025, महाराजा सवाई भवानी सिंह पोलो कप (12 गोल), बुधवार को रामबाग पोलो ग्राउंड पर दो मैच खेले गए। जिसमे पहला मैच दोपहर 3 बजे डेल्टा/चांदना पोलो ओर जयपुर सुजान के बीच मैच खेला गए जिसमे जयपुर सुजान ने डेल्टा/चांदना पोलो को 9-4 से हराया। डेल्टा/चांदना पोलो की ओर से मतिआस ने 1 ओर सेंटियागो ने 3 गोल किये वहीं जयपुर सूजन की ओर से जैसल सिंह ने 1, निकोलस ओर पदमनाभ सिंह ने 2-2 और लांस वाट्सन ने 4 गोल कर टीम को जीताया।

दूसरा मैच विमल एरिओन अचीवर्स बनाम अरावली पोलो के बीच शाम 4 बजे खेल गया। जिसमे विमल एरिओन अचीवर्स को अरावली पोलो ने 9-5 गोल से पराजित किया। विमल एरिओन अचीवर्स की ओर से अभिमन्यु पाठक, पनोलो ने 1-1, डेनियल ने टीम के लिए शानदार 3 गोल किये। वहीं अरावली पोलो की ओर से कुलदीप सिंह ने 1, मेन्युअल ने 2 ओर चार हेंडीकैम्प खिलाड़ी फेडरिको ने तिकडी सहित 6 गोल कर टीम को जीत दिलाई।

फुटबॉल मैच के दौरान आतिशबाजी से आग में 50 लोग झुलसे

मलप्पुरम 19 फरवरी। बीती मंगलवार रात केरल में एक बड़ा हादसा हो गया। दरअसल, मलप्पुरम जिले के अरिकोड शहर में फुटबॉल मैच के दौरान 50 से ज्यादा दर्शक आग में झुलस गए, मैच शुरू होने के ठीक पहले ये घटना हुई।मुकाबले से पहले आयोजकों ने जोरदार आतिशबाजी का कार्यक्रम किया। इसी दौरान पटाखे अनियंत्रित होकर स्टेडियम में बैठे दर्शकों के बीच जाकर फूटने लगे। ऐसे में अफरा-तफरी मच गई। गनीमत ये रही कि हादसे में किसी तरह की जनहानि नहीं हुई लेकिन दो दर्शक इस हादसे में बुरी तरह झुलसे हैं और उनका इलाज जारी है।अरिकोड पुलिस ने बताया कि मल्लपुरम जिले में अरिकोड इलाके के एक स्टेडियम में सेवंस, फुटबॉल टूर्नामेंट के एक मैच के दौरान आतिशबाजी के कारण 50 से ज्यादा लोग घायल हो गए। घायलों में से दो लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। अन्य लोगों की चोटें गंभीर नहीं है। मैच से ठीक पहले पटाखे जलाए जाने के दौरान ये दुर्घटना हुई। मैदान के नजदीक बैठे दर्शकों के बीच पटाखे गिरने से लोग झुलसे। आयोजकों पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 288 और 125 बी के तहत मामला दर्ज किया गया है।

श्रीनिधि डेक्कन ने आरयूएफसी को 2-1 से हराया

जयपुर, 19 फरवरी। राजस्थान यूनाइटेड फुटबॉल क्लब अपने घर में विजय का कर्म जारी नहीं रख पाया। विद्याधर नगर स्टेडियम में बुधवार को राजस्थान यूनाइटेड एफसी (आरयूएफसी) और श्रीनिधि डेक्कन एफसी के बीच रोमांचक मुकाबला हुआ। श्रीनिधि डेक्कन ने पहले हाफ में एक गोल कर बढ़त बनाई, तो वही दूसरे हाफ में जहां आरयूएफसी एक गोल दाग कर बराबरी के करीब पहुंचा तो वहीं मैच खत्म होने से पहले श्रीनिधि ने दूसरा गोल दाग दिया। मैच खत्म होने के बाद स्कोर 2-1 रहा। आरयूएफसी अपना अगला मैच 24 फरवरी को खेलेगा, जहां उसे हार के इस सिलसिले को तोड़ने की उम्मीद होगी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि खेल सचिव आईएएस निरज के.पवन, मौजूद रहे। इसके अलावा, अध्यक्ष के.के. टांक, निदेशक रोशनी टांक, वरिष्ठ अधिवक्ता जी.डी. बंसल, उप-कमांडेंट रंजीत सिंह, योगेश बोईर साईं से प्रज्ञा सैनी, भोपाल सिंह भाटी, त्रिलोक खण्डेलवाल और अन्य गणमान्य अतिथियों ने आयोजन की शोभा बढ़ाई। बॉलीवुड सेलिब्रिटी जोजो और आरजे अभि ने भी अपनी उपस्थिति से समां बांध दिया।

राज्य का बजट गरीब, आमजन के हितों के विपरीत है: पायलट

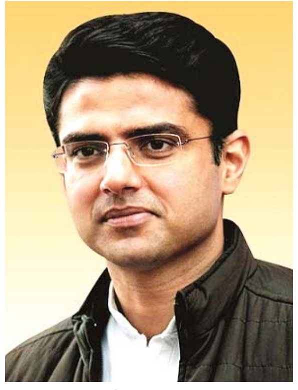

सचिन पायलट

■ सचिन पायलट ने कहा कि शिक्षित बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता नहीं दिया जा रहा, जो चिन्ताजनक है।

जयपुर, 19 फरवरी। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट ने प्रदेश की भाजपा सरकार द्वारा आज विधानसभा में प्रस्तुत बजट को वास्तविकता से परे तथा गरीब व आमजन के हितों के विपरीत बताया। उन्होंने कहा कि सरकार ने अपने बजट भाषण में नयी-नयी घोषणाएं तो कर दीं परन्तु पिछले बजट में की गई घोषणाओं की वर्तमान स्थिति क्या है यह बताने में असफल रही है।

पायलट ने कहा कि आज प्रस्तुत बजट में रोजगार नीति लागू करने तथा युवाओं के लिए सवा लाख सरकारी नौकरियों की घोषणा की गई है परन्तु पिछले वर्ष के एक लाख सरकारी नौकरियां देने के वादे का क्या हुआ, सरकार को आंकड़े प्रस्तुत करने चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षित बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता नहीं दिया जा रहा है, जो कि चिंताजनक है। उन्होंने कहा कि जल जीवन मिशन की अवधि 2028 तक बढ़ाई गई है परन्तु पिछले एक साल से हजारों करोड़ रूपये की वृहत् परियोजनाओं के टेंडर लम्बित पड़े हैं। इसी प्रकार अमृत 2.0 योजना में शहरों की पेयजल व्यवस्था के लिए पिछले एक साल में पांच हजार करोड़ रूपये में से एक पैसा भी खर्च नहीं हो पाया और फिर इस बजट में वहीं घोषणा कर दी।

पायलट ने कहा कि जिस ईआरसीपी को लेकर सरकार कह रही है कि 9500 करोड़ रूपये के वर्क ऑर्डर जारी कर दिये गये हैं तथा 12000 करोड़ रूपये के टेंडर आमंत्रित कर लिये हैं, उसके लिए सरकार ने बजट में केवल 200 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है और केन्द्रीय मद में प्रावधान शून्य है।

रेलवे भर्ती के मामले में सीबीआई ने 6 को गिरफ्तार किया

नयी दिल्ली, 19 फरवरी। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने पश्चिम रेलवे की भर्ती परीक्षा में कथित रिश्वतखोरी का भांडाफोड़ करते हुए छह व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है जिनमें भारतीय रेल की कार्मिक (आईआरपीएस) सेवा के दो अधिकारियों सहित पांच रेलकर्मी और एक बाहरी व्यक्ति है। जांच एजेंसी ने इस मामले में 11 जगह तलाशी के दौरान 650 ग्राम सोना और पांच लाख रुपये नकद बरामद किए हैं। सीबीआई ने कहा कि उसने पश्चिम रेलवे के सीमित विभागीय (भर्ती) परीक्षा में घूस लेकर अभ्यर्थियों को नौकरी दिलाने के गोरखधंधे का भंडाफोड़ किया है। सीबीआई ने मंगलवार को इस मामले में एफआईआर दर्ज की थी। गिरफ्तार व्यक्तियों में पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल का एक वरिष्ठ अनुमंडलीय कार्मिक अधिकारी, एक अनुमंडलीय कार्मिक अधिकारी (2018 बैच), चर्चगेट (मुंबई) का एक वाणिज्यिक उप-प्रबंधक, एक उप स्टेशन अधीक्षक, साबरमती (अहमदाबाद) अनुमंडलीय रेल अस्पताल के नर्सिंग अधीक्षक और एक बाहरी व्यक्ति शामिल है।

ज्ञानेश कुमार ने मुख्य चुनाव आयुक्त का पद संभाला

■ साथ ही डॉ. विवेक जोशी ने चुनाव आयुक्त का कार्यभार संभाला।

नयी दिल्ली, 19 फरवरी। नवनियुक्त मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार और चुनाव आयुक्त डॉ. विवेक जोशी ने बुधवार को यहां अपना कार्यभार संभाल लिया।

ज्ञानेश कुमार भारत के 26वें मुख्य निर्वाचन आयुक्त हैं। उन्होंने राजीव कुमार का स्थान लिया है जिनका कार्यकाल मंगलवार को सम्पन्न हुआ। ज्ञानेश कुमार का निर्वाचन आयोग के मुख्यालय पर निर्वाचन आयुक्त डॉ. सुखबीर सिंह संधू और डॉ. विवेक जोशी ने स्वागत किया। मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने नयी जिम्मेदारी संभालने के बाद एक संक्षिप्त संदेश में नागरिकों, विशेषकर युवा नागरिकों के लिए कहा कि उन्हें मतदान की जिम्मेदारी जरुर निभानी चाहिए। ज्ञानेश कुमार ने कहा, राष्ट्र सेवा के लिए पहला कदम है मतदान, अतः भारत के नागरिक, जो 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुके हों, उन्हें मतदाता जरुर बनना चाहिए और मतदान अवश्य करना चाहिए।

नव नियुक्त चुनाव आयुक्त विवेक जोशी भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के 1989 बैच के हरियाणा कैडर के आईएएस अधिकारी हैं। वह हरियाणा सरकार के मुख्य सचिव और केन्द्र में कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग तथा वित्तीय सेवा विभाग के सचिव के रूप में कार्य कर चुके हैं।

एस.आई. भर्ती पेपर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विचार-विमर्श चल रहा है। ऐसे में राज्य सरकार के स्तर पर कुछ नई जानकारी सामने आ सकती है। ऐसे में आज होने वाली मामले की सुनवाई गुरुवार तक के लिए टाल दी जाए। इस दौरान याचिकाकर्ता की ओर से मौजूद अधिवक्ता हरेन्द्र नील ने भी अपनी सहमति दे दी। इस पर अदालत ने मामले की सुनवाई गुरुवार तक के लिए टाल दी।

गौरतलब है कि अब तक की सुनवाई में राज्य सरकार ने अदालत को बताया है कि वह दोषी ट्रेनी एसआई को बर्खास्त करना चाहती है, लेकिन कोर्ट की ओर से भर्ती पर यथास्थिति के आदेश होने के चलते उन पर कार्रवाई नहीं हो पा रही है। वहीं, अदालत भी मौखिक रूप से टिप्पणी कर चुकी है कि यदि सरकार भर्ती पर निर्णय नहीं ले रही तो क्या कोर्ट मामले की जांच सीबीआई को सौंप दे। अदालत ने मंगलवार को हुई सुनवाई में पेपर लीक पर सवाल उठाते हुए कहा था कि आरपीएससी के सदस्य ने भर्ती के करीब 32 दिन पहले ही पेपर लीक कर दिया था। ऐसे में क्या भर्ती की पवित्रता भंग नहीं हुई।

ट्रम्प व मस्क ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बयूरोक्रैटिक प्रक्रियाओं में ये खो जाते हैं।

ट्रम्प का कहना है कि बाइडन के दिनों से बची हुई ब्योरोक्रेसी उनके खिलाफ काम कर रही है, इसलिए ट्रंप कार्यकारी आदेशों को लागू करने में मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। मस्क सरकारी आदेश लागू करने की प्रक्रिया पर निगरानी करने के तरीके विकसित कर रहे हैं, ताकि, यह सुनिश्चित किया जा सके कि आदेश सही ढंग से लागू हों। कुछ मीडिया विशेषज्ञों का कहना है कि दोनों के बीच जल्द ही एक टकराव हो सकता है।

'कोई भी मुझ से ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

और अमेरिका व उसके व्यापारिक सहयोगियों के बीच में मौजूदा टैरिफ स्ट्रक्चर पर चर्चा की।

ट्रम्प ने कहा, मैंने मोदी से कहा, हम यही करने जा रहे हैं, "रैसिप्रोकल टैरिफ" आप जो भी चार्ज करेंगे, मैं भी करूंगा।

उन्होंने (मोदी ने) कहा, नहीं-नहीं यह ठीक नहीं लगता, मैने कहा, नहीं-नहीं आप जो शुल्क लेंगे मैं भी वहीं लूंगा, हर देश के साथ मैं ऐसा ही कर रहा हूँ।"

उन्होंने कहा, अमेरिका से आयात होने वाले सामान पर विश्व में सबसे ज्यादा टैरिफ भारत में लगाया जाता है, खासकर ऑटोमोबाइल क्षेत्र में, जहाँ ड्यूटी 100 प्रतिशत तक पहुँच जाती है। ट्रम्प के साथ बैठे मस्क ने इसकी पुष्टि की ओर कहा, ऑटो इम्पोर्ट्स पर टैरिफ 100 प्रतिशत है।

उन्होंने कहा, इस तरह के टैरिफ की वजह से भारत में अमेरिकी उत्पाद बेचना असंभव है।

जब तक कि वे वहाँ मैन्युफैक्चरिंग प्लांट न लगा लें, यह अमेरिकन अर्थव्यवस्था के साथ अन्याय है।

'भारत की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आउट के लिए 21 मिलियन अमेरिकी डॉलर? यह निश्चित रूप से भारत के चुनावी प्रक्रिया में बाहरी हस्तक्षेप है। इससे किसे लाभ होता है? निश्चित रूप से सत्तारूढ़ पार्टी को तो नहीं!"

उन्होंने यह भी दावा किया कि अब रद्द की गई योजना पिछली कांग्रेस-नेतृत्व वाली यूपीए सरकार के समय की ओर इशारा करती है, जिसने भारतीय संस्थाओं में राष्ट्र विरोधी ताकतों की घुसपैठ का रास्ता साफ किया था।

भाजपा व कांग्रेस...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मोदी सरकार के समय यूएस एड को समर्थन देने के लिए आलोचना की और यह पूछा कि भाजपा-नेतृत्त्व वाली एनडीए सरकार को यूएस एड से कितना फंड मिला थे। वहीं, भाजपा ने कांग्रेस को निशाना बनाया। भाजपा के आईटी मीडिया प्रमुख अमित मालवीया ने कहा, 'भारत में वोटर टर्न आउट के लिए 21 मिलियन अमेरिकी डॉलर। यह निश्चित रूप से भारत की चुनावी प्रक्रिया में बाहरी हस्तक्षेप है। इससे किसे लाभ होता है? निश्चित रूप से सत्तारूढ़ पार्टी को तो नहीं।' उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि 2012 में जब यूपीए सरकार सत्ता में थी, तब मुख्य चुनाव आयुक्त एस.वाय. कुरैशी के नेतृत्व में चुनाव आयोग ने जॉर्ज सोरोस की ओपन सोसाइटी फाउंडेशन से जुड़े एक संगठन इंटरनैशनल फाउण्डेशन ऑफ इलैक्टोरल सिस्टम के साथ एक एमओयू किया था। ओपन सोसायटी को यूएस एड से मदद मिलती है। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने आरोप लगाया कि कांग्रेस से जुड़े भारत विरोधी तत्वों को यूएस एड से वित्त पोषित किया जा रहा था। उन्होंने पूछा, "क्या यूएस एड और जॉर्ज सोरोस ने राजीव गांधी फाउंडेशन और राजीव गांधी चैरिटेबल ट्रस्ट को पैसे दिए थे?" उन्होंने इस मामले की जांच की मांग की।

गहलोत अब डोटासरा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लिए वे लोग पुल का काम कर सकें। इसके लिए वे टीम सदस्यों का पूरा खयाल रखते हैं।

डोटासरा परिवार काफी धनाढ्य माना जाता है तथा उनकी पांचों उँगलिया घी में बताई जाती हैं।

जब सोनिया गांधी के खिलाफ बगावत करने के बाद अशोक गहलोत कांग्रेस नेतृत्व के कोपभाजन बन गये थे, उस समय डोटासरा ने उनसे दूरी बनाने की कोशिश की थी। लेकिन दोनों के संबंध इतने गहरे और मजबूत हैं कि दूरी बनाना बहुत मुश्किल था।

पेपर लीक घोटाले में फँसने से डोटासरा को बचाने वाले अशोक गहलोत ही थे, क्योंकि उस समय राजस्थान के शिक्षा मंत्री डोटासरा ही थे।

हैरान करने वाली बात डोटासरा परिवार के तीन सदस्यों के नम्बर ठीक बराबर आये थे, तथा सोशल मीडिया पर यह मामला जमकर ट्रोल हुआ था।

गत वर्ष नवम्बर में, प्रवर्तन निदेशालय ने डोटासरा के दोनों बेटों को पूछताछ के लिए दिल्ली तलब किया था।

अब राजस्थान और नई दिल्ली के राजनैतिक हल्कों में यह अटकलें जोरों पर हैं कि सचिन पायलट को कांग्रेस अध्यक्ष बनाकर जयपुर भेजा जाये, ताकि वे कांग्रेस संगठन में आमूल चूल परिवर्तन कर के, उसे नये रूप में नये सिरे से खड़ा करें तथा पार्टी को ऐसा रूप दे सकें कि वह अगले विधानसभा चुनावों में भाजपा का मुकाबला कर सके। गहलोत और डोटासरा इन अटकलों से बहुत कष्ट में हैं।

यह था लंच का कारण, यानी मीडिया को अपनी ओर खींचने की कोशिश!

रेखा गुप्ता ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सुनिश्चित करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं कि भाजपा उनके निर्देश पर चले। महाराष्ट्र में उन्हीं के कहने पर फड़नवीस को मुख्यमंत्री बनाया गया है।

होली के बाद होगी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

याचिकाओं पर 19 फरवरी को प्राथमिकता के आधार पर सुनवाई करेगा। जस्टिस सूर्यकांत और एन कोटिश्वर सिंह की बेंच ने कहा कि समय की कमी के कारण मामले को होली की छुट्टी के बाद सुना जाएगा। फिलहाल कोई तारीख तय नहीं की गई। न्यायमूर्ति सूर्यकांत और जस्टिस एन कोटिश्वर सिंह की पीठ को एक गैर सरकारी संगठन की ओर से पेश अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने बताया था कि संविधान पीठ के 2023 के फैसले में कहा गया था कि मुख्य निर्वाचन आयुक्त और निर्वाचन आयुक्तों की नियुक्तियां ऐसा पैनल करेगा, जिसमें भारत के प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) भी शामिल होंगे।

यह राजस्थान का पहला ग्रीन बजट है...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

करेगी। नगरीय क्षेत्रों में घर-घर नल से जल पहुंचाने के लिए मुख्यमंत्री जल जीवन मिशन शहरी शुरू किया जाएगा। इसमें 5 हजार 830 करोड़ रूपए की लागत से काम किया जाएगा।

शर्मा ने कहा कि राजस्थान भी अब ग्रीन बजट पेश करने वाले देश के चुनिंदा राज्यों में शामिल हो गया है। सस्टेनेबल ग्रीन प्रणाली को प्रोत्साहित करने, क्लाइमेट चेंज की चुनौतियों से निपटने, बायोडायवर्सिटी, वाटर हार्वेस्टिंग, ग्रीन एनर्जी, रिसाइक्लिंग आदि को प्रोत्साहित करने के लिए कुल राज्य बजट की 11.34 प्रतिशत राशि का प्रावधान किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार किसानों की आय बढ़ा कर उन्हें आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने के लिए लगातार कार्य कर रही है। इस क्रम में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के अंतर्गत प्रदेश में दी जा रही 8 हजार रूपए की राशि को बढ़ा कर 9 हजार रूपए प्रति वर्ष करने की घोषणा की गई है।

युवाओं के विकास एवं कल्याण के लिए राजस्थान रोजगार नीति 2025 लाई जाएगी, जिसके अंतर्गत 500 करोड़ रूपए खर्च कर विवेकानंद रोजगार सहायता केन्द्र की स्थापना की जाएगी। चार लाख सरकारी नौकरियों के वादे को पूरा करने की दिशा में आगामी वर्ष में सवा लाख पदों पर सरकारी भर्तियां की जाएंगी। निजी क्षेत्र में भी आगामी वर्ष में डेढ़ लाख युवाओं को रोजगार उपलब्ध करवाया जाएगा। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार करने पर बजट में विशेष जोर दिया गया है। प्रदेश में जन जन के स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना के साथ ही, आमजन की निशुल्क जांच एवं दवा हेतु 3 हजार 500 करोड़ रूपये का मा कोष बनाया जायेगा। 70 वर्ष से अधिक आयु के लोगों के विशेष केयर पैकेज, किशोरों के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के पैकेज, ओरल कैंसर हेतु पैकेज तथा विशेष योग्यजनों हेतु पैकेज इस योजना में जोड़े जाएंगे। ट्रक, बस ड्राइवरों तथा दर्जी, बढ़ ई, नाई आदि कारीगरों की आंखों की जांच कर निशुल्क चश्मे उपलब्ध करवाने के लिए मा नेत्र वाउचर योजना लागू की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए राज्य सरकार ने एक साल में महत्वपूर्ण प्रगति की है। इस दिशा में आगे बढ़ते हुए सरकार मुख्यमंत्री निःशुल्क बिजली योजना के लाभान्वित परिवारों को पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना से जोड़कर 150 यूनिट तक बिजली मुफ्त देने का भी काम करेगी।

शर्मा ने कहा कि राजस्थान में स्टेट हाइवे, बाईपास, रेलवे ओवर ब्रिज एवं अण्डर ब्रिज आदि के निर्माण, विकास और सुधार के लिए 5 हजार करोड़ रूपये से ज्यादा खर्च किए जाएंगे। राज्य में 2,750 किमी से अधिक लंबे 9 ग्रीन फील्ड एक्सप्रेस वे बनाए जाएंगे, जिनकी लागत लगभग 60 हजार करोड़ रूपये होगी। इसके अलावा, 21 हजार किलोमीटर नॉन पैचेबल सड़कों के कार्यो के लिए 6 हजार करोड़ रूपये का बजट रखा गया है। हर विधानसभा क्षेत्र में सड़कों की मरम्मत और निर्माण के लिए 10-10 करोड़ रूपये दिए जाएंगे, जबकि मरूस्थलीय इलाकों में यह राशि 15-15 करोड़ रूपये होगी। प्रदेश के प्रमुख शहरों में ट्रैफिक के बढ़ते दबाव से राहत दिलाने के लिए 15 शहरों में रिंग रोड के निर्माण का कार्य हाथ में लिया जाएगा।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी, उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचन्द बैरवा, संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल, अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोरा सहित वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

राष्ट्रदूत हिन्दु संयुक्त परिवार की ओर से सोमेश शर्मा द्वारा ज्वाईन्ट मीडिया, आजाद मार्ग, मैन रोड, आयड, उदयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 57928/93 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513 कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371 अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908